राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 7] बारहवीं विधान सभा के सप्तम सत्र का पन्द्रहवां दिवस [संख्या : 11

गुरुवार,

15 मार्च, 2007

(राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे विधान सभा भवन,

जयपुर में प्रारम्भ हुई)

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, देखिये अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा की गरिमा को तार-तार होते देखिये। यह विधान सभा की गरिमा को तार-तार होते देखिये अध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

(श्री मंगलाराम गोदारा, सदस्य, विधान सभा ने सदन में धरना दिया)

एक माननीय सदस्य : यह क्या हो रहा है अध्यक्ष महोदय? यह विधान सभा है या म्युनिसिपलिटी है? (व्यवधान) यह विधान सभा है या प्रदर्शन है?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, यह विधान सभा की गरिमा है? विधान सभा नियमों से चलती है। (व्यवधान)

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक) : यह ट्रेड यूनियन का दफ्तर नहीं है। जिस तरह से ट्रेड यूनियन के दफ्तर में जो चाहे मर्जी आये, वह करते हैं। यह ट्रेड यूनियन का दफ्तर नहीं है, यह पवित्र सदन है। इस सदन में सदन की मर्यादाओं का पालन किया जाना चाहिए। (व्यवधान)

(विपक्ष के अनेक माननीय सदस्य हाल में नष्ट फसल की बालियां लहराते हुए नारेबाजी करते रहे)

माननीय अध्यक्ष महोदय, इन्होंने इस सदन को, इस पवित्र सदन को ट्रेड यूनियन का दफ्तर बना दिया।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, आज आप जितने आहत होंगे, जितना आपका मन पीड़ा से भरा होगा, कभी नहीं भरा होगा। आपके चेहरे के हाव-भाव से लगता है, विधान सभा की गरिमा को तार-तार करने का काम कर रहे हैं ये। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य। माननीय सदस्यगण, माननीय सदस्यगण, यह आप जो कुछ लाये हैं, यह मैं ही नहीं देख रही हूं, सारे प्रदेश के अन्दर इसका आंकलन किया जा रहा है कि कितना नुकसान हुआ है? और माननीय सदस्य, डूंगरगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य, आप कृपया अपने स्थान पर जायें। माननीय सदस्य, डूंगरगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य, आप कृपया अपने स्थान पर चले जायें। आप कृपया अपने स्थान पर जायें। माननीय सदस्यगण, माननीय सदस्यगण। (व्यवधान) आप जो हाथ में लिये फिर रहे हैं, इन्हें कृपया बाहर रख आयें। इन्हें कृपया बाहर रखिये। आसन आपसे पुन: आग्रह कर रहा है कि आप कृपया इन्हें यहां नहीं रखें। (व्यवधान) ये सदन की मेज पर रख दें। आप जो कुछ लाये हैं, सदन की मेज पर रख दीजिये। यहां कोई चीज प्रदर्शित करते हैं तो सदन की मेज पर रखते हैं। मैं आप सबसे कहती हूं कि सदन की मेज पर रखें। सदन की मेज पर रख दें आप। (व्यवधान) नवलगढ़ से आने वाली माननीय सदस्या, आप सदन की मेज पर रख दें। सदन की मेज पर रख दें। (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

आप नारे लगा रहे हैं, बजाय नारे लगाने के, आपको जो कुछ कहना है, उचित रहे, आप वह कहें। सरकार को सुझाव दें। अपनी बात कहें। किसानों की बात करें तो ज्यादा अच्छा होगा। सरकार का जवाब भी सुनिये, सरकार का वक्तव्य भी सुनें, अपने सुझाव भी दें।

मैं आपसे पुन: आग्रह करती हूं कि आप केवल नारों से नहीं, बल्कि बतायें कि क्या करना है?

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

सदन में नियमों की अवहेलना भी नहीं चलेगी, नहीं चलेगी। अधिक समय तक सदन में आसन की अवहेलना भी नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री) : इस सदन में इस प्रकार की अवहेलना नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।

एक माननीय सदस्य : सदन में नियमों की अवहेलना नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री) : सदन में नियमों की अवहेलना नहीं चलेगी, नहीं चलेगी। (व्यवधान)

श्री वासुदेव देवनानी (राज्य मंत्री, शिक्षा) : पश्चिमी बंगाल में नंदीग्राम में आपने 13 किसानों को मारा है। आप तो किसानों के हित की कोई बात नहीं करते हो। (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : सरकार, वह निकम्मी आपके लिए है लेकिन विपक्ष भी निकम्मा अपने आपको साबित कर रहा है। (व्यवधान) आप बात क्यों नहीं कहते। आप यहां पर वार्ता कीजिये। केवल नारे लगाने से कैसे काम चलेगा? आप चर्चा कीजिये। चर्चा कीजिये, नारे लगाने से थोड़े ही काम चलता है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री वासुदेव देवनानी (राज्य मंत्री, शिक्षा) : किसानों के हत्यारों, आप तो किसानों के हत्यारे हो। कोई बात करने का अधिकार.... (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

व्यवस्था

सदन में धरना, प्रदर्शन, भूख, हड़ताल नहीं की जा सकती

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मैं डूंगरगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य को यह बताना चाह रही हूं कि पार्लियामेंट्री प्रेक्टिस एण्ड प्रोसीजर है, उसे पढ़कर सुना रही हूं, जी.सी. मल्होत्रा ने वह किताब लिखी है-"A member is not to resort to hunger strike, dharna, demonstration, or perform any religious function in the precincts of the Parliament House and the Parliament House Estate." ...

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, पेज नम्बर कितने पर है? पेज नम्बर कितने पर है?

श्री अध्यक्ष : It means 'Assembly'.असेम्बली में आप न धरना दे सकते हैं, न आप और किसी तरह का डिमोंस्ट्रेशन कर सकते हैं। इसलिए मैं आपसे पुन: अनुरोध करूंगी कि अपने स्थान पर चले जायें। (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

सदन की कार्यवाही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की बैठक 11.06 बजे, दोपहर 14.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

पुन: समवेत् होने पर

(14.00 बजे)

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

(व्यवधान)

नियम 295 के अन्तर्गत विशेष उल्लेख की सूचनाएं

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आज जिन माननीय सदस्यों ने 295 के अपने प्रस्ताव दिये हैं (नियम 295 के तहत प्राप्त विशेष उल्लेख प्रस्तावों के लिए कृपया परिशिष्ट-1 देखें) विशेष उल्लेख के, उन्हें पढ़ा हुआ मान लिया जायेगा। परची के माध्यम से जो प्रश्न उठाये गये हैं, मैं नाम पुकार रही हूं मोहम्मद माहिर आजाद का, श्री टीकमचन्द कांत का, श्री जोगाराम पटेल, श्री सांगसिंह भाटी। (व्यवधान)

पर्ची के माध्यम से उठाये गये मुद्दे

जैसलमेर जिले में बाहरी कम्पनियों द्वारा भूमि खरीद

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका एक सीमांत जिले की तरफ ध्यान दिलाना चाहूंगा कि मेरे जैसलमेर जिले में दो-तीन सालों से लगातार बाहर की कम्पनियों द्वारा जमीनें खरीदी जा रही हैं, उसका कोई न अता और न पता है और ऐसी जमीनें खरीदना एक सीमांत जिले में राष्ट्र को खतरा है, कोई गलत गतिविधि का आदमी बोर्डर पर आकर बैठना, मैं सरकार से निवेदन करता हूं आपके माध्यम से कि वे सब बाहर के लोग करोड़पति, गरीब परिवार दिन प्रतिदिन भूमिहीन होते जा रहे हैं, कृपया उनके रोक लगाई जाय और यह राष्ट्र के हित में होगा कि बाहर की कम्पनियों द्वारा जो जमीनें खरीदी जा रही हैं और गरीब परिवार सारे के सारे भूमिहीन होते जा रहे हैं, इसलिए आपके माध्यम से मैं सदन से निवेदन करना चाहता हूं, माननीय रेवेन्यू मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूं कि जैसलमेर जिला एक सीमांत जिला है वहां जो भी जमीन खरीदें, राजस्थान का वाशिंदा होना चाहिए, राजस्थान का मूल निवासी होना चाहिए, नहीं तो बाहर के लोगों

(श्री सांगसिंह भाटी)

को जमीन अलाटमेंट नहीं होनी चाहिए। आपने मुझे समय दिया..(व्यवधान) यह बहुत ही गम्भीर मामला है, राष्ट्र की सुरक्षा के हित में खतरा है, इसलिए आपसे निवेदन करता हूं कि तुरंत प्रभाव से इस पर रोक लगाई जाये। सीमांत जिले की सुरक्षा की जाये। आपने जो समय दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं यहां प्रतिपक्ष के सदस्य जो विराजे हैं, उनसे निवेदन करना चाहूंगा कि आप अगर किसानों के हितैषी हो तो सदन में चर्चा करनी चाहिए, अपने-अपने क्षेत्र में जाकर रिपोर्ट लेनी चाहिए और यह हुल्लड़ करना, हाय-हाय कहना, काश्तकारों के हितैषी आप नहीं हो। अगर काश्तकारों के हितैषी होते, बिजली के बिल की माफ की बात कर रहे हो, आपके राज में काश्तकारों के कनेक्शन पर, काश्तकारों के कृषि कनेक्शन लाखों की तादाद में पेण्डिंग पड़े थे। लाखों की तादाद में पेण्डिंग पड़े थे वह कनेक्शन। हमारा राज्य आने के बाद काश्तकारों को, कम से कम तीस-पैंतीस हजार काश्तकारों को कनेक्शन दिये गये हैं और वह काश्तकार के खेत तक बिजली हमारी सरकार ने पहुंचाई। यह घड़ियाली आंसू मत बहाओ और अपने क्षेत्रों में जाकर पता करो कि काश्तकारों का कितना नुकसान हुआ है। घड़ियाली आंसू बहाने से कोई आपको हासिल नहीं होना है। (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : मैं प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहूंगी कि मुख्य मंत्रीजी बोलेंगी, कुछ घोषणाएं करेंगी इसलिए आप अपने-अपने स्थान पर चले जायें ताकि मैं सामान्य वाद-विवाद पर आगे वाद-विवाद को प्रारम्भ कर सकूं। आप इसी प्रकार से शोर करते रहेंगे तो मुख्य मंत्रीजी जो घोषणाएं करना चाहती हैं वो घोषणा कैसे कर पायेंगी। आप अपने-अपने स्थान पर चले जायें माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, आप अब आसन को मजबूर ही कर रहे हैं। मैं आपसे पुन: आग्रह करती हूं कि आप अपनी नारेबाजी बंद करके अपने-अपने स्थान पर चले जायें। माननीय सदस्यगण। माननीय सदस्यगण।

सदन की कार्यवाही 3.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 14.07 बजे, 15.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)

(पुन: समवेत् होने पर)

(15.00 बजे)

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : माननीय प्रतिपक्ष के सदस्यगण आपसे मेरा पुन: निवेदन है कि माननीय मुख्य मंत्री सदन की नेता आज कुछ घोषणाएं करेंगी, आप कृपया अपने-अपने स्थान पर जाकर के शांतिपूर्वक बैठें। आपको जो कुछ कहना है उसको आप कहिए, अपने सुझाव दीजिए, सरकार की कमियां बताइएं लेकिन आपके इस तरीके से मुरदाबाद और जिन्दाबाद करने से थोड़े ही काम चलेगा। सदन को चलने दीजिए, सदन चले राजस्थान की जनता चाहती है कि सदन चले, आपके बहुमूल्य सुझाव उसमें आयें, आपसे मेरा पुन: निवेदन है कि आप मुझे मजबूर ना करें, आसन को सहयोग करें, आसन का सहयोग करें। माननीय प्रतिपक्ष के सदस्यगण आप आसन का सहयोग करें, आसन आपसे सहयोग मांग रहा है, आसन आपसे सहयोग मांगता है, आप आसन का सहयोग करें, आप बहुत जिम्मेदार माननीय सदस्य हैं, जनता को बहुत उम्मीदें हैं आपसे, आप अपना स्थान ग्रहण करें। आपने शायद यह फैसला कर लिया है कि आपको केवल नारे लगाने हैं, आपको न सुझाव देने हैं, न आपको कुछ और कहना है, न आपको अपने रचनात्मक सुझाव देने हैं, न आपको सरकार को कंडेम करना है, आपको केवल नारे लगाने हैं। मैं अब सदन की कार्यवाही प्रारम्भ कर रही हूं। श्री सांवरलाल।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

समिति का प्रतिवेदन

राजस्थान भू-जल विकास और प्रबंध का विनियमन और नियंत्रण विधेयक, 2006 पर गठित प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय में वृद्धि

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि राजस्थान भू-जल विकास और प्रबन्ध का विनियमन और नियंत्रण विधेयक, 2006 पर प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को आगामी सत्र के प्रथम सप्ताह तक बढ़ा दिया जाए।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को आगामी सत्र के प्रथम सप्ताह तक बढ़ा दिया जाए?

(स्वीकृत)

नियत समय में वृद्धि का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

आय-व्ययक-2007-08 सामान्य वाद-विवाद के लिए मैं नाम पुकार रही हूं। डा. एन.एस. गुर्जर।

आय-व्यय (वर्ष 2007-08) पर वाद-विवाद

डा. एन. एस. गुर्जर (टोडारायसिंह) : अध्यक्ष महोदय, इस पर ये तो बोल चुके हैं और हमारी बात सुनना नहीं चाहते हैं...

श्री अध्यक्ष : इनका तो एक-सूत्री कार्यक्रम है, आपको बोलना है तो बोलिए। इनका तो एक-सूत्री कार्यक्रम है।

डा. एन. एस. गुर्जर (टोडारायसिंह) : अध्यक्ष महोदय, इसमें सुने और शान्त बैठे तो हम इनको बतायें, इनका उत्तर दें, जो इन्होंने सवाल उठाया है लेकिन अब ये किसानों के लिए यहां घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं और हां-हुल्लड़ कर रहे हैं, इसमें कैसे संभव हो कि हम बोल सके? कैसे संभव हो हम बोले? अध्यक्ष महोदय, हाउस आर्डर में हो तो हम कुछ बोलने की कोशिश करें (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, हाउस आर्डर में हो तो मैं कुछ बोलूं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : श्री ज्ञानचन्द पारख, श्री मदन राठौड़।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : अध्यक्ष महोदय, 9 मार्च को जब यहां पर सत्र आहूत हुआ और 9 मार्च को श्रद्धेय मुख्य मंत्रीजी ने वित्तमंत्री के नाते जब बजट प्रस्तुत किया तो उस समय एक कांग्रेस पार्टी के अति-उत्साही माननीय सदस्य ने एक कटाक्ष किया था लेकिन जब हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी ने बजट पढ़ना शुरू किया तो इनके चेहरे की हवाइयां बदलने लगी, इनके चेहरे की रंगत बदलने लगी और वास्तव में जो कटाक्ष किया था जब मुख्य मंत्रीजी ने बजट पढ़ना शुरू किया तो धीरे-धीरे इनकी 12 बजने लगी और 12 बज गई और इनके पास कहने को कुछ नहीं है। अध्यक्ष महोदय, जब

(श्री मदन राठौड़)

बजट पर इनकी प्रतिक्रियाएं आना शुरू हुई तो मुझे तो आश्चर्य हुआ कि नाथद्वारा के माननीय सदस्य जब बोलना शुरू हुए तो उनको इस पूरे बजट में कुछ भी नहीं मिला और केवल मैं-मैं करते रहे और मैं पर ही वो व्यंग्य करने की कोशिश की और तभी मैंने उसी समय टोका था कि जब इनके मंत्री, जब इनका कांग्रेस का शासन था और इनके मंत्री ने जब बजट पढ़ना शुरू किया तो मैंने इनके सामने और वो इनकी बजट की 2002-03 प्रतियां प्रस्तुत की जिनमें 64 बार इन्होंने मैं शब्द का प्रयोग किया। वो मैंने इनके सामने बताया। अध्यक्ष महोदय, इनको हमारे बजट में मैं के सिवाय हम कहीं नहीं दिखाई दिया जबकि हमारे मुख्य मंत्रीजी ने 18 बार हम और हमारी सरकार का प्रयोग किया। ये इनके ध्यान में नहीं आया। इनको कुछ भी ऐसा नहीं मिला जिसमें ये कोई कमी निकाल सके। अध्यक्ष महोदय, इनके पास कहने को कुछ नहीं है, ये केवल हंगामा करना चाहते हैं, इनको मालूम है कि मुख्य मंत्रीजी ने ऐसा बजट प्रस्तुत किया जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है और यहां राजस्थान की जनता मस्ती से झूम रही है और किसान खुश हैं। वो मजदूर खुश हैं और उन मजदूरों की और जो गैर संगठित ऐसे कामगार थे जो रिक्शा वाले, जो ठेले वाले, जिन की आज तक किसी ने चिंता नहीं की, उनकी चिंता मुख्य मंत्रीजी ने की है। इनके पास में कहने को कुछ नहीं है, ये इलाक़े में जा नहीं सकते, इलाक़े में जाए तो इनके कपड़े फाड़ देवें। आज अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सामने दावे से कहना चाहता हूं कि आज ये हाय-हुल्लड़ कर रहे हैं, ये मुर्दाबाद कर रहे हैं, इनकी जनता शर्मसार हो रही है जिन्होंने इनको जिताकर भेजा, वह आज शर्म से और अपना मुंह नीचा करके कह रही है कि उन्होंने कैसे ऐसे लोगों को भेज दिया जो हमारी चिंता को सदन के अंदर नहीं रख रहे हैं, जो हमारी चिंता नहीं कर रहे हैं, जो केवल अपनी प्रतिष्ठा की चिंता कर रहे हैं, जो केवल यश के लिए मर रहे हैं। जनता के लिए चिंतित नहीं है, मैं आपके सामने कहना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय, इस बजट की सर्वत्र प्रशंसा हुई है, महिलाओं ने अभी आपको मालूम होगा कि जब इन्होंने यहां पर हिण्डौली के सदस्य ने सदन में चर्चा की तो खुद ने स्वीकार किया कि उनकी खुद की पत्नी ने कहा कि इतना बढ़िया बजट आपकी मुख्य मंत्री ने पेश किया है, यह रिकार्ड में है अध्यक्ष महोदय, ये रिकार्ड में आया हुआ है कि इनकी पत्नी ने प्रशंसा की, इनके घरों में इनकी पत्नियां इनको बोलने नहीं देती हैं, इनके पास

(श्री मदन राठौड़)

में कहने को कुछ नहीं है, ये इतने निरुत्साहित हो चुके हैं, इतने हताश हो चुके हैं कि हताशा में इनके समझ में नहीं आ रहा है कि हम कैसे इस बजट की आलोचना करें। कहने को कुछ भी नहीं है इस बजट में, ये कुछ भी नहीं बता सकते, अध्यक्ष महोदय, केन्द्र ने कई बार भेदभाव किया, मैं तो आपको एक बात बताना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय, ये आलोचना करना चाहते है, आपने नवज्योति पढ़ा होगा, जब मुख्य मंत्रीजी ने बजट पेश किया तो नवज्योति के मुख पृष्ठ पर एक डेयरी का चित्र था, साक्षात् लक्ष्मी का चित्र नवज्योति ने मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया और उसमें मुख्य मंत्री लुटा रही हैं ये ले जाओ कामगारों के लिए, ये किसानों के लिए, ये मजदूरों के लिए, ये कर्मचारियों के लिए, इन्होंने सबके लिए लुटाया। ये स्थिति है और मुख्य मंत्रीजी ने (व्यवधान) मुख्य मंत्रीजी ने जिस प्रकार से एक मां अपने परिवार की चिंता करती है उस प्रकार से मुख्य मंत्रीजी ने पूरे राजस्थान की चिंता की है। अध्यक्ष महोदय, मां अपने सम्मुख छोटे से बजट के माध्यम से, छोटे से बजट से परिवार के सभी सदस्यों की चिंता करती है, वह बहन का मायरा भरवा देती है, बेटी की शादी की चिंता भी करती है।

(प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा नारेबाजी लगातार जारी)

बच्चे के लिए ड्रैस की भी चिन्ता करती है और पति के लिए स्कूटर भी यानी जिस प्रकार से एक गृहिणी पूरे घर को संभालती है ऐसा मातृवत दायित्व हमारी श्रद्धेय मुख्य मंत्रीजी ने निभाया। अध्यक्ष महोदय, केन्द्र ने भेदभाव किया हमारे साथ केन्द्र ने हमारे हक का पैसा नहीं दिया । बाढ़ में जो पर्याप्त राशि हमको मिलनी चाहिए थी केन्द्र ने नहीं दी। बिजली, जो बिजली हमारे हक की हमको मिलनी चाहिए थी वो बिजली केन्द्र ने नहीं दी। हमें पर्याप्त राशि भी नहीं दी । यहां तक कि सरसों की खरीद का भुगतान भी बहुत विलम्ब से किया उसके लिए भी मुख्य मंत्रीजी को संघर्ष करना पड़ा अध्यक्ष महोदय, लेकिन इसके बावजूद जनता खुश है मुख्य मंत्रीजी पर जनता खुश है मुख्य मंत्रीजी ने सत्ता संभाली उसके बाद में कई चुनाव आये। अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले लोकसभा का चुना व आया 25 में से 21 सीटें भारतीय जनता पार्टी ने जीतीं श्रद्धेय मुख्य मंत्रीजी के नेतृत्व में जनता ने फिर विश्वास दिलाया। अध्यक्ष महोदय, उसके बाद दूसरा चुनाव आया नगरपालिकाओं का और नगरपालिकाओं में ये चारों खाने चित्त हो गये। कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो

(श्री मदन राठौड़)

गया और भारतीय जनता पार्टी नगरपालिकाओं में अधिक जीत कर के आयी। अध्यक्ष महोदय, उसके बाद चुनाव हुए पंचायत समितियों के, जिला परिषदों के उसमें भी मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में अधिक चुनाव भारतीय जनता पार्टी ने जीते। यही नहीं अध्यक्ष महोदय, जो बीस-पच्चीस वर्षों से इन्होंने चुनाव नहीं कराये ये चुनाव से डरते रहे भागते रहे वो चुनाव मुख्यमंत्री जी ने कराये। अध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहूंगा कि कृषि उपज मंडी के चुनाव जिसमें भारतीय जनता पार्टी के लोग जीतकर आये। यही नहीं डेयरी के चुनाव, डेयरी के चुनावों में भी बीजेपी जीत कर आयी और यही नहीं को-आपरेटिव के चुनाव, को-आपरेटिव के चुनावों में भी बीजेपी जीत कर आयी। ये किस मुंह से जायें।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपको एक और जानकारी देना चाहूंगा आपको सब जानकारी है कि हमारी मुख्य मंत्रीजी के हाथ में यश की रेखा है और उनको एक और बधाई देनी चाहिए कि उनकी छोटी बहन अभी ग्वालियर से यशोधरा राजे सिंधिया चुनाव जीत कर आयी हैं लोकसभा का चुनाव जीत कर आयी हैं। अध्यक्ष महोदय, यह कोई कम बात नहीं है। अब कोई इनके देवी रूप में चित्र छाप दे तो इनको मौत आती है विपक्ष को मौत आने लग जाती है। अध्यक्ष महोदय, मैं एक दृष्टांत आपको देना चाहूंगा कि जब हिन्दुस्तान पाकिस्तान का युद्ध हो रहा था और उस समय हिन्दुस्तान की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी थीं और श्रद्धेय वाजपेयी जी ने पाकिस्तान को धमकाते हुए कहा था कि पाकिस्तान यह नहीं समझे कि हिन्दुस्तान का नेतृत्व किसी महिला के हाथ में है। हमारे यहां महिला को हमने शक्ति के रूप में माना है उसको देवी के रूप में माना है और जिस समय वो रणचंडी का खप्पर लेकर के मैदान में आ पड़ती है तो शत्रुओं को नेस्तनाबूद कर देती है और इस बात को लेकर के अटलजी ने तो कहा था पाकिस्तान को धमकाने के लिए और ये उसको भुनाते रहे अध्यक्ष महोदय, और वर्षों तक गीत गाते रहे।

मैं एक बात आपसे कहना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय, आपका लंबा राजनीतिक जीवन है, यहां कई महानुभाव हैं जिन्होंने लम्बा राजनीतिक जीवन जीया है ऐसे कौन मुख्य मंत्री थे जिन्होंने इन्दिरा जी के सुपुत्र को ऊंट से उतारने के लिए अपना कंधा दे दिया था? *** शर्म करो यह शर्म की बात है आपके कांग्रेस के मुख्य मंत्री ने इन्दिरा गांधी के लड़के संजय गांधी को ऊंट से उतारने के लिए अपना कंधा दे दिया। राजस्थान की जनता तो उसी दिन

(श्री मदन राठौड़)

शर्मसार हो गयी थी, राजस्थान की जनता कि राजस्थान का एक ऐसा मुख्य मंत्री जिनको शर्म आनी चाहिए अपना कंधा दिया था उस राजपुत्र जिसको राजपुत्र माना गया था उसको उतारने के लिए अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे एक बात यह भी कहना चाहूंगा कि मुख्य मंत्रीजी ने जब सत्ता संभाली तब राजस्व घाटा तीस प्रतिशत था, राजस्व घाटा एक तिहाई था लेकिन आज राजस्व घाटा सरप्लस है ये बहुत खुशी की बात है। कुशल वित्तीय प्रबंधन के कारण यह हमारा कुशल वित्तीय प्रबंधन है। आपको मालूम है कि कांग्रेस ने सेवानिवृत्ति की आयु दो वर्ष घटा ली थी, 58 वर्ष कर ली थी लेकिन अब एक साथ भार पड़ा है तीन गुना भार पड़ा और सात सौ करोड़ का बोझ हमारी इस राजस्थान सरकार पर आया लेकिन इनका कुशल वित्तीय प्रबंधन है कि उसकी भी परवाह नहीं की अध्यक्ष महोदय, यही नहीं सरकारी कर्मचारियों को बोनस दिया, महंगाई भत्ते पर 11 प्रतिशत और उससे अभी लगभग 600 करोड़ का बोझ राजस्थान की सरकार पर आया लेकिन उसकी भी परवाह नहीं की उनको भी खुश किया। यही नहीं, आपको मालूम होगा कि 20 पाइंट प्रोग्राम, 20 पाइंट प्रोग्राम में जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार राजस्थान में बनी है तीनों बार फर्स्ट रहा है हिन्दुस्तान में प्रथम राजस्थान की सरकार रही है। यह बहुत खुशी की बात है।

अध्यक्ष महोदय, कभी भी ओवरड्राफ्ट नहीं लिया जबकि आठ सौ दिन ओवरड्राफ्ट के सहारे ये जिन्दा रहे, इसके लिए तो शर्मसार हैं। ये सोच भी नहीं सकते कल्पना भी नहीं कर सकते कि इस प्रकार की स्थिति यहां पर हो सकती है अध्यक्ष महोदय, आपको मैं एक जानकारी दूं कि राजस्थान की सरकार ने जो अभाव अभियोग और उनकी समस्या सुनने का जो कार्यक्रम चालू किया है उसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई है। कलेक्ट्रेट में भी जनसुनवाई हो रही है। ये सुनवाई मुख्य मंत्रीजी खुद भी करती हैं और जिला स्तर पर भी, तहसील स्तर पर भी, एसडीओ स्तर पर भी जनसुनवाई हो रही है इसलिए सामान्य जनता की सुनवाई करके उनका निराकरण करवाना, उनको नियम और कानून और उनको लाभ इसमें जल्दी से जल्दी मिल सके इसके बारे में ये चिन्ता कर रही हैं।

(प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा नारेबाजी लगातार जारी)

(श्री मदन राठौड़)

अध्यक्ष महोदय, महिलाओं की चिन्ता किसने की? ये लोग तो बड़े चिंतित हैं। ये ढोल पीटते हैं कि हम चिन्ता कर रहे हैं लेकिन महिलाओं के लिए जैसे स्टेंप ड्यूटी में पांच प्रतिशत की जो राहत दी उसका यह लाभ मिला कि लगभग पौने चार लाख महिलाओं को संपत्ति का अधिकार मिला। अध्यक्ष महोदय, ये जो कर्जा लेते थे 28 प्रतिशत और हमने कर्जा लेने की रेट घटाई अभी 17 प्रतिशत हम कर्जा ले रहे हैं जबकि इन्होंने सरकार छोड़ी तो हिन्दुस्तान पर 52 हजार करोड़ का कर्जा छोड़ा। ये कितनी शर्म की बात है लेकिन इन्होंने स्थायी परिसंपत्तियों का निर्माण नहीं किया। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि अभी जो हमने कैंप चलाये उन कैंपों के माध्यम से पूरा आकलन हुआ 99.5 प्रतिशत स्थायी परिसंपत्तियां मौजूद पायी गयीं। यह कोई कम बात नहीं है। अध्यक्ष महोदय, यह आपको मैं जानकारी दूं कि 11वीं पंचवर्षीय योजना जो 68,422 करोड़ रुपये की बनी और दसवीं पंचवर्षीय योजना जो केवल 31,832 करोड़ रुपये की थी यानी दुगुनी से भी अधिक यह हमारी मुख्य मंत्रीजी ने किया है।

अध्यक्ष महोदय, यह मैं आपको बताऊं कि मैं कोई क्वात्रोची की बात यहां करना नहीं चाहूंगा। क्वात्रोची की बात करूंगा तो इनकी हालत खराब हो जाएगी। जिस क्वात्रोची को बचाने के लिए जो मामा कहलाता था, इन कांग्रेसियों का मामा क्वात्रोची, ये मामा के नाम से जो सोनिया जी के घर में जिसकी पहचान थी, उस क्वात्रोची को बचाने का षड्यंत्र इन्होंने किया है । यह अपराध इन्होंने किया है। ये इनके लिए शर्म की स्थिति है। ये किस मुंह से बोलें जनता इनकी सुनती नहीं, जनता इनकी परवाह करती नहीं, इनकी जनता के सामने जाने की स्थिति नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, ये रिक्शा वाले, ठेले वाले बहुत खुश हैं। ये मुख्य मंत्री से बहुत खुश हैं क्योंकि उनके बारे में किसी ने कभी भी चिन्ता नहीं की । आज कोई कर्मचारी रिटायर होता है तो उसको पेंशन मिलती है लेकिन ये बेचारे उम्र पार कर लेते हैं जिन्दगी भर वो ठेला चलाते हैं, रिक्शा चलाते हैं लेकिन अंत में जब वो रिटायर हो जाते हैं उम्र पार हो जाती है जब उसकी टांगों में जोर नहीं रहता जब रिक्शा चला नहीं सकता तब उसकी कोई सुध लेने वाला नहीं है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, इनकी चिंता भी हमारी मुख्य मंत्रीजी ने की है और उनसे सहयोग लेकर के और जितना वो सहयोग देते हैं एक हजार रुपये तक

(श्री मदन राठौड़)

का और वो राशि जमा करने के बाद में और उनकी उम्र 58 वर्ष हो जाएगी तो उनको भी यह पेंशन के रूप में वापस मिलेगी ताकि वो भी अपनी वृद्धावस्था में सम्मान की जिन्दगी जी सकें। अध्यक्ष महोदय, विकलांग के लिए या युवाओं को आज आप एक बात सोचिये अध्यक्ष महोदय, युवाओं को रोजगार नहीं मिलता है तो उनको भत्ता दिया। यानी बेरोजगारी भत्ता देने की बात चार सौ रुपये युवाओं को बेरोजगार भत्ता और पांच सौ रुपये युवतियों को और छः सौ रुपये विकलांगों को इस प्रकार की जो घोषणा की है ये मुख्य मंत्रीजी की घोषणा वास्तव में उन युवाओं के दिल को छूने वाली है वो युवा आज खुश हैं। युवा खुश, महिला खुश, मजदूर खुश, व्यापारी खुश सभी लोग खुश हैं तो इनको सिर छुपाने के लिए जगह नहीं है। इनकी हालत खराब है। अध्यक्ष महोदय, यही नहीं मैं आपके माध्यम एक निवेदन और करना चाहूंगा श्रद्धेय मुख्य मंत्रीजी को कि मुख्य मंत्रीजी, आपने बहुत बढ़िया बजट पेश किया है लेकिन कृपा करके सभी वृद्धों को जिनकी उम्र 65 वर्ष पार हो गयी जिनको आप बसों में राहत देते हैं जिनको आप और जगहों पर राहत देते हैं यदि उन सबको भी आप राहत दे सकें उनको वृद्धावस्था पेंशन 65 वर्ष की उम्र पार करने पर चाहे कोई भी जाति का हो, कोई भी वर्ग का हो जिसकी उम्र 65 वर्ष पार हो गयी उसको दें । आप इस प्रकार का और पेंशन का इनके लिए आप करेंगी तो वो भी निश्चित रूप से आपको अपने सिर पर और वास्तव में वो सही रूप में आपकी तस्वीर बना कर के पूंजेंगे क्योंकि बुजुर्ग हो गया वो तो उसके कोई लड़का भी होगा लेकिन लड़का नौजवान हो गया वो अपनी पत्नी को लेकर उसके साथ रहने लग जाता है लेकिन उस वृद्ध की चिन्ता वो नहीं करता तो उसकी चिन्ता आप करें, यह मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी चाहूंगा कि सभी प्रकार की विधवा जो पेंशन लेना चाहे उसको भी आप पेंशन देने की घोषणा कर सके तो निश्चित रूप से यह एक सराहनीय कदम होगा ।

अध्यक्ष महोदय, एक बात और निवेदन करूंगा कि समाज के कई ऐसे लोग हैं जो मांग कर रहे हैं यह बैक लॉग भरने की मांग लगातार करते आ रहे हैं और आपने यह घोषणा की है कि बैक लॉग मैं बिलकुल शून्य कर दूंगी, यह निश्चित रूप से प्रशंसा की बात है, यह कोई कम बात नहीं है । अध्यक्ष महोदय, बैक लॉग आपने पूरा भरने की बात कही है इससे एससी के लोग खुश

(श्री मदन राठौड़)

हैं, एसटी के लोग खुश हैं और अनुसूचित जाति-जनजाति के सभी वर्गों के लोग खुश हैं यह कोई कम बात नहीं है । यह आपने बहुत बढ़िया बात की है। समाज के कई लोग जो मांग करते रहे हैं कि आर्थिक आधार पर जो पिछड़े लोग हैं उनको भी राहत दी जानी चाहिये लेकिन मैं आपकी प्रशंसा करना चाहूंगा कि आपने आर्थिक पिछड़ा आयोग के गठन करने की जो घोषणा की है वह प्रशंसनीय कदम है यह बहुत बढ़िया काम आपने किया है । इसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत साधुवाद दूंगा । अध्यक्ष महोदय, हम जब कभी भी अख़बार देखते हैं कि ओलम्पिक के गेम आ रहे हैं और उसमें जब हम इतने बड़े भारत का नाम ढूंढने की कोशिश करते हैं तो ऊपर से नाम मिलता नहीं है नीचे से कहीं नाम मिलता है लेकिन इसका कारण है कि इन्होंने कभी भी चिंता नहीं की । खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की इन्होंने कभी भी परवाह नहीं की। वह परवाह आपने की है मैं इसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा । हमारे मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने किसी भी प्रकार के मैडल जीत कर आने पर, हिन्दुस्तान का नाम रोशन जिसने किया है उसके लिये इन्होंने प्रोत्साहन राशि की घोषणा की । ओलम्पिक में जो स्वर्ण पदक जीतता है उसके लिये हमारे मुख्य मंत्रीजी ने 15 लाख रुपये देने की घोषणा की है । जो रजत पदक जीत कर आता है उसको 10 लाख रुपये की घोषणा की है कांस्य पदक जीत कर आता है उसको 5 लाख रुपये देने की घोषणा की है । यही नहीं जो एशियन गेम में स्वर्ण पदक जीते उसे 5 लाख, रजत पदक जीते उसे 3 लाख और कांस्य पदक वाले को डेढ लाख देने की घोषणा की है । कोमन वैल्थ के खेलों में, नेशनल खेलों में जो हिन्दुस्तान का नाम रोशन करके आता है उसको प्रोत्साहन देने के लिये आपने इस प्रकार की घोषणा की है इसकी प्रशंसा भी की जानी चाहिये । अध्यक्ष महोदय, यही नहीं हमने सब क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किये हैं । अध्यक्ष महोदय, मातृ मृत्यु दर जो पहले 670 प्रति लाख थी आपने घटाकर 445 की और 148 का लक्ष्य रखा है यह प्रशंसा की बात है । अध्यक्ष महोदय, संस्थागत प्रसव पहले 17.3 था उसको बढ़ाकर 32.2 किया है यह भी प्रशंसा की बात है । यह है हमारा काम । शिशु टीकाकरण पहले 21.5 था जो अभी 26.5 आपने किया है । इसमें भी आपने कीर्तिमान स्थापित किया है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह भी निवेदन करना चाहूंगा हमारे यहां पर पहले अस्पतालों की चिंता किसी ने नहीं

(श्री मदन राठौड़)

की । लेकिन मुख्य मंत्रीजी ने निर्देश दिये और चिकित्सा मंत्री जी ने हमारे सभी डाक्टर्स के पद भर दिये, मेरे इलाके के सभी डाक्टर्स के पद भर दिये । मैं यह भी कहना चाहूंगा कि मेरे सुमेरपुर में 4 डाक्टर्स के क्वाटर्स और 4 पैरा मैडिकल स्टाफ के क्वाटर्स और 2 चतुर्थ श्रेणी के क्वाटर्स के लिये राशि इन्होंने स्वीकृत की, यह भी प्रंशसा की बात है । अध्यक्ष महोदय, मैं जलदाय की बात करना चाहूंगा । पानी के बारे में किसी ने पहले चिंता नहीं की । यह घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं । किसान के हितैषी बनने की कोशिश कर रहे हैं । जब इनकी सरकार थी तो नर्मदा का पानी गुजरात के मुख्य मंत्री देने के लिये तैयार थे इन्होंने कोई राशि जमा नहीं कराई, केवल 67 करोड़ कराई । लेकिन हमारे मुख्य मंत्रीजी ने पद संभालते ही सबसे पहले 335 करोड़ रुपये दिये और उसके बाद आज तक जितनी भी राशि होती है पूरी की पूरी राशि इन्होंने जमा करा दी यह प्रंशसा की बात है । हमारे संवेदनशील मुख्य मंत्रीजी ने सभी वर्गों की चिंता की है और राशि जमा कराई। आप किस मुंह से बात करते हो आपके पास बोलने के लिये कुछ नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि प्राकृतिक प्रकोप हुआ, प्रकृति ने जब ओले बरसा दिये उसकी आपने क्या चिंता की । मुख्य मंत्रीजी ने विधायक दल की मीटिंग में सबको कहा कि इलाके की चिंता करो, इलाके में जाइए और वहां जाकर सर्वे करवाओ, तुरन्त अधिकारियों को भेज दिया, सारे कलक्टर्स को निर्देश दिया, मंत्रियों को इलाके में भेजा और कहा जाकर पूरा सर्वे करवा कर रिपोर्ट लाकर दो हम किसान की मदद करना चाहते हैं, यह मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की । अध्यक्ष महोदय, उसके तुरन्त बाद वह यहां बैठे नहीं, मुख्य मंत्रीजी तुरन्त खुद निकल गये और इलाके का सर्वे करने के लिये निकल गये और अपने जो साथी मंत्री हैं उनको भी भेजा, विधायकों को भी भेजा लेकिन यह क्या करने लगे, यह तो पहले दिन से ही हंगामा कर रहे हैं । करें क्या इनको तो कहीं जगह मिलती नहीं, विरोध का कोई आधार मिलता नहीं । बजट ऐसा उसमें ढूंढने से भी कुछ मिलता नहीं तो यह तो हंगामा कर रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, यह किसान के हितैषी नहीं है, यह किसान की चिंता नहीं करते हैं । यह विपक्ष बिलकुल गैर जिम्मेदार है, गैर जवाबदार है और वास्तव में विपक्ष अपना दायित्व नहीं निभा पा रहा है । इनके पास कुछ नहीं है किंकर्तव्यविमूढ हो गया, दिमाग शून्य हो गया कि अब क्या बोले, क्या करें,

(श्री मदन राठौड़)

इनके दिमाग की उपज समाप्त हो गई । अध्यक्ष महोदय, केवल हंगामा कर रहे हैं । केवल हंगामा करने से काम नहीं चलता । आपने कोशिश की, मुख्य मंत्री 4-5 बार यहां पर आ गये, पहले दिन आये, कल भी आये अपनी घोषणा करना चाहते थे । अध्यक्ष महोदय, जन हितों के लिये राहत का पैकेज लेकर आये । मुख्य मंत्रीजी कोई पैकेज की घोषणा करना चाहती थी यह हंगामा कर रहे हैं । पैकेज के बारे में सुनने की इनकी स्थिति नहीं है । अकाल राहत मंत्री जी बोले तो भी यह सुनने को तैयार नहीं है । अध्यक्ष महोदय, इनको चाहिये था कि जब मुख्य मंत्रीजी पैकेज की घोषणा करें और इनको लगता है कि कोई सुझाव देने चाहिये तो सारगर्भित सुझाव दें । लेकिन दे क्या इनके पास कुछ भी नहीं है । इनको मालूम है कि जब इनकी मुख्य मंत्री जी खडी हो गईं तो वह तो वाह वाही लूट लेंगी, इनके पास तो खजाना खाली नहीं है । मुख्य मंत्रीजी का खजाना तो भरा हुआ है और वह जनता के हितों की चिंता कर रही है, आज भी कर रही हैं । अध्यक्ष महोदय, मैं आपको निवेदन करूं कि निश्चित रूप से मुख्य मंत्रीजी किसानों के हितों की चिंता करेगी ।

अध्यक्ष महोदय, आपको तो सब मालूम है लेकिन मैं एक निवेदन करना चाहूंगा मुख्य मंत्रीजी ने प्रयास किये, पहले भी मुख्य मंत्री रहे हैं कांग्रेस के मुख्य मंत्री तो केवल नारे लगाते थे कि आओ राजस्थान में उद्योग लगाओ । उस कंगाल के पास जाकर कौन उद्योग लगायेगा जिसके पास देने को कुछ नहीं है । लेकिन कोई नहीं आया । लेकिन मैं आपको जानकारी देना चाहूंगा कि मुख्य मंत्री जी पर उद्योगपति भी विश्वास करता है, सेज के माध्यम से और भी कई माध्यमों से मुख्य मंत्री जी ने विदेशी निवेश और हमारे जो अप्रवासी राजस्थानी हैं उनसे निवेश भी प्राप्त करने की कोशिश की और वह लोग आये, उन्होंने विश्वास किया और यहां आकर अपना उद्योग स्थापित करने लगे हैं । राजस्थान में पूंजी निवेश बढ़ा है । सीएम की औद्योगिक विकास में रूचि है । यही नहीं उद्योग मंत्री द्वारा जो आमंत्रण किया गया उसको भी जनता ने स्वीकार किया है। उद्योग मंत्री पर भी जनता ने विश्वास किया है और यह यहां आने लगे । मल्टीनेशनल्स आये, बिल्डर्स आये, फिल्मकार आये, बड़े निवेशक आये, हीरो होंडा वाले आये, महिन्द्रा वाले आये, ओमेक्स वाले आये, वाटिका वाले आये, रिलायंस वाले आये, एयरटेल वाले आये, पिरामिड वाले आये अध्यक्ष महोदय, मैं कितने नाम गिनाऊं सभी यहां आये और यहां पर निवेश

(श्री मदन राठौड़)

करना चाहते हैं । अब उनको विश्वास हो गया है कि राजस्थान की जनता हमारे साथ है और मुख्य मंत्रीजी के नेतृत्व में पूरा राजस्थान एकजुट है और यह हमारे हितों की रक्षा कर सकेगा तब जाकर वह यहां निवेश करने के लिये आये हैं । अध्यक्ष महोदय, यह कोई कम बात नहीं है अब यह किस मुंह से बोलें इनके पास कहने को कुछ नहीं है । अध्यक्ष महोदय, मैं उद्योग मंत्री जी से एक और निवेदन करूंगा कि जिस प्रकार से स्पेशल इकोनोमिक जोन में आपने सब प्रकार की सुविधाएं देने की जो घोषणा की है मैं आपसे निवेदन करूंगा कि और भी जो औद्योगिक क्षेत्र हैं उसमें भी आप इसी प्रकार की सुविधाएं दें इससे और भी उद्योग स्थापित होंगे । उद्योग फलेगा हमारा आर्थिक आधार मजबूत होने वाला है इस प्रकार की स्थिति हमारी बनेगी। अध्यक्ष महोदय, किसानों की चिंता करने की बात विपक्ष कह रहा है, इन्होंने कभी भी किसान की चिंता नहीं की । यह मुख्य मंत्री जी ने चिंता की है जिन्होंने क्रय विक्रय सहकारी संघ को एक प्रकार का फंडिंग दिया है । कृषि मंत्री जी ने इस प्रकार का पैसा दिया है कि वह उर्वरक लाकर यहां इकट्ठा कर सके ताकि जरूरत पड़ने पर किसान को इधर उधर भागना नहीं पड़े । अध्यक्ष महोदय, मुझे जानकारी है कि इस बार बरसात अच्छी हुई है । किसानों को चाहिये था खाद, किसानों को चाहिये था यूरिया लेकिन केन्द्र ने यहां भी ऐसा कि हमें रेलवे वैगन देने के लिये तैयार नहीं हुए। उन्होंने कह दिया हम गेहूं इम्पोर्ट कर रहे हैं यह कहकर रेलवे वैगन हमको नहीं दिये। लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि हमने उसकी भी व्यवस्था की चाहे ट्रकों के माध्यम से लाना पड़ा लेकिन हमने खाद, यूरिया हमारे किसानों को समय पर दिया इसके लिये भी मैं इन सबका धन्यवाद देना चाहूंगा । अध्यक्ष महोदय, इन्होंने वहां फंडिंग किया है, क्रय विक्रय सहकारी संघ को रुपया दे दिया कि आप आफ सीजन में पहले से लाकर यूरिया का भंडार कर दो, खाद का भंडार कर दो ताकि किसान को जरूरत पड़ने पर उनको इधर उधर नहीं देखना पड़े और वहां से आप खाद उपलब्ध करवा दो ।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक और निवेदन करना चाहूंगा कि किसान की जब उपज आती है, जब चारों ओर से एक साथ उपज आ जाती है, रायडा आता है तो एक साथ रायडा आ जाता है, गेहूं आता है तो एक साथ आ जाता है तो

(श्री मदन राठौड़)

किसान को मजबूरी में अपनी फसल मार्केट में बेचनी पड़ती है और जब वह मार्केट में बेचने जाता है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

चूंकि मार्केट में आवक ज्यादा है इसलिए भाव घट जाते हैं इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि कृषि मंत्री जी जरा इसकी चिंता कीजिए कि आप उसको भंडार दे दीजिए, भंडार में वह अपना अन्न रख देवे और उसको 50 प्रतिशत बिना ब्याज पर आप रुपया दे दो।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक और बात आपसे कहना चाहता हूं यह लोग किसान से 20-21 प्रतिशत ब्याज लेते थे, कांग्रेस के लोग किसानों से 20-21 प्रतिशत ब्याज लेते थे। हमने केवल 7 प्रतिशत पर को-आपरेटिव बैंक से कर्जा देना शुरू कर दिया और यह भी कम नहीं है कि बैक डेट से, पिछली तारीख से इन्होंने 7 प्रतिशत पर कर्जा देने की घोषणा की। यह किसान का हित है, किसान की चिंता है, यह किसान के प्रति दर्द है। केवल हाय-हो करने से दर्द साबित नहीं होता है। राजस्थान की जनता आपको देख रही है। राजस्थान की जनता आपको थू-थू कर रही है। आप पर थूक उछाल रही है। आप राजस्थान की जनता की चिंता नहीं कर रहे। किसान की चिंता तो मुख्य मंत्री और इस मंत्रिमण्डल के सभी सदस्यों के मन में है। इन्होंने किसान प्रतिनिधियों को इजरायल भेजा, यह कहा कि इजराइल आगे बढ़ रहा है, इजराइल कम पानी में कैसे खेती कर पा रहा है, इजराइल किस प्रकार अच्छी उपज कम पानी में ले सकता है, इन्होंने अपने प्रतिनिधियों को चुनकर इजराइल भेजा ताकि वहां से प्रशिक्षण लेकर आये और यहां के किसानों को समझाये। यह कोई आपके दिमाग की उपज तो है नहीं। इन विपक्षियों के दिमाग में नहीं है, इन विरोधियों के दिमाग में नहीं है। इन्होंने कभी भी चिंता नहीं की। यह कितने वर्ष तक राज करते रहे, कितने वर्ष तक राजस्थान का खून चूसते रहे। अरे, यह क्या बात करेंगे। इनके तो मुख्य मंत्रीजी की स्थिति यह थी, मुझे मालूम है। यह प्रमोद जैन भाया, आप वहां पर क्या देख रहे हो, आपके यहां तो जब, आपके वहां पर पहले श्याम नागर एक एम एल ए था, मुख्य मंत्रीजी अशोक गहलोत के सामने उसकी जू-तम पैजार हुई, यह आप भूल जाते हो क्या, शर्म आनी चाहिये आपको, किस मुंह से हमारी आलोचना करने की कोशिश कर रहे हो।

(श्री मदन राठौड़)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

अध्यक्ष महोदय, महिलाओं को भी ताकत दी। हाडी रानी एक ऐसा फोर्स गठित करने की बात, आर.ए.सी में महिलाओं को भर्ती करने की बात। पहले 0.49 प्रतिशत महिला सिपाही, अब मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की है 30 प्रतिशत महिलाओं को आरक्षण, यह कोई कम बात है ? आपने किया क्या है, कुछ भी नहीं किया। वह महिलाएं तो वास्तव में आपको जूते मारने वाली हैं, यह आप समझ लीजिए। आप भले ही हां-हां करें। आप आधे रह जाएंगे। आपके पास में कहने को कुछ नहीं है।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें। माननीय सदस्य, आधा घंटा हो गया, कृपया समाप्त करें।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन करूंगा, कर प्रस्ताव, अध्यक्ष महोदय, एक और जानकारी आपको दूं यह किसानों के हितैषी बन रहे हैं, बंगाल में क्या हुआ, 13 लोगों को मार दिया। 13 लोगों को, अब यह शर्म खाए। इनके पास में क्या है कहने को, अरे, 13 लोगों के हत्यारों आप बंगाल में देखो नंद गांव में क्या स्थिति बनी है। वहां पर निर्दोष किसानों को, जो जमीन पर कब्जा करने के लिए गये उनको आपने भून दिया, बहुत घायल है, यह आपके लिए शर्म की बात है। आप क्या बोलेंगे, आपके पास बोलने के लिए कुछ नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्रीजी से एक निवेदन करूंगा, आपने सबको छूट दी है, कर प्रस्ताव में भी बहुत रियायत आपने दी है। एक वो खटिया, पाइप से खाट बनाता है और उसमें निवार बांधता है, वह खाट बनती है, मैं आपसे उन कामगारों की तरफ से निवेदन करूंगा कि उस खाट को यदि आप 4 प्रतिशत पर कर सके क्योंकि वह पाइप 4 प्रतिशत पर है और निवार फ्री है निवार पर वैट नहीं है और निवार बांधकर खटिया तैयार करता है जिसकी कीमत 400-500 रुपये है, चाहे कीमत के आधार पर ही सही 500 रुपये की कीमत से कम कीमत की खाट हो उसको यदि आप 4 प्रतिशत कर सकें तो मैं बहुत उपकार मानूंगा। वह मजदूर भी आप पर बहुत मेहरबान हो जाएगा, बहुत खुश हो जाएगा। मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा आप कृपया उस पर मेहरबानी करने की कृपा करें।

(श्री मदन राठौड़)

अध्यक्ष महोदय, आपने बहुत चिंता की है, आपने यह भी चिंता की है कि यदि कोई बेरोजगार इंजीनियर है, बेरोजगार इंजीनियर है तो उसको दस लाख तक का ठेका बिना टेण्डर के देने की घोषणा की, यह कम बात नहीं है। शिक्षा के मामले में, अध्यक्ष महोदय, मेरे पास बहुत कुछ है बोलने के लिए, मैं दो घंटे बोल सकता हूं लेकिन अब आपने समय की घंटी बजा दी। मैं आपसे एक निवेदन करूं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : बात हो गई, कनक्लूड करें। अब आप कनक्लूड करें।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के बारे में बताना चाहूंगा। हमारे शिक्षा मंत्री ने रिकार्ड कायम किया है। इतनी स्कूलें खोल दीं, इतने मास्टर लगा दिये। अभी और 1500 स्कूल खोलने वाले हैं। यह आपने अपनी जिंदगी में नहीं खोली। आपने अपने जीवन में भी कभी कल्पना नहीं की। इतनी स्कूलें खोल दी। इतनी सैकण्डरी, सीनियर सैकण्डरी, कितने कमरे बना दिये, कितनी स्कूले बना दी आपने बहुत कुछ काम कर लिया।

अध्यक्ष महोदय, बुजुर्गों की किसने चिंता की है, ओल्ड एज होम्स के लिए इन्होंने प्रशिक्षण केन्द्र बनाना शुरू किया..(व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया (गृह मंत्री) : बैटरी बैठ गई है...(व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : अध्यक्ष महोदय, केन्द्र ने क्या किया, केन्द्र ने बहुत धोखा देने की कोशिश की। कांग्रेस सरकार ने धोखा देने की बहुत कोशिश की है। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, उन्होंने एपीएल का गेहूं काटा। केन्द्र सरकार ने एपीएल का गेहूं काटा, बीपीएल की संख्या कम की लेकिन मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की कि चाहे राजस्थान के फण्ड से लेकिन बीपीएल को पहले की तरह राहत मिलती रहेगी, यह है बीपीएल की चिंता। गरीबी की जीवन रेखा से नीचे जीवन जीने वालों की चिंता, महान व्यक्तित्व ने की है। आप इसकी तो पूजा करो। क्या आरोप लगाते हो हम पर, आपको भी पूजा करनी चाहिये। साक्षात लक्ष्मी मानकर पूजा करो। यह मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य सेवा को समर्पित हैं। यह मालिक बनने की कोशिश नहीं कर रहे, यह जनसेवक बनकर सेवा में लगे हुए हैं, यह काम यह कर रहे हैं, यह आपके ध्यान में आने की बात है। आपने राजा बनने की कोशिश की, तो आपको पुनर्मूषको भव: और धरती दिखा दी।

(श्री मदन राठौड़)

अब आप इतने भी नहीं आओगे मानकर चलो। मैं यहां पर घोषणा करके जा रहा हूं आप गिनती के आये हो, अगली बार सिमट करके पांच भी नहीं आ पाओगे यह मानकर चलिये।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, समाप्त कीजिए।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : यह स्थिति आपकी होने वाली है

श्री अध्यक्ष : बोलने वाले और भी बहुत हैं। माननीय मुख्य मंत्रीजी पांच बजे बोलना चाहती हैं। अब आप कृपया समाप्त करें।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : आपने मुझे अवसर दिया इसके लिए मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्रीजी, मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य और सत्ता पक्ष के सभी विधायकों का बहुत-बहुत आभार, अभिनंदन करना चाहूंगा।

श्री अध्यक्ष : आप समाप्त कीजिए।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : इन्होंने बहुत-बहुत सहयोग दिया। बहुत ताकत दी। मुख्य मंत्रीजी को फ्री हैण्ड दिया, मुख्य मंत्रीजी को पूरी ताकत दी कि आप करिये और जनता की सेवा करो, जनता का आर्शीवाद लूटो।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त कीजिए।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : और जनहित में आप नाम रोशन करो। सौभाग्य से मुख्य मंत्रीजी का जन्मदिन भी इसी दरमियान आया। मैं आपके माध्यम से...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त कीजिए।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर) : मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्रीजी को बधाई देना चाहूंगा कि आपने हिन्दुस्तान में तो नाम रोशन किया है, दुनिया में भी आप नाम रोशन करो। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री रामप्रताप कासनिया।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : अध्यक्ष महोदय, जब से माननीय मुख्य मंत्रीजी ने इस विधान सभा के अंदर तीसरा बजट पेश किया है इस बजट के बारे में मैं जितनी प्रशंसा करूं, बहुत ही कम है। यह चौथा बजट है। अध्यक्ष महोदय, इस बजट में, मैं रिपिटेशन नहीं करूंगा, मेरा आग्रह है कि

(श्री रामप्रताप कासनिया)

इस बजट में किसी भी मद में चाहे कृषि हो, चाहे सिंचाई हो, चाहे पीडब्ल्यूडी हो, चाहे पीएचइडी हो, चाहे समाज कल्याण हो, यानि कोई भी विभाग ऐसा नहीं जिसमें छूट नहीं दी हो। हर वर्ग इसमें प्रोत्साहित हुआ है। हर वर्ग को काम मिला है। बेरोजगार को काम मिला है। शिक्षा को बढ़ावा मिला है।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि देवता ने पर्चे देने में कोई कमी नहीं रखी है, अब कमी है तो पुजारियों की है। पुजारियों का काम प्रचार करना है और पुजारी अगर प्रचार...(व्यवधन)

श्री अध्यक्ष : यह क्या है पोगापंथी? (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : पुजारी अगर प्रचार करेंगे तो मंदिर बना रहेगा और अगर पुजारी प्रचार नहीं करेंगे तो देवता को पूजने वाले बहुत लोग बैठे है, मैं यह कहना चाहता हूं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी

अध्यक्ष महोदय, मोटे रूप में इस बजट के अन्दर किसी भी तरह की कोई त्रुटि नहीं है। अगर आज के दिन जरुरत है तो मुख्य मंत्रीजी काश्तकारों को कुछ देने की सोच रही थीं उसकी भनक विपक्ष को लग गयी। उस भनक के कारण से यह सारा विपक्ष जिस तरह का, अगर काश्तकारों का हितैषी है विपक्ष को इसके अन्दर जो त्रुटियां हैं, वह सुझाव देना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि प्राकृतिक प्रकोप से जो फसल नष्ट होती है, उसमें काश्तकार की कई जिंसें ऐसी हैं जो इसमें सम्मिलित नहीं हैं, जैसे जीरा, धनिया। मैं एक-एक फसल का नाम नहीं लूंगा। अध्यक्ष महोदय, मेरा आपके माध्यम से सरकार से यही निवेदन है कि काश्तकार जो भी चीज पैदा करता है, खेत में उन सबको इसमें सम्मिलित करना चाहिए और मुआवजा मिलना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, इसमें एक कमी और है। मुआवजे की पर्सेण्टेज तय करती है सरकार, वह केन्द्र की जो गाइड-लाइन है, उसको सरकार छोड़ दे तो बढ़िया है। उसमें कुछ नहीं है। मोटे रूप में गांव को इकाई मानकर जो खराबे की प्रतिशत निकाली जाती है, उससे जिन काश्तकारों के खेत में नुकसान हो जाता है, वह वंचित रह जाते हैं मुआवजे से। अध्यक्ष महोदय, खेत को इकाई मानकर करश्तकार को मुआवजा देना चाहिए। दूसरा, अध्यक्ष महोदय, सिंचित एरिये में आपको पता है...।

श्री अध्यक्ष : माइक पर तो रहम करो। नैनवां से आने वाले माननीय सदस्य, माइक पर तो रहम करो।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : अध्यक्ष महोदय, सिंचित एरिये के अन्दर चक को इकाई मानकर के जो खराबे की गिरदावरी करवाई जाती है वह भी सही नहीं है। एक चक में 40 मुरब्बे जमीन है और 10 मुरब्बे में फसल पूर्णतया नष्ट हो गयी, वह फसल जो है खराबा प्रतिशत दर्ज करने में पूरे चक का रकबा काउण्ट करके जो खराबा प्रतिशत निकाला जाता है वह बहुत ही कम हो जाता है जबकि नुकसान पूरा हो गया काश्तकार का। अध्यक्ष महोदय, आपने देखा है जब ओलावृष्टि होती है तो आदमी पास-पास में खड़े हों, एक के ऊपर ओले गिरते हैं, दूसरा उससे वंचित रहता है। इसी तरह से काश्तकार के खेत की हालत है। तो मेरा आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह है कि इस के अन्दर जो त्रुटि है इसका सुधार किया जाए।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात सदन के मार्फत सभी माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहूंगा कि अगर आज राजस्थान में चिन्ता करने की आवश्यकता है तो दिन-प्रतिदिन जो जनसंख्या बढ़ रही है और इससे जनसंख्या का जब तक, चाहे हिन्दुस्तान सरकार हो, चाहे कोई भी सरकार हो, कितना भी विकास कर लो, किसी न किसी सरकार को आगे आकर के यह ऐतिहासिक फैसला करना पड़ेगा, अगर इस देश को खुशहाल करना है तो 1977 से मत घबराओ। कोई न कोई सरकार आगे आकर के, और मैं तो यह भी निवेदन करना चाहूंगा अध्यक्ष महोदय कि शोर-शराबा, नारेबाजी करने के बजाय हमको एक संकल्प पारित करना चाहिए इस विधान सभा में और केन्द्र को भेजना चाहिए कि पूरे देश के अन्दर एक बच्चे का नियम लागू करो। अगर इस देश को खुशहाल करना चाहते हो तो यह कार्य भी करना पड़ेगा। अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि काश्तकारों के नाम से पिछले 55 वर्षों से लगातार घड़ियाली आंसू बहाये जा रहे हैं और एक फूटी कौड़ी काश्तकार को उपलब्ध नहीं करवाने वालों से मैं आग्रह करना चाहूंगा कि आपने कभी भी काश्तकारों की मदद नहीं की और अब वह समय आ गया है, मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि चाहे हिन्दुस्तान सरकार हो, चाहे कोई राज्य की सरकार हो, कातश्कारों को अब अतिवृष्टि के मुआवजे से अगर वंचित करेंगे तो पूरे देश के अन्दर हाहाकार मच जाएगा। अध्यक्ष महोदय, मैं

(श्री रामप्रताप कासनिया)

मुख्य मंत्रीजी को तो धन्यवाद देना चाहूंगा कि इन्होंने सरकार में आने के बाद, यह सही है, मैं कोई चापलूसी नहीं कर रहा हूं। जो सच्चाई है, वही बखान कर रहा हूं। मैं यह भी चैलेंज करना चाहूंगा कि आप अगर सरकार में रहना चाहते हो, संख्या बढ़ाना चाहते हो तो आप केन्द्र से 5 हजार रुपये प्रति बीघा काश्तकार को दिलाओ। मैं तो आपकी वाह-वाही करने के लिये तैयार हूं। आप एक तरफा बात कर रहे हो। आज हमारे राज्य की जो माली हालत है वह आपसे छिपी हुई नहीं है। फिर भी मैं ऐसा मानकर चलता हूं कि आज तक राजस्थान में किसी ने सहायता नहीं दी और मुख्य मंत्रीजी हर हालत में सहायता देंगी। ऐसा मेरा मानना है। ऐसी मेरी सोच है। इसकी भनक आपको लग गयी। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा निरन्तर नारेबाजी)

मैं कोई चमचागीरी नहीं कर रहा हूं। मैं अभी घोषणा करता हूं कि आप केन्द्र सरकार से 5 हजार रुपये बीघा बंधवाओ और मैं अभी चमचागीरी आपकी करना शुरू कर देता हूं। मुझे किसी की चमचागीरी की जरुरत नहीं है। राजस्थान के काश्तकारों का जो नुकसान हुआ है उसकी जो भरपाई करने में जो सहयोग करेगा उसका मैं साथी हूं। आपके पास अब सरकार है नहीं, जब सरकार थी, तब तो आपको चिन्ता नहीं लगी कि काश्तकारों को मुआवजा देना चाहिए। ठीक है, पीड़ा आपके है, पीड़ा हमारे भी है। काश्तकारों का नुकसान हुआ है, इसमें कोई दो राय नहीं है। परन्तु इसको राजनीतिक रूप देना बहुत गलत बात है। अध्यक्ष महोदय, प्रेस में आ जायेगा, मीडिया में आ जायेगा। इसके सिवाय कुछ नहीं है। अगर प्रेस और मीडिया में यह शोर-शराबा नहीं छपे तो मैं यह बात भी दावे के साथ कह सकता हूं कि विधान सभा ओर लोकसभा में कोई शोर-शराबा नहीं होगा। जो व्यक्ति विधान सभा और लोकसभा के नियम का उल्लंघन करता है उसकी बात प्रेस और मीडिया में कहीं नहीं आये तो यह राजस्थान की विधान सभा तो क्या, हिन्दुस्तान की विधान सभाओं को भी सांप सूंघ जायेगा, कोई शोर-शराबा नहीं होगा। अध्यक्ष महोदय, यहां मैं यह भी कहना चाहूंगा, अब इसको आप चाहे चमचागीरी कह दो, जिस घर का मुखिया नौजवान हो और उस घर के सदस्य मुखिया के कहने पर चलेंगे तो उस घर में अध्यक्ष महोदय, कभी भी दरिद्रता नहीं आयेगी। वह घर हमेशा खुशहाल रहेगा। तो हमारी सरकार का मुखिया नौजवान है, काम करने में

(श्री रामप्रताप कासनिया)

किसी भी तरह की कमी नहीं रहेगी। दिन-रात समय देने में कोई कंजूसी नहीं होगी। मैं फिर अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कहना चाहूंगा, प्रतिपक्ष के साथियों से कि भगवान के लिये एक बात तो मेरे कहने से कर दे। मैं तो बीच का आदमी हूं।

अध्यक्ष महोदय, मैं प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों से इतना निवेदन करना चाहूंगा कि डाइरेक्ट तो हिम्मत नहीं है पर सदन के माध्यम से एक संकल्प पारित तो करवाना चाहिए सर्वसम्मति से केन्द्र सरकार को भेजना चाहिए कि राज्य सरकार की माली हालत को देखते हुए जितना नुकसान हुआ है उसकी भरपाई करने के लिये कम से कम 2 हजार रुपये बीघा एक्स्ट्रा केन्द्र सरकार उपलब्ध करवाये। ऐसा एक संकल्प पारित कराओ तब तो मैं मानूंगा आप काश्तकारों के हितैषी हो। अन्यथा क्यों घड़ियाली आंसू।

एक माननीय सदस्य : दो हजार करोड़?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : दो हजार बीघे के बोले हैं मैंने। मैं इतना अनपढ़ भी नहीं हूं, आप चिन्ता मत करो। मोटी सी बात, 2 हजार रुपये अगर केन्द्र सरकार देती है तो, प्रति बीघा ही तो कहा है और क्या है, बाकी राजस्थान सरकार, चमचागीरी की, मैं अभी एक बात कह रहा हूं कि आप केन्द्र सरकार से 5 हजार रुपये दिलवा दो, मैं अभी सदन से इस्तीफा देने के लिये तैयार हूं, किसी की चमचागीरी नहीं करूंगा। आप अगर 5 हजार रुपये प्रति बीघा मुआवजा दिलवा दो केन्द्र से तो मैं इस्तीफा दे दूंगा, अभी इसी वक्त, एक मिनट में।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा निरन्तर नारेबाजी)

चमचागीरी तो तब होती है न जब कोई चमचागीरी करवा कर कोई काम करे। कोई दो नम्बर का धंधा निकलवाये। आपके दिमाग में चमचागीरी, लोग बरबाद हो गये और आप बिलकुल ही गम्भीरता से बात नहीं कर रहे हो।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस बात को राजस्थान की जनता देख रही है। पीड़ा सबके मन में है। मैं यह भी नहीं कहता कि आपके मन में पीड़ा नहीं है पर आप राजनीति कर रहे हो। यह मुझे पीड़ा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मोटे रूप में शिक्षा के मामले में सरकार ने स्कूल खोलने में कोई कंजूसी नहीं की। बेरोज़गारों को रोजगार देने में कोई कमी नहीं छोड़ी। सिंचाई के मामले में

(श्री रामप्रताप कासनिया)

भी, एक-एक काम का मैं बखान करने लग जाऊं तो माननीय अध्यक्ष महोदय, रिपीटिशन हो जाएगा। मोटे रूप में मेरा तो आपके माध्यम से एक निवेदन और है कि माननीय अध्यक्ष महोदय, इस देश में गांव और शहर के बीच में जो खाई पनपी है उस खाई को दूर करने का काम इस सरकार ने काफी हद तक ठीक किया है परन्तु माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले 55 साल से कुएं में भांग पड़ी हुई है। खाली नारे देकर वोट बैंक से जीत-जीत कर सरकार बनाना, यह कोई खास बात नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय, खास बात यह है कि बिना कोई कर लगाये, बिना कोई जनता पर बोझ डाले हुए इस तरह का बजट पेश करना, इसकी तारीफ नहीं करें तो क्या आलोचना करें और आलोचना करें तो जनता हमें जूते नहीं मारेगी? अगर कोई सही काम करने वाले को आप प्रोत्साहित नहीं करोगे और उसकी तारीफ नहीं करोगे तो काम करने वाला माननीय अध्यक्ष महोदय, भविष्य में नहीं करेगा। आज हम, जो सरकार ने काम किया है, उसकी तारीफ, खुले मन से विपक्ष को भी करनी चाहिए। इसमें कंजूसी नहीं करनी चाहिए। जनता को एक-एक बात का पता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं फिर आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा, हर बात को रिपीट करना उचित नहीं है। एक नया सुझाव मैं आपके माध्यम से सरकार को देना चाहूंगा माननीय अध्यक्ष महोदय कि राजस्थान के अन्दर जो डेजर्ट बढ़ता जा रहा है। टिब्बा को स्थिरीकरण करने के लिए हमने करोड़ों-करोड़ों रुपये खर्च कर दिया और आज हालत क्या है? रेगिस्तान बढ़ता जा रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान के अन्दर जहां भी रेगिस्तान के अन्दर धोरों की जमीन है, उस जमीन के अन्दर सरकार चाहे सब्सिडी दे, चाहे किसी रूप में काश्तकार को प्रोत्साहित करे, फोग जो है, राजस्थान के रेगिस्तान की जीविका है और फोग, माननीय अध्यक्ष महोदय, आप तो इस बात से परिचित हो कि रेतीली जमीन में एक बार फोग पनप गया तो उससे ऊंट को चारा मिलता है, भेड़ को चारा मिलता है, बकरी को चारा मिलता है, भैंस को चारा मिलता है और इसके साथ-साथ खेजड़ी और फोग दो चीज राजस्थान में लगाने के लिए काश्तकार को आप कोई सहायता, चाहे सब्सिडी उपलब्ध करवा दो, चाहे डेमोस्ट्रेशन के माध्यम से एक-एक गांव में 100 या 200 बीघा टिब्बों के ऊपर आप फोग और खेजड़ी डेमोस्ट्रेशन के तौर पर लगाकर सरकार दिखाएगी तो प्रत्यक्ष में

(श्री रामप्रताप कासनिया)

प्रमाण की जरूरत नहीं है। काश्तकार अपने आप देखेंगे, माननीय अध्यक्ष महोदय, उसमें एक तो राजस्थान से जो हरियाली नष्ट हो रही है वनों की जो अवैध कटाई हो रही है, उसके ऊपर भी रोक लगेगी। रोक इस तरह से लगेगी कि फोग जो है वह जलाऊ लकड़ी भी है। पूर्व में हम फोग की लकड़ी गांवों में जलाते थे। यह बात शायद कुछ लोगों को, मेरी दाईं साइड वालों को तो पता ही नहीं है, यह फोग क्या चीज है तो मैं सरकार से आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि इसमें कोई बहुत बड़ा खर्चा आने वाला नहीं है और अन्त में, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चाहूंगा कि राजस्थान सरकार का कर के रूप में, बिक्री कर के रूप में व्यापारियों से जो रुपया वसूल करना है उसका एग्जैक्ट फिगर तो मेरे को पता नहीं है पर 11 मार्च की राजस्थान पत्रिका में मैंने पढ़ा था कि 2200 करोड़ रुपये बकाया है व्यापारियों की तरफ, ज्यादातर 90 परसेंट और माननीय अध्यक्ष महोदय, उसके अन्दर व्यापारियों ने, कोई कर अपनी जेब से जमा नहीं करवाता व्यापारी, माननीय अध्यक्ष महोदय, 10 वर्ष पहले ही यह व्यापारियों ने कर जो है वह उपभोक्ताओं से वसूल कर लिया। व्यापारी कर कभी भी अपने घर से नहीं देता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकारी मशीनरी के कारण से राज्य सरकार का करोड़ों रुपया जो बकाया पड़ा है, वह सख्ती से वसूल करके और माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगा कि इतिहास रच जाएगा अगर वह बकाया राशि आप सख्ती से वसूल करके काश्तकारों को अगर मुआवजा देने का काम करोगे तो मैं यह बात दावे के साथ कह सकता हूं कि आप हमेशा ही बाईं साइड में रहोगे। यह मैं राजस्थान की जनता के भरोसे से कहना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और आपको भगवान बनाये रखे, इसी तरह से शोर मचाने के लिए, यह मैं भगवान से दुआ करता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री सांगसिंह भाटी।

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे शेर ए राजस्थान मुख्य मंत्री वसुन्धरा राजे सिन्धिया ने जो इस बार बजट पेश किया है, चाहे वह खेत में बैठा है किसान, चाहे वह कहीं मजदूरी कर रहा है, चाहे वह ठेला चला रहा है, हर वर्ग को ध्यान में रखते हुए जो माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने बजट पेश किया है उस बजट की पूरे राजस्थान में, एक-एक घर में

(श्री सांगसिंह भाटी)

प्रशंसा हुई है और यह प्रतिपक्ष बुरी तरह से तिल-मिला गया है। उनके पास में न तो कोई किसानों का मुद्दा है, न कोई काश्तकार की पीड़ा है। हकीकत यह है कि यह बजट पेश होने के बाद में यह बौखला चुके हैं। यह बजट पेश होने के बाद जबरदस्त बौखला चुके हैं। इनके पास कोई मुद्दा नहीं रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्री महोदय को धन्यवाद देना चाहूंगा। काश्तकारों की पीड़ा अगर इनको होती, किसानों की अगर पीड़ा होती तो काश्तकारों के खालों के कवरिंग के लिए, काश्तकारों के खालों की कच्ची शाखाओं पर इनके राज में इन खालों की कवरिंग करवाते। काश्तकारों के लिए बजट में खालों की घोषणा करवाते लेकिन हमारी शेर ए मुख्य मंत्री ने इस बजट में गरीब काश्तकार के खालों की कवरिंग के लिए जो बजट में घोषणा की है, उसकी मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। पहली बार अगर किसान की, टेल पर बैठा हुआ काश्तकार, आखिरी किनारे पर बैठा हुआ काश्तकार, उसके खालों की अगर घोषणा की है और उस किसान की अगर पीड़ा किसी मुख्य मंत्री ने की है तो वसुन्धरा राजे सिन्धिया ने पीड़ा की है और काश्तकारों के हित में बजट की घोषणा की है। आप करवा देते अपने शासन में।

दूसरी बात, माननीय अध्यक्ष महोदय, आज यहां काश्तकारों के हित की बात कर रहे हैं। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि काश्तकार के कृषि कनेक्शन, अगर एक काश्तकार का खेत कृषि कनेक्शन के लिए अगर एक किलोमीटर दूर है तो पर पिलर पैसे यह लूटते थे। एक-एक काश्तकार से लाख-लाख रुपये, दो-दो लाख रुपये वह पीड़ा इनको नहीं हुई। हमारी सरकार आयी। शेर ए मुख्य मंत्री वसुन्धरा राजे सिन्धिया ने काश्तकारों का खेत, अगर जो पांच किलोमीटर है तो 50000 से 55000 रुपये नहीं लगे, वह काश्तकार अपनी ट्यूबवैल में ले जाकर कनेक्शन कर सकता है और तो और आपके शासन काल में कृषि कनेक्शनों के लिए हमारे काश्तकारों के कितने कनेक्शन पेंडिंग पड़े थे पूरे राजस्थान में? मैं धन्यवाद देना चाहता हूं काश्तकारों के माध्यम से, पूरे राजस्थान के किसानों की तरफ से शेर ए मुख्य मंत्री, आपके आने के बाद काश्तकारों के सारे के सारे कनेक्शन हुए। आज की तारीख में कोई मामूली कनेक्शन बकाया है। सारे काश्तकारों के खेतों में कनेक्शन हुए।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा भारी नारेबाजी व शोरगुल जारी)

(श्री सांगसिंह भाटी)

उन लोगों के सारे के सारे कनेक्शन, आज की तारीख में जो बकाया कनेक्शन थे, सारे किसानों के खेतों में कनेक्शन हुए। यह कौन से किसानों की पीड़ा लेकर बैठे हो आप?

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से हमारे मुख्य मंत्रीजी को बाड़मेर और जैसलमेर जिलों को आपके प्रयासों से आपने लगातार तीन साल तक केन्द्र सरकार से प्रयास किया और बेरोजगार लोगों को रोजगार गारन्टी में पिछड़े लोगों को जोड़ा, उसके लिये जैसलमेर, बाड़मेर और सारी जनता की तरफ से मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि यह सारा श्रेय आपको जाता है। जो आपने प्रयास किये जैसलमेर और बाड़मेर जिलों को आपने रोजगार गारन्टी योजना से जोड़कर बहुत बड़ी राहत दी है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं राजस्थान सरकार को यह भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि हमारा बाड़मेर जिला शिक्षा में सदियों से पिछड़ा हुआ रहा। शिक्षा में प्रगति के लिये मैं शिक्षा मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं बहुत-बहुत साधुवाद देना चाहता हूं जिन्होंने तीन वर्षों में 125 प्राइमरी से अपर प्राइमरी स्कूलों को क्रमोन्नत करके बच्चों को शिक्षा से जोड़ा। तीन सालों में आपने 11 हायर सैकण्डरी स्कूलें दीं। तीन सालों में चार सैकण्डरी स्कूलें दीं और इन स्कूलों के साथ-साथ माननीय मुख्य मंत्री महोदया, आपने पोकरण में महाविद्यालय खोलकर पूरी जैसलमेर की जनता को राहत दी है। यह पीड़ा कर रहे हैं काश्तकारों की। सबसे ज्यादा अगर शासन रहा तो वह कांग्रेस का शासन रहा। चालीस साल तक आपने शासन किया और जनता को आपने दिया क्या ? पानी के लिये जनता तरस रही है, शिक्षा के लिये जनता तरस रही है और आपने 40 साल तक खाली पत्थर लगाकर आपने उदघाटन किये, विकास नाम की कहीं चीज नहीं की, यह काम किये हैं। आप किसकी बात कर रहे हो ? हमारे जैसलमेर जिलों में तीन सालों में विकास की गंगा बहाई माननीय वसुन्धरा राजे सिंधिया जी ने । मैं दावे के साथ कह सकता हूं आज की तारीख में जो आपने बजट पेश किया है हर घर के अंदर, हर गांव के अंदर और इनके खुद के घरों में औरतें कह रही हैं डूब मरो, ऐसा बजट कभी आया नहीं। आप ला भी नहीं सकते हो। इसलिए आप बौखला गये।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

(श्री सांगसिंह भाटी)

आप यह सोचिये कि अगर आपको काश्तकारों की पीड़ा होती, आपको किसानों की पीड़ा होती तो मुख्य मंत्री महोदया घोषणा करना चाहती हैं, लेकिन आप बौखला गये। इस वक्त आप बौखला चुके हो। ..(व्यवधान).. आप हो, यह सरेआम बैठे हैं कसाई तो।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक और निवेदन करना चाहता हूं जो यह काश्तकार के हित की बातें करते हैं, गरीब के हित की बात करते हैं, सबसे बड़े कसाई तो आप हो। सबसे बड़े अगर गरीब के कसाई हो तो आपसे बढ़कर कोई कसाई हो नहीं सकता। इसका उदाहरण है कि बी पी एल परिवार का गेहूं आप केन्द्र सरकार से ला नहीं सकते। बी पी एल परिवारों का गेहूं केन्द्र सरकार ने बंद कर दिया। आपसे बढ़कर कसाई कौन होगा ?

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, तीन सालों में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकाल में स्वास्थ्य विभाग में काफी उन्नति हुई। मैं स्वास्थ्य मंत्रीजी को और मुख्य मंत्रीजी को निवेदन करना चाहूंगा, धन्यवाद देना चाहूंगा कि पहली बार आजादी से लेकर आज दिन तक जैसलमेर जिले में 127 नर्सों की नियुक्ति पहली बार हुई है, राजस्थान में हुई है, तो इसके साथ-साथ हास्पिटल क्रमोन्नत हुए। 127 नर्सों की नियुक्ति पहली बार हुई है जैसलमेर जिले में, आप क्या बात कर रहे हो ? उप स्वास्थ्य केन्द्रों को क्रमोन्नत किया, हास्पिटलों को क्रमोन्नत किया और कम से कम जैसलमेर जिले में 6 करोड़ रुपये का बजट हास्पिटलों के अंदर मुख्य मंत्री महोदया ने दिया। इससे पूरे जैसलमेर जिले की जनता आज खुश है। आपके पास रहा क्या है ? हो-हल्ला के अलावा कुछ रहा भी नहीं। अब सुनने का माद्दा रखो।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदया, पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री को और राठौड़ी राजा को भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने जैसलमेर जिले को रोडों में नम्बर वन रखा और हजारों गांवों को आपने रोडों से जोड़ दिया, उसके लिये मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद और साधुवाद देना चाहता हूं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

श्री हीरालाल (निवाई) : पानी पी आओ, पानी पी आओ।

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर) : आप पानी पी आओ जाकर। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से रेवेन्यु मंत्री, उपनिवेशन मंत्री को भी मेरी तरफ से और जैसलमेर जिले की तरफ से धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने पहली बार 64 हजार भूमिहीनों के फार्म भरवाकर भूमिहीनों, बेरोजगारों के फार्म भरवाकर भूमि अलाटमेंट की जो शुरुआत की है, उसके लिये भी मैं आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करना चाहता हूं और बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे एक बात कहते हुए खेद होता है कि आज से तीन-चार दिन पहले चूरू जिले और सरदारशहर से मांग उठी कि पीने के पानी की व्यवस्था नहीं है। पानी हम पी नहीं सकते तो मुझे अफसोस है कि सरदारशहर में कितने वर्षों तक सिंचाई मंत्री सरदारशहर के रहे, सरकार में मैन पदों पर रहे, लेकिन आप जनता को पानी पिला नहीं सके। कई दफा कैबिनेट मंत्री रहे लेकिन जनता को पानी पिला नहीं सके। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्री महोदया से निवेदन करूंगा कि ये तो कितने भी पदों पर रहे, चाहे कुछ भी किया, यह पानी नहीं पिला सके। लेकिन माननीय मुख्य मंत्री महोदया व्यवस्था कर देंगी, आप चिन्ता मत करना। मुझे बोलने का जो समय दिया, उसके लिये अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : श्री हरिसिंह रावत।

श्री हरीसिंह रावत (भीम) : अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा में मैं पहली बार विधायक चुनकर आया हूं और आने के बाद यह चौथा बजट भाषण है और इस बजट को पढ़कर, सुनकर यह महसूस कर रहा हूं कि मैंने भारतीय जनता पार्टी में आकर विधायक बना और आज विधायक बनने के बाद हमारी सरकार ने जो बजट पेश किया है, उससे हमारे विपक्ष के मुंह उतर गये हैं। इनके पास बात करने के लिये, जवाब देने के लिये कोई मुद्दा नहीं है। न इनके पास कोई तथ्य है। तथ्यहीन बात करके जब से हमारी विधान सभा शुरू हुई है तब से आज दिन तक इन व्यक्तियों ने कभी जनता की सुध नहीं ली, कभी किसानों की सुध नहीं ली। लेकिन विकास रूपी आयाम प्रस्तुत करने वाला जो बजट पेश हुआ है, इसको कैसे विध्वंस करे, कैसे हम केवल हाय-हाय के नारे लगायें, इसी तक सीमित हैं।

(श्री हरिसिंह रावत)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

अध्यक्ष महोदय, आज मैं आपको जो कुछ ठोस निर्णय लिये हैं, वह बताना चाहता हूं कि आज हमारे देश की 100 में से 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है और गांवों के विकास के लिये जो हमारे मुख्य मंत्री हैं, उन्होंने जो आयाम कायम किये हैं, यह हमारे लिये एक बहुत बड़ी उपलब्धि है कि सबसे पहले हमारे गरीब भाइयों के लिये कई नई योजनाएं बनाई हैं, क्योंकि सबसे गरीब जनता गांवों में रहती है। गांवों के विकास के लिए जो-जो सरकार ने हमारी योजना बनायी है यह तारीफ के काबिल हैं। आज यह तारीफ के काबिल के वजह से ना तो इनके पास कोई बात करने का मुद्दा है केवल हाहाकार और विघ्न डालने के अलावा इनके पास कोई रास्ता नहीं है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

अध्यक्ष महोदय, आज अगर विकासशील या विकसित देश बनाना है तो उसमें हमें चार चीजों की जरूरत होती है, शिक्षा, सड़क, विद्युत और पानी। अध्यक्ष महोदय, आज शिक्षा के मामले में शिक्षा मंत्रीजी, भाई तिवाड़ी साहब का धन्यवाद देना चाहता हूं कि हमारे शिक्षा जगत में एक वो आयाम कायम किया है, आज वो ही आयाम कायम करने की वजह से आज हमारे राज्य को यूनेस्को अवार्ड मिला है, आज मैं इनको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि आज इनकी वजह से हमारे देश में, हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व में हमारे राजस्थान का नाम हुआ है। शिक्षा के नाम पर हमारा राज्य हमेशा पिछड़ा रहता था लेकिन आज हमें मालूम है कि पूर्व में जो कांग्रेस सरकार थी इन्होंने भी हमेशा ध्यान तो दिया था शिक्षा की तरफ लेकिन जो ध्यान हमने दिया वो इन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। इन्होंने भी पहले भर्ती करवायी थी पर जो भर्ती कराये थे, कोई गांधी विद्यालय खुलवाया था, गांधी विद्यालय में केवल 1200 रुपये की भर्ती होती थी लेकिन जब हमारी सरकार आयी तो एक लाख शिक्षकों की भर्ती की है और वह शिक्षक भी कोई 1200 रुपये वाले नहीं हैं, जो थर्ड ग्रेड में 6000, 7000 तनख्वाह मिलती है वो हमारे शिक्षक हैं। अध्यक्ष महोदय, आज शिक्षा की दृष्टि से भी हम इतने फलीभूत हुए हैं कि गांव-गांव का बच्चा जो शिक्षा से महरूम था आज शिक्षा के क्षेत्र में जाने के लिए प्रेरित हुआ है। हमारे परिवार के बच्चे हैं, जो पूर्ववर्ती सरकार थी इस

(श्री हरिसिंह रावत)

सरकार ने भी हमारे बच्चों में, जानवरों में और हमारे बच्चों में कभी फर्क नहीं समझा,। इन्होंने भी खाने की व्यवस्था की थी लेकिन खाने में केवल घूघरी, घूघरी का आपको मालूम होना चाहिए कि हमारे गांव में कोई गाय-भैंस ब्याहती है उसको हम घूघरी खिलाते हैं लेकिन हमारी सरकार ने ध्यान दिया और बच्चों के लिए सात दिन का बहुत बढ़िया खाना, जिसमें एक दिन दाल-रोटी और सब्जी-रोटी का मैन्यू बनाया और आज स्वास्थ्य वर्धक खाना हमारे बच्चों को मिल रहा है लेकिन इन्होंने हमारी तरफ कभी ध्यान नहीं दिया।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

अध्यक्ष महोदय, आज मेरा गला ही खराब हो गया है लेकिन ग्रामीण विकास और रोजगार गारंटी के पूर्व में 6 जिलों में सेण्ट्रल सरकार ने दिया लेकिन 6 जिलों में हमारे और भी हमें मिला है तो 12 जिलों में हमारे लोगों को फायदा मिलेगा।

गुरु गोलवलकर जन सहभागिता योजना के अन्दर बारह गुना बारह, उसमें अंशदान 70 परसेंट या 3.75 लाख, जो भी कम हो यही चयनित कम डिस्ट्रिक्ट प्लान में स्वीकृत किये। अंशदान 80 परसेंट या 5 लाख, जो भी कम हो, दीनदयाल उपाध्याय आदर्श ग्राम योजना प्रयोग में 50 पर एवं 128 प्रार्थना-पत्र, अतः 100 और गांव, मगरा और डांग मेवाड़ विकास बोर्ड जोड़ कर हरेक को पांच, पांच करोड़ दिया है। यह हमारे लिए, हमारे गांव के लिए बहुत ही बड़ा विकास होगा। इसका हमारा बोर्ड का गठन भी हुआ हैं।

दूसरा, हमारे गांव की जो बंजर भूमि पड़ी रहती थी उसको भी रतनजोत और उनको शुरू करने के लिए और पौधों के लिए भी निःशुल्क 50 परिवारों को रतनजोत सात रुपये समर्थन मूल्य पर को-आपरेटिव व वन विभाग की भी वन भूमि पर तेल कम्पनियों की खरीद गारंटी पर एक करोड़ पौधे रतनजोत के लगाने का मरू विकास एवं राष्ट्रीय विकास रोजगार कार्यक्रम के तहत एक लाख कार्य अगले वर्ष हाथ में लेने का किया है।

सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम निर्मूल ग्राम पुरस्कार प्राप्त पंचायत को एक लाख रुपये नगद, किसी पंचायत समिति में ऐसी दस पंचायतें आए तो उस पंचायत समिति को पांच लाख रुपये, जिस जिला परिषद में 30 पंचायत आए तो जिला परिषद को 10 लाख रुपये, किसी जिला परिषद में यदि दो पंचायत

(श्री हरिसिंह रावत)

समितियां आए तो जिला परिषद को 50 लाख रुपये प्रोत्साहन देने की घोषणा की है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार जिले के एक-एक प्रतिनिधि का मानदेय बढ़ाया। जिला प्रमुख को 4000 रुपये, प्रधान को 2600, सरपंच को 400 और 600 तथा मीटिंग भत्ता डेढ़ गुना किया।

कृषि के अन्तर्गत, राज्य सरकार कृषि एवं तकनीकी क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार प्रोत्साहन हेतु राजस्थान इनवेन्शन फाउण्डेशन की स्थापना, यह तीन करोड़ की बचत करने का पुरस्कार देगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं बोलना तो बहुत चाहता था, मेरा गला खराब है, आपने समय दिया इसके लिए धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : डा. जालम सिंह रावलोत।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्रीजी ने अपना जो शानदार बजट प्रस्तुत किया, जिसकी प्रशंसा न-केवल राजस्थान में बल्कि भारत के कोने-कोने में हुई है। उसी से घबरा कर, उसी से परेशान होकर के इनको अपने घरों में अपनी पत्नी से भी विरोध का सामना करना पड़ रहा है जिसके फलस्वरूप तीन दिन से किसी प्रकार की बहस नहीं करते हुए सदन के कार्य में व्यवधान डालते हुए लगातार सदन के अमूल्य समय,, राजस्थान का अमूल्य समय, राजस्थान की जनता का पैसा बरबाद करने पर तुले हुए हैं। मैं इसकी कड़ी आलोचना करता हूं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, थक गये होंगे, बैठ जाओ अब तो। आप ओ, ओ, करते थक गये हो, बैठ जाओ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : अध्यक्ष महोदय, कभी प्राकृतिक विपदा ओलावृष्टि के रूप में हुई लेकिन हमारी सरकार ने, हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने ओलाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया, हमारे मंत्रिमण्डल के सदस्यों को सब जिलों में भेजा और उसकी राहत की घोषणा हुई, आज और होने वाली है लेकिन मैं बहुत ही दुःख के साथ कहना चाहता हूं कि हमारे बाड़मेर जिले में,

(श्री जालम सिंह रावलोत)

हमारे जैसलमेर जिले में जो चार महीने पहले बाढ़ आयी थी उस बाढ़ के समय इन लोगों की कैसी करतूतें रही हैं, जिसको भगवान कभी माफ नहीं करेगा। आज इस पवित्र सदन में इनकी कड़ी आलोचना करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : थक गये हो, बैठ जाओ अपने-अपने स्थान पर।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : सोनिया गांधी का दो बार ट्यूर हमारे जैसलमेर और बाड़मेर में हुआ था। एक बार अकाल के समय हुआ था तब हम लोग मिले थे और कहा कि आप राजनीति करने मत आओ, आप राजनीति करने के हिसाब से आ जाती हो लेकिन राजस्थान के लिए एक पैसा आपने दिया नहीं है। एक पैसा आपने दिया नहीं है ... (व्यवधान) ...

श्री अध्यक्ष : आपकी संख्या तो धीरे-धीरे कम हो गयी और आप थक भी गये हो। आपकी संख्या कम हो गयी है, मेरी राय है बैठ जाओ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : लेकिन अकाल के समय सोनिया गांधी, कांग्रेस सरकार ने राजस्थान की अकाल पीड़ित जनता को एक पैसा नहीं दिया लेकिन जब वो बाढ़ पीड़ित कवास और मलवा में आयी थीं उस समय बाड़मेर की जनता ने, बाड़मेर के लोगों ने सोनिया गांधी को घुसने नहीं दिया, सोनिया गांधी का कड़ा विरोध किया। तब कहा था सोनिया गांधीजी ने कि मैं इस बार राजनीति करने नहीं आयी हूं, मैं आपकी जो मांग है 3200 करोड़ रुपये की, जो बाढ़ पीड़ितों के मकान देने के लिए है, बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा देने के लिए है, पशुधन के लिए है, फसलों के लिए है, लेकिन मैं बड़े दुःख के साथ कहना चाहता हूं कि उस 3200 करोड़ रुपये की मांग के पीछे केवल हमारी सरकार को 100 करोड़ रुपये दिये हैं। धिक्कार है इनको, इन्होंने बाढ़ पीड़ितों के लिए एक पैसा नहीं दिया। इसके बावजूद भी मैं राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी को और राजस्थान सरकार को और यहां बैठे हुए माननीय सदस्यों को मंत्रियों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उस विपदा की स्थिति में हमारे सभी एम.एल.ए., एम.पी. और मंत्री अपने पैसों से, अपने खर्चे से ही उस बाढ़ पीड़ित जनता की दो महीने तक सेवा की और लगभग 80 हजार कम्बल, 80 हजार त्रिपाल और दुनियाभर की सामग्री बाढ़ पीड़ितों को राहत के रूप में दी गयी

(श्री जालम सिंह रावलोत)

लेकिन इन्होंने केवल नारे दिये, हंगामा किया, एक पैसा केन्द्र से दिलाया नहीं है। मैं इसकी कड़ी आलोचना करता हूं।

मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसी स्थिति में राजस्थान सरकार ने अकाल पीड़ितों के लिए और बाढ़ पीड़ितों के लिए मकान बना कर दिये हैं, मकान नहीं बंगले बना कर दिये हैं सवा, सवा लाख के बंगले हमारी सरकार ने बना कर के दिये हैं। अभी जो अकाल राहत में आवास योजना घोषित हुई है उस आवास योजना के अन्तर्गत प्रत्येक बाढ़ पीड़ित, प्रत्येक अकाल पीड़ित को बिलकुल इन्दिरा आवास जैसा एक कमरा देने की हमारी मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की है और उसके काम चालू हो गये। ...(व्यवधान) ...

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : आप तो मानते ही नहीं हो। ...(व्यवधान) ...

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : अध्यक्ष महोदय, इस बजट में हमारी युवा शक्ति की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। युवा शक्ति राजस्थान के लिए बहुत इम्पोर्टेंट है, युवाओं को बेरोजगारी भत्ता। इनका राज 45 साल तक रहना, 45 साल के राज में युवाओं के लिए कुछ नहीं किया, बेरोजगारों के लिए कुछ नहीं किया। आज शिक्षित बेरोजगारों को 400 रुपये प्रति माह भत्ता, शिक्षित बेरोजगार बहन और महिलाओं के लिए 500 रुपये भत्ता और विकलांगों शिक्षितों के लिए 600 रुपये मासिक भत्ता ऐसा शानदार काम है जिसको मैं साधुवाद देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे बहुत सारे इन्जीनियर्स इन लोगों की 45 सालों की करतूतों के कारण बेरोजगार हुए, उनके लिए दस लाख तक का बिना टेण्डर के उनको ठेका देना, इसका मैं स्वागत करता हूं, बेरोजगारों को रोजगार मिला। बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, उद्योग और सेवा के लिए शहरों में आते हैं लेकिन उनके रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं है, उनके लिए फ्लैट की व्यवस्था किसी सरकार ने की है तो वसुन्धरा राजेजी की सरकार ने की है और उनको एक फ्लैट बना कर देंगे।

अपना धंधा करेंगे, सेवा करेंगे, मजदूरी करेंगे और रहेंगे। ऐसे बी.पी.एल. धारी लोगों के लिए इन्होंने बी.पी.एल. की सूची को कैन्सिल किया, लगभग तीन लाख लोग जो बी.पी.एल. थे, गरीब थे, अत्यंत गरीब थे उन सबके लिए

(श्री जालम सिंह रावलोत)

हमारी मुख्य मंत्रीजी ने साहस का काम किया और उनको वह सारी सुविधाएं जो केन्द्र ने छीनी वह हमारी मुख्य मंत्रीजी ने उन बी.पी.एल. धारियों को देनें के लिए जो घोषणा की है बजट में मैं उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं, तारीफ करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस बजट में मातृ शक्ति की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। मातृ शक्ति का पचास प्रतिशत हिस्सा है, इस राज्य में मातृ शक्ति के लिए हमारी सरकार ने, मुख्य मंत्रीजी ने जब पद भार गृहण किया था, आपने पहले बजट में इसकी घोषणा की थी। महिला सशक्तीकरण का वह केवल नारा नहीं था, तीन साल में हमने करके दिखाया। बहुत सारी ऐसी महिलाएं थीं जो अपने नाम से सम्पत्ति का हस्तान्तरण करना चाहती थीं तो उसके लिए हस्तान्तरण की जो दर थी उसको पांच प्रतिशत कम किया। इनके जमाने में पांच हजार लोग और हमारे जमाने में सवा लाख लोग। इस साल में केवल एक साल में 2006-07 में सवा लाख महिलाओं के नाम से सम्पत्ति का हस्तान्तरण हुआ। ऐसा शानदार काम इन्होंने नहीं किया हमारी सरकार ने किया।

श्री अध्यक्ष : प्रतिपक्ष के सदस्य गण, आपकी संख्या भी बहुत कम हो गई है और आप थक चुके हो, आपकी संख्या भी कम हो गई है, थक चुके हो आसन का आग्रह है अपने-अपने स्थानों पर बैठ जाओ।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्री जी को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने हमारे राजस्थान के लिए, बाड़मेर के लिए रिफाइनरी की चिन्ता की । रिफाइनरी की बात न केवल बाड़मेर के लिए अपितु पूरे राजस्थान के विकसित राज्यों में लाने की गौरव की बात है। इन्होंने क्या किया, इन्होंने ओएनजीसी के माध्यम से ऐसी शर्तें लगाने की कोशिश की जिससे रिफाइनरी न खुले लेकिन हमारे तगाराम जी के प्रयास से और उनके आशीर्वाद से ....

श्री अध्यक्ष : आवाज ढीली पड़ गई आप लोगों की।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : रिफाइनरी लग के रहेगी क्योंकि माननीय मुख्य मंत्रीजी ने इस हेतु प्रधान मंत्री जी और केन्दीय पैट्रोलियम मंत्री

(श्री जालम सिंह रावलोत)

जी से लगातार बात की है। बड़े दुःख की बात है हमारा पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश, हमारा पड़ोसी राज्य पंजाब वहां तेल नहीं है, वहां किसी भी प्रकार का कच्चा तेल नहीं है लेकिन जब रिफाइनरी की बात हुई तो अटल जी ने बहुत मामूली शब्दों में रिफाइनरी की स्वीकृति दी लेकिन इन लोगों ने छब्बीस हजार करोड़ रुपए रिफाइनरी के माध्यम से ओएनसीजी के माध्यम से जो शर्त रखी है वह ऐसा काला कानून है ऐसा काला अध्याय इनके इतिहास में होगा कि इनकी संख्या जो अभी छप्पन है वह पांच तक सीमित रहेगी। ऐसा मेरा दावा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से हमारे शिक्षा मंत्री जी को हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं, हमारी मुख्य मंत्री को हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं कि शिक्षा के मामले में इन्होंने कुछ नहीं किया। मेरे पास आंकड़े हैं इनके टाइम में एक भी प्राइमरी स्कूल नहीं खुली। हमने हमारे इस तीन साल के राज में लगभग चालीस हजार प्राइमरी स्कूलें खुलीं या क्रमोन्नत हुईं। इनके टाइम में कोई मिडिल स्कूल क्रमोन्नत नहीं हुई, मामूली हुई है, हमने दुनिया भर की मिडिल स्कूलें खोलीं, हमने बड़ी संख्या में सैकण्डरी स्कूलें खोलीं, हमने सीनियर सैकण्डरी खोलीं और इस बार के बजट में भी शिक्षा का जबर्दस्त प्रावधान किया है।

बात रोजगार की आ रही है इन्होंने अपने पांच साल के राज में एक भी नौकरी दी हो तो बताएं, राजस्थान की जनता ने इनको इसलिए नकारा कि इन्होंने पांच साल में एक भी स्थाई नौकरी नहीं दी जबकि हम अब तक सवा लाख लोगों को नौकरी दे चुके हैं और इस बार के बजट में सत्ताइस हजार नौकरियां और देने वाले हैं, तेरह हजार शिक्षकों के रूप में, 7500 ए एन एम के रूप में और जेल कर्मचारी के रूप में, वन प्रहरी के रूप में, सिपहियों के रूप में हम सत्ताइस हजार नौकरियां और देने जा रहे हैं। इस हेतु मैं राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री को साधुवाद देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह तो थक गए हैं, और इनको थकाऊंगा। मैं हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं हमारी मुख्य मंत्रीजी को उन्होंने समाज का जो आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग है उनके लिए आर्थिक पिछड़ा आयोग की घोषणा की है। एससी, एसटी और ओबीसी किसी भी प्रकार के इनके आरक्षण में

(श्री जालम सिंह रावलोत)

छेडछाड़ नहीं करते हुए लेकिन समाज के शेष वर्ग के लिए आरक्षण देने के हिसाब से आर्थिक पिछड़ा आयोग की घोषणा का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं इससे उन गरीबों को और फायदा मिलेगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं स्वास्थ्य के बारे में बता देना चाहता हूं, मेरे पास आंकड़े हैं। इनका राज गया 2003 में, 2001-02, 2002-03 इन तीन साल के राज में चिकित्सा के नाम पर पी एच सी का बिल्डिंग निर्माण जीरो, तीन साल में सी एच सी जीरो, सब सैण्टर जीरो, तीन साल में जीरो, यह मैं नहीं बोल रहा हूं आंकड़े बोल रहे हैं। तीन साल के राज में स्वास्थ्य के नाम पर आपरेशन थिएटर का निर्माण जीरो, जिला चिकित्सालय भवन निर्माण जीरो, सैटेलाइट चिकित्सालय भवन निर्माण जीरो, उप स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना जीरो.....

श्री अध्यक्ष : इस सदन को भोजनालय बना लिया है क्या आपने बानसूर से आने वाले सदस्य ?

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : पी एच सी जीरो और यह आंकड़े हमारे हैं स्वास्थ्य के क्षेत्र में, यह शानदार आंकड़े हमारे हैं सी एच सी का निर्माण हमारे यहां सी एच सी भवन निर्माण किए छह, पी एच सी भवन निर्माण 44 उनका जीरो और हमारा 44, उप स्वास्थ्य भवन निर्माण उनका जीरो और हमारा 454, चिकित्सा भवन निर्माण उनका जीरो और हमारा 40, नर्सिंग आवास गृह उनके जीरो और हमारे 42, ब्लड बैंक निर्माण, जिला चिकित्सालय भवन निर्माण एवं एम्बुलैंस की व्यवस्था 125, सी टी स्कैन मशीन 110, सी एच सी की स्थापना इनके जीरो हमारे 85 और पी एच सी की स्थापना उनके जीरो और हमारे 61 और जो नया बजट आया है ....

श्री अध्यक्ष : आप यहां मत खेलो।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : उस नये बजट में स्वास्थ्य के बारे में यह तो मैंने तीन साल का स्वास्थ्य का बजट रखा है और हमारा जो इस बार का बजट स्वास्थ्य को समर्पित है। हमारे 365 ऐसे हास्पिटल सरकार बनाएगी जो चौबीस घंटे खुले रहेंगे, चौबीस घंटे वहां डाक्टर मिलेंगे, नर्सिंग स्टाफ मिलेगा, उपकरण मिलेंगे और एम्बुलैंस मिलेंगी। स्वास्थ्य चेतना यात्रा, पिछली बार स्वास्थ्य चेतना यात्रा इतनी शानदार रही कि जिसके फलस्वरूप राजस्थान

(श्री जालम सिंह रावलोत)

की गरीब जनता को स्वास्थ्य सेवा उसके घर जाकर मिली है और हमारी मुख्य मंत्रीजी स्वास्थ्य चेतना यात्रा को इस बार और जारी रखना चाहती हैं। मैं इसके लिए मुख्य मंत्रीजी और चिकित्सा मंत्री जी को हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं। इस बार के बजट में सी एच सी पर सौ एम्बुलैंस की व्यवस्था, केवल इस बजट में सौ एम्बुलैंस हैं। इन्होंने पांच साल में एक एम्बुलैंस की व्यवस्था नहीं की। इस बार के बजट में पन्द्रह नई सी एच सी, तीस नई पी एच सी, 130 सब सैण्टर और तो और पैरा मेडिकल स्टाफ की कमी जो बाड़मेर, जैसलमेर में या अन्य ट्राइबल डिस्ट्रिक्ट्स में जो कमी थी उस कमी को दूर करने के लिए वहां के स्थानीय लोगों को प्राथमिकता मिलेगी। मैं इसके लिए हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं पैरा मेडिकल स्टाफ में स्थानीय लोगों की प्राथमिकता, इसके लिए रेगिस्तानी क्षेत्र के जिले और ट्राइबल जिले हमेशा मुख्य मंत्रीजी को, भारतीय जनता पार्टी को हार्दिक साधुवाद देते रहेंगे और इन डिस्ट्रिक्ट्स में जो नर्सिंग सैण्टर्स की स्थापना बाड़मेर, डूंगरपुर, झालावाड़, तीन जगह नर्सिंग सैण्टर की स्थापना की है उसके लिए मैं हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्रीजी ने और शानदार योजना जो दी है स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'डाक्टर आपके द्वार' राजस्थान में चालीस हजार गांव हैं, सब गांवों तक पहुंचाना संभव उनको दिख नहीं रहा था, बहुत सारी सुविधा तीन सालों में की हैं उसके लिए डाक्टर आपके द्वार योजना एक ऐसी शानदार योजना है जो घर-घर जाकर चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराएगी इसके लिए भी 52 एम्बुलैंस की व्यवस्था, 52 टीम्स की व्यवस्था की है जिसके माध्यम से राजस्थान की गरीब जनता का और भला होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से हमारे ग्रामीण क्षेत्र की योजना है जिसके लिए जो मुख्य मंत्रीजी ने काम किया मैं हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं रोजगार गारण्टी योजना, आपको शर्म आनी चाहिए, जो काम केन्द्र से आपको करना चाहिए वह तो आप कराते नहीं हो, रोजगार गारण्टी योजना राजस्थान के सभी तैंतीस जिलों में लागू होनी चाहिए, ऐसी मुख्य मंत्रीजी के साथ आप सहयोग करो और सहयोग नहीं करो तो डूब कर मर जाओ। मैं पुन: कहना चाहता हूं बजट के अन्दर माननीय मुख्य मंत्रीजी ने विपक्ष से आह्वान किया था कि रोजगार गारण्टी योजना पिछली बार छह जिलों

(श्री जालम सिंह रावलोत)

में लागू की और इस रोजगार गारंटी योजना के क्रियान्वयन में हमारा राजस्थान देश भर में नम्बर एक पर आया है। हमने गरीबों की मदद की है। मैं मुख्य मंत्रीजी की अपील में आपसे पुनः आह्वान करना चाहता हूं छह और जिले लिये जैसलमेर, बाड़मेर तो लिया उसके लिये धन्यवाद। राजस्थान के 33 के 33 जिलों का रोजगार गारण्टी में नम्बर लगना चाहिये। आप लोगों को थोड़ी बहुत भी अक्ल है तो वह शामिल कराओ। जो करना होता है वह आप करते नहीं हो। जो करना नहीं है वह करते हो। धिक्कार है आपको, आपकी पार्टी को और आपकी विदेशी महिला नेता को।

मैं दीनदयाल उपाध्याय आदर्श गांव योजना की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। अध्यक्ष महोदय, परम पूज्य गुरु गोलवलकर जी भारत के ऐसे महापुरुष रहे हैं जिन्होंने अपने जीवन में दो बार हिन्दुस्तान के एक-एक गांव को देखा है। उनके नाम से हमारी सरकार ने परम पूज्य गोलवलकर योजना जो लागू की है यह निश्चित रूप से इतनी सफल हुई है जिससे कि राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक सम्पत्तियों का परिसृजन हो रहा है, निर्माण हो रहा है और गरीबों को रोजगार मिल रहा है। मुख्य मंत्रीजी ने इस बार उसके बजट में बारह गुना वृद्धि की है उसके लिये मैं हार्दिक साधुवाद और धन्यवाद देना चाहता हूं।

मैं अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं जिला प्रमुखों और प्रधानों की जो तनख्वाह बढ़ायी है उसके साथ-साथ प्रधानों को गाड़ी कम से कम 15 दिन मिलनी चाहिये। पंचायत समिति के सदस्य और जिला परिषद् के सदस्यों को जो भत्ता दिया जाता है उसमें कुछ राशि बढ़ायी जानी चाहिये।

हमारे प्रतिपक्ष के लोग कहते हैं, कुछ लोगों ने टिप्पणियां की हैं अखबारों के माध्यम से कि यह इन्होंने जो बजट दिया है वह शहरों का बजट है। मैं कहना चाहता हूं कि क्या जो सड़कों का निर्माण हो रहा है वह शहरों में हो रहा है ? यह ढाई सौ की आबादी के गांव में हो रहा है। सड़कें गांव में बन रही हैं। पानी की टंकी गांवों में बन रही है। बिजली के खम्भे गांवों में लग रहे हैं। स्कूलों की बिल्डिंग का निर्माण गांवों में हो रहा है तो यह बजट गांवों को समर्पित है।

(श्री जालम सिंह रावलोत)

मैं आपके माध्यम से हमारे जलदाय मंत्रीजी का हार्दिक स्वागत करना चाहता हूं। उन्होंने बहुत हिम्मत का काम किया है। हमारे यहां बड़ी संख्या में योजनाएं पास की हैं। हैण्ड पम्पस दिये हैं। जी एल आर्स दी हैं। और तो और अचिंहित ढाणियां, अचिंहित बस्तियां जिनमें किसी भी प्रकार की योजना से लोगों को पानी नहीं मिल सकता था इन्होंने 45 साल के राज में पानी पर कुछ काम नहीं किया उनके लिये जलदाय मंत्रीजी, मैं आपको साधुवाद देना चाहता हूं कि आपने अचिंहित ढाणियों और बस्तियों को पानी से जोड़ा है।

अध्यक्ष महोदय, मेरा जिला बाड़मेर है बहुत पिछड़ा हुआ जिला है और बाड़मेर जिला कांग्रेस का गढ़ कहलाता था। इस बार उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को समर्थन दिया। इस बार छह में से पांच हमारे एमएलए हैं। मुख्य मंत्रीजी ने पूरा हमारे बाड़मेर जिले की और कृपा पूर्वक ध्यान दिया है।

अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि बाड़मेर में पानी के नाम पर पिछली सरकार ने एक पैसा खर्च नहीं किया। हमारी मुख्य मंत्रीजी ने जब सत्ता ग्रहण की तो पहला काम किया नर्मदा के जो 335 करोड़ रुपये बकाया थे वह चुकाये और हमारे यहां बाड़मेर लिफ्ट का काम जो अशोक गहलोत जी केवल पत्थर लगाकर शिलान्यास करके आये थे। कोई राशि का प्रबंध नहीं किया बाड़मेर लिफ्ट कैनाल के नाम पर। 665 करोड़ रुपये इस योजना के लिये बजट के अन्दर प्रावधान किया है और काम चालू हो गया है। बाड़मेर लिफ्ट कैनाल के लिये 665 करोड़ रुपये देने पर मैं हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं। ऐसा ही प्रावधान हमारे माननीय अध्यक्ष महोदय, उंडू, पोकरण, सिवाना, बालोतरा लिफ्ट कैनाल के लिये यह 1100 करोड़ का जो प्रावधान है वह भी बहुत बड़ा काम किया है। कुल मिलाकर बाड़मेर केवल एक बाड़मेर जिले को पानी के नाम पर 2700 करोड़ दिये हैं जबकि इन्होंने पांच साल में एक पैसा नहीं दिया। 45 साल में एक पैसा नहीं दिया। हमारी सरकार, हमारी पार्टी, हमारी नेता और हमारी मुख्यमंत्री जी का काम का तरीका ऐसा है कि राजस्थान में आगे कम से कम 20 साल तक हमारा राज रहेगा। कम से कम 20 साल तक भारतीय जनता पार्टी का राज रहेगा और वसुन्धरा राजे जी राजस्थान की मुख्यमंत्री तब तक रहेंगी जब तक वह अखिल भारतीय स्तर पर प्रधानमंत्री नहीं बन जातीं। इसलिये मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी नेता और हमारी मुख्यमंत्री जी ने शानदार बजट प्रस्तुत किया जिससे परेशान होकर

(श्री जालम सिंह रावलोत)

शायद यह थक गये हैं। इनके पास बोलने के लिये शब्द नहीं है। इनकी धर्मपत्नियां इनसे परेशान हैं।

मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं बिजली का मामला है। ऊर्जा क्षेत्र में 28 फरवरी का दिन राजस्थान के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण रहेगा जब मेरे विधान सभा क्षेत्र शिव में गिराल स्थान पर गिराल लिग्नाइट पावर प्रोजेक्ट का उदघाटन माननीय मुख्य मंत्रीजी ने किया। उस समय चीफ गैस्ट के रूप में हमारी पार्टी के कोई केन्द्रीय नेता नहीं थे। केन्दीय सरकार के कोयला राज्य मंत्री चीफ गैस्ट के रूप में पधारे थे। उन्होंने हमारी सरकार, हमारी मुख्य मंत्रीजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की और बिजली के क्षेत्र में जो वह कह रहे थे कि एक भी मेगावाट बिजली का उत्पादन नहीं हुआ है। आज मैं कहना चाहता हूं आपके माध्यम से और मुख्य मंत्रीजी को, हमारे ऊर्जा राज्य मंत्रीजी को हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं कि बिजली के बारे में बहुत शानदार काम किया। मुख्य मंत्रीजी का यह कोटेशन मेरा लक्ष्य राजस्थान को वर्ष 2008 के अंत तक बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है क्योंकि यह प्रदेश के चहुंमुखी विकास एवं समृद्धि का मुख्य द्वार है। उसके हिसाब से हम केवल नारा नहीं दे रहे हैं। काम चालू हो गया। गिराल में काम चालू हो गया। सूरतगढ़ में भी काम चालू हो गया। धौलपुर में काम चालू हो गया। 2008 के अंत तक 3111 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो जायेगा। इनके टाइम में एक मेगावाट बिजली नहीं बनी, हम 2008 तक 3111 मेगावाट बिजली बनाकर बिजली के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने जा रहे हैं। अध्यक्षजी जो काम चालू हुआ है उसके हिसाब से 2011 तक बिजली के क्षेत्र में 4954 मेगावाट बिजली का काम हो जायेगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं पुन: धिक्कार देना चाहता हूं कांग्रेस की केन्द्र सरकार को। जब केन्द्र में डा. मनमोहन सिंह जी प्रधानमंत्री बने थे एक नीति आयी थी बिजली के क्षेत्र में राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना। शर्म आनी चाहिये आपको। राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना का लक्ष्य था राजस्थान के गरीब तक बिजली पहुंचाना, बीपीएल धारी को बिजली पहुंचाना, गांव-ढाणी तक बिजली पहुंचाना लेकिन आपने केवल 16 जिलों में इस योजना को पास किया है। हमारे बाड़मेर जिला, नागौर जिला और 15 जिलों में राजीव गांधी विद्युतीकरण की योजनाएं दो साल से लटका कर रखकर बैठे हैं। इनको शर्म

(श्री जालम सिंह रावलोत)

नहीं आती कि बिजली के क्षेत्र में राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना के पैसे को यह रोक करके बैठे हैं। एक तरफ हमारा जिला बाड़मेर बाढ़ से पीड़ित है, अकाल से पीड़ित है लेकिन बिजली के क्षेत्र में हमारी राजीव गांधी विद्युतीकरण योजनाओं को जिसके 100 करोड़ रुपये, 668 गांव और लगभग हजारों ढाणियां जुड़ने वाली हैं। धिक्कार है इनको। इन्होंने राजस्थान की जनता के लिये कुछ काम नहीं किया।

सर्व शिक्षा अभियान यदि किसी ने दिया है तो अटल बिहारी वाजपेयी ने दिया है। सर्व शिक्षा अभियान के कारण आज ढाणी-ढाणी में स्कूलें बन रही हैं तो अटल बिहारी वाजपेयी के कारण ...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया कनक्लूड करें। समाप्त करें।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : मैं पढ़ा-लिखा व्यक्ति हूं। मुझे कभी मौका नहीं मिलता है। राज्यपाल के अभिभाषण पर मेरी तैयारी थी, इन लोगों ने बोलने नहीं दिया। मुख्य मंत्रीजी का बजट है इस पर बोलने के लिये अभी मैं दो घण्टा बोल सकता हूं लेकिन यह तो थक गये हैं। अध्यक्ष महोदय, थोड़ा तो बोलने दो। थोड़ा और बोलना चाहता हूं ...

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : बहुत अच्छा बोल रहे हैं।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : अध्यक्ष महोदय, मैं यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर यहां विधान सभा में बोलने के लिये आया हूं। मैं प्रोफेसर की नौकरी से छुट्टी लेकर एमएलए जनता ने बनाया है, बोलने के लिये आया हूं। मैं बोलना चाहता हूं राजस्थान की लोक कल्याणकारी नीतियों के बारे में।

मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि हमारे युवा क्षेत्र के युवाओं के बारे में तो बहुत कुछ हुआ है। युवाओं को शिक्षा के बारे में मैंने जानकारी दी है लेकिन हमारे तहसील स्तर तक कालेज खोलने की व्यवस्था इस सरकार ने की है। हम कभी सोच ही नहीं सकते थे कि हमारी तहसील में कालेज हो जायेंगे। जो नई नीति है उसके तहत तहसील स्तर तक मेरे विधान सभा क्षेत्र में चार तहसील हैं। चारों में ही कालेज नहीं है। चारों जगह कालेज हो जायेंगे इसके लिये मैं साधुवाद देना चाहता हूं। शिव में कालेज हो जायेगा। फतहगढ़ में कालेज हो जायेगा। बायतू में कालेज हो जायेगा और रामसर में कालेज हो जायेगा।

(श्री जालम सिंह रावलोत)

मैं आपके माध्यम से हमारी सरकार की खेल के सम्बन्ध में जो नीतियां हैं उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करना चाहता हूं। माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा है सौ अरब युवाओं के बारे में वह एक शानदार नीति की घोषणा करने वाले हैं। मुख्य मंत्रीजी का सोच है कि राजस्थान के खिलाड़ी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम कमाएं इसके लिये यदि हमें उस स्तर को प्राप्त करना है....

यदि हमें उन ऊंचाइयों को छूना है तो राजस्थान के गांव और राजस्थान की ढाणियों में खेलकूद सुविधाएं पैदा करनी पड़ेंगी। इस किशोर, युवा नीति के माध्यम से मुख्यमंत्री जी ने बजट में कहा है कि राजस्थान के ग्राम पंचायत तक 2008 तक, ऐसी सभी गांव जो पांच हजार से ज्यादा आबादी वाले हैं वहां 25 हजार और प्रत्येक गांव में खेल मैदान विकसित करने के लिए, खेल सामग्री उपलब्ध कराने के लिए वह देने वाली हैं। इससे हमारे गांवों को व्यक्तियों को निश्चित रूप से सुविधा मिलेगी और गांव के खिलाड़ी आगे बढ़कर के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन करेंगे। इस हेतु मैं मुख्य मंत्री जी को हार्दिक साधुवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने बजट में यह किया है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा तहसील स्तर पर स्टेडियम निर्माण का काम भी इस बजट में किया है। इससे ज्यादा अच्छी बात क्या हो सकती है। लोग कहते हैं कि गांवों की ओर ध्यान नहीं दिया गया, तहसील स्तर पर स्टेडियम निर्माण का काम और किसी ने नहीं किया है, वसुंधरा राजे जी की इस सरकार ने किया है। मुख्य मंत्री ने किया है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से हमारी सरकार को और हमारी सरकार की नेता को धन्यवाद देना चाहता हूं कि इतना शानदार काम किया है।

अध्यक्ष महोदय, हमारी मुख्य मंत्रीजी ने खास तौर पर महिला सशक्तिकरण करने की जो घोषणा की है, जिसके बारे में उनका कहना है कि 2011 तक उनकी इच्छा है, उनकी सरकार की प्रबल दृढ़ शक्ति है कि बालिकाओं का शत-प्रतिशत एनरोलमेंट होना चाहिए। बालिकाओं की, शिशु विवाह की परम्परा समाप्त होनी चाहिए। हर महिला को इंस्टीट्युशन डिलीवरी में सहायता मिलनी चाहिए। बर्थ रेट को 21 प्रति हजार तक ले जाने का लक्ष्य हमारी सरकार का है जिसका प्रावधान बजट में किया है।

(श्री जालम सिंह रावलोत)

अध्यक्ष महोदय, महिलाओं के लिए प्रतिवर्ष हर जिले में एक हजार रोजगार के अवसर प्रदान करना, यह भी हमारे बजट में मुख्यमंत्री जी ने स्पष्ट प्रावधान किया है। नये आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्थापना, 1500 नये आंगनबाड़ी केन्द्र होंगे, जो हमारे ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान अदा करेंगे। इसी तरह से आंगनबाड़ी भवन, दो हजार भवन बनाये जायेंगे और बालिकाओं के लिए साईकिल की व्यवस्था, अध्यक्ष महोदय, मैं तो ग्रामीण क्षेत्र से जीतकर आया हूं, हमारे उधर तो दूरियां बहुत हैं, उन लोगों के लिए मुख्य मंत्रीजी ने एक शानदार सोच रखी है कि तीन सौ रुपये में साईकिल दें। आप लोगों ने क्यों नहीं की यह व्यवस्था। बजट में इतनी शानदार व्यवस्था आपके मुख्य मंत्रीजी ने और आपके वित्त मंत्री जी ने क्यों नहीं की, इसी कारण से आप रो रहे हो ... (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

एक माननीय सदस्य : तभी आप रो रहे हैं।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : अध्यक्ष महोदय, ट्रांसपोर्ट वाउचर स्कीम के माध्यम से भी मुख्य मंत्रीजी ने शानदार उपहार हमारी बालिकाओं के लिए दिया है। अध्यक्ष महोदय, एस.सी., एस.टी. के लिए तो क्या नहीं किया है इस सरकार ने, अम्बेड़कर पीठ का निर्माण, इतना शानदार काम है। डा. भीमराव अम्बेड़कर जी ने इस देश के लिए जो कुछ किया है, उनके योगदान को हमारी पार्टी और हमारी सरकार कभी भुला नहीं सकती है इसलिए डा. अम्बेड़कर जी के निर्वाण दिवस 6 दिसम्बर को हम लोग सामाजिक समरसता दिवस के रूप में मनाते हैं और 14 अप्रैल की जयन्ती को हम शानदार दिवस के रूप में मनाते हैं ...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें। कृपया समाप्त करें, माननीय सदस्य ...(व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : अम्बेड़कर पीठ की स्थापना, बैक लाग की समाप्ति, यह सब ऐसे शानदार काम हैं, इसके लिए माननीय मुख्य मंत्रीजी की जितनी तारीफ की जाये उतनी कम है। इन्होंने बैक लॉग क्यों रखा, इनका

(श्री जालम सिंह रावलोत)

तीस हजार का बैक लॉग था और 11 हजार का बैक लॉग मुख्य मंत्रीजी ने भर लिया है और दस हजार का बैक लॉग हम पूरा करने वाले हैं। यह एस.सी., एस.टी. और ओ.बी.सी. के विरोधी हैं जिसके कारण यह सुनना नहीं चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान का जो सीमावर्ती क्षेत्र है वह विकास से पिछड़ा हुआ है। सीमावर्ती विकास के लिए सीमावर्ती विकास बोर्ड का गठन किया जाये। अध्यक्ष महोदय, राजस्थान रोडवेज में जैसे पत्रकार भी जाते हैं राजस्थान के बाहर, वहां हमारे यहां से पत्रकारों को पास की सुविधा दी जानी चाहिए ताकि हमारे यहां का पत्रकार देश भर में कहीं भी जा सके और उनको जो प्लाट दिये जा रहे हैं वह उनको रियायती दर पर कम से कम पचास प्रतिशत की रियायती दर से प्लाट देना चाहिए क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत सामान्य होती है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्रीजी का हार्दिक साधुवाद देना चाहता हूं कि इन्होंने इस बजट में मातृ शक्ति का ध्यान रखा है। उन्होंने इस बजट के माध्यम से युवा शक्ति का ध्यान रखा है। इस बजट के माध्यम से माननीय मुख्य मंत्रीजी ने किसानों का ध्यान रखा है। बेरोजगारों का ध्यान रखा है। गरीब का ध्यान रखा है। उन्होंने इस बजट के माध्यम से राजस्थान में ढाणी की चिंता की है। राजस्थान में खेल की चिंता की है। राजस्थान के खलिहान की चिंता की है। राजस्थान के शहरों की चिंता की है, राजस्थान के खिलाड़ी की चिंता की है...(व्यवधान) राजस्थान के शिक्षित की चिंता की है और इन लोगों ने क्या किया है। बिजली के पैसे रखे।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया समाप्त करें।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : इन लोगों ने पैसे रखे, इन लोगों ने अकाल के पैसे रखे। अध्यक्ष महोदय, मैं सड़कों के बारे में कुछ बोल नहीं पाया क्योंकि हमारे सार्वजनिक निर्माण मंत्री जी का काम इतना शानदार है कि हम अखिल भारतीय स्तर पर सड़कों में नम्बर वन हैं और उसका सबसे ज्यादा किसी जिले को फायदा मिला है तो बाड़मेर को मिला है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया कनक्लूड करें ...(व्यवधान)

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : जैसलमेर को फायदा मिला है।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें आप ...(व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : प्रशंसा करता हूं कि इस योजना के माध्यम से हमारे शहर जुड़ेंगे, गांव जुड़ेंगे, ढाणी जुड़ेगी। साधुवाद, धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री राजकुमार रिणवा।

श्री राजकुमार रिणवा (रतनगढ़) : अध्यक्ष महोदय, मेरे तो कृपा करें, खूब सेवा करी है आपकी पार्टी की निस्वार्थ रूप से। आंकड़ों के बारे में तो मेरे विद्वान साथी ...(व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : वह पहली बार बोल रहे हैं। उनकी मेडन स्पीच है। कृपया शात रहें। जो कोई पहली बार बोलता है उसे सदन शांति से सुनता है। आप कृपया सुनें उनकी ...(व्यवधान) आप सब लोगों से मेरी अपील है, आप उन्हें सुने...(व्यवधान)

श्री राजकुमार रिणवा (रतनगढ़) : मैंने और सुरेश जी ने तो आपकी पार्टी की निस्वार्थ बहुत सेवा की है...(व्यवधान) नैतिकता तो रखें आप...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यह तानाशाही की बात नहीं है। यह पहली स्पीच है। यह उनकी मेडन स्पीच है, उन्हें सुनें आप ...(व्यवधान)

श्री राजकुमार रिणवा (रतनगढ़) : हम नये लोग हैं। हमें भी बोलने का मौका मिलना चाहिए ...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, आंकड़ों के बारे में मेरे विद्वान साथियों ने, अखबारों ने, पत्रिकाओं में खूब लिखा है।

श्री अध्यक्ष : यह सदन की परम्परा रही है। इस सदन की यह परम्परा रही है कि कोई भी माननीय सदस्य जब पहली बार बोलता है तो उसे शांतिपूर्वक सुना जाता है।

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक) : अध्यक्ष महोदय, नैतिकता तो बिलकुल भी नहीं है। इनमें नैतिकता तो बिलकुल भी नहीं है। वह बार-बार रिकवेस्ट कर रहे हैं। आप कह रही हैं तो भी नहीं मानेंगे यह ...(व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : आप नियमों का कुछ तो ख्याल रखें ...(व्यवधान) यह सदन की परम्परा रही है ...(व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री राजकुमार रिणवा (रतनगढ़) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात एक दोहे से शुरू कर रहा हूं, 'रहिमन राज सराहिये शशि सम सुखद जो होय, कहां बापरो भानु है तपे तरियन खोय।' इतना बढ़िया बजट है।

श्री अध्यक्ष : आपने सारी परम्पराएं तोड़ दी हैं। सारे नियम तोड़ दिये। इस सदन की प्रतिष्ठा और गरिमा तोड़ दी ...(व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री राजकुमार रिणवा (रतनगढ़) : अध्यक्ष महोदय, चुनाव जीतने के बाद में जब मैं क्षेत्र में गया तो गांवों में लोग बोले कि भाई जी, पानी मत मांग लेना, पानी तो आंखों में ही अब आता है। 6-6 महीने से नहाते नहीं हैं, चम जूएं पड़ गयी हैं। उन गांवों में, टीबो में, सुबह ऊंट गाड़ी पानी की टंकी लेकर जाये तो रात तक एक बार से ज्यादा नहीं जा सकती है। उन गांवों में पानी की गंगा बह रही है। मुख्य मंत्रीजी का, सांवर लाल जी को भागीरथ समझिये, इतनी बढ़िया व्यवस्था रही है। जो लक्ष्य लेकर के चुनाव लड़ा था, वह 80 प्रतिशत लक्ष्य पूरा हो गया है। सत्य और अहिंसा गांधी जी ने भी हमको सिखाया है और अगर सत्य बात को नहीं बोल सकते हैं तो उससे बड़ा अन्याय नहीं है। हम सत्य बात बोलेंगे।

अध्यक्ष महोदय, सड़कों के बारे में, सैनिक जो बाहर से आते हैं, प्रवासी जो बाहर रह रहे हैं वह अगर आते हैं और गांवों में जाते हैं तो कोई साधन गांवों में जाने के लिए उनके पास नहीं है। जीप वह किराये पर लेते हैं। वह कितना दु:ख पाते हैं। गांव-गांव में पीएमजीएसवाई से, डब्ल्यूबीएम से, मुख्य मंत्री सड़क योजना से, मिसिंग लिंक से इतना बढ़िया काम सड़कों के क्षेत्र में हुआ है। उसकी जितनी प्रशंसा की जाये उतना कम है।

अध्यक्ष महोदय, बिजली के बारे में, ऊर्जा के बारे में क्या कहा जाये। बिजली का मतलब, ऊर्जा, शक्ति, हमारी मुख्य मंत्री शक्ति की उपासक हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी मुख्य मंत्रीजी शक्ति की उपासक हैं। ऊर्जा आ जाने से अपने पूरे प्रदेश में आने वाले दो वर्षों में यह हालत होगी कि हम आत्मनिर्भर तो हो ही जाएंगे बल्कि दूसरे प्रदेशों को भी बहुत सारी बिजली दे पाएंगे।

(श्री राजकुमार रिणवा)

आज यह कितनी बड़ी बात है कि जापान और अमरीका की कम्पनियां हमारे यहां निवेश करने के लिए बार-बार चेष्टा कर रही हैं। अभी मैं कलकत्ता गया तो एलजी वाले बोल रहे थे कि हम 10 हजार करोड़ का राजस्थान में इन्वेस्ट करना चाहते हैं। एक जापानी कम्पनी बोल रही थी कि कम से कम 6 हजार करोड़ रुपए हम लगाना चाहते हैं। इतनी बड़ी योजनाएं, इतनी कम्पनियां आ रही हैं क्योंकि सबको राजस्थान में अपना भविष्य दिखने लग गया है। हमारे राजस्थान में तेल निकल रहा है, मिनरल्स निकल रहे हैं, मार्बल निकल रहा है, ऐसी-ऐसी बढ़िया धातुएं निकल रही है, अपने मारवाड़ी में कहावत है कि 'नीत के गैल बरकत होवे' इतने-इतने खर्चे, इतनी-इतनी योजनाएं बनाने के बावजूद भी पिछले दो साल पहले कहते कि हमारी सरकार ने सेवानिवृत्ति की आयु बढ़ा दी उसके चलते ओवर ड्राफ्ट नहीं लेना पड़ा लेकिन अब सेवानिवृत्ति के 7 सौ करोड़ रुपए दे दिए, उसके बाद 11 प्रतिशत डी ए के 600 करोड़ रुपए भी दे दिए उसके बाद भी रेवेन्यू में सरप्लस हो रहा है। नीयत के गैल बरकत होवे, मुख्य मंत्रीजी की नीयत ठीक है इसलिए हमको बरकत हो रही है।

जहां तक ऊर्जा का प्रश्न है शक्ति का उपासक अपने आपको निमित्त माने कि मैं प्रतिनिधि हूं, यह बोलने पर पूरी देवी कृपा होती है।

प्राकृतिक आपदा कहीं भी आ सकती है। प्राकृतिक आपदा एक व्यक्ति या एक पार्टी के वश की बात नहीं है, उसका सब लोग मिलकर मुकाबला करें, सब लोग मिलकर व्यवस्था करें तो कोई व्यवस्था हो सकती है, उसके लिए अगर इस तरह से करें तो बढ़िया नहीं रहेगा। केन्द्र सरकार और प्रदेश के बीच भेदभाव करने की चेष्टा की जाए तो केन्द्र सरकार कौन है, संयुक्त सरकार है, हमारा पूरा देश एक है, जो भी सरकार केन्द्र में रहती है वह राज्यों को उनका भाग देती है। यह हमारे ऊपर उसका अहसान नहीं है। राजस्थान भी देश की पूरी सेवा करता है, सबसे ज्यादा सैनिक दे रखे हैं, सबसे ज्यादा उद्योगपति दे रखे हैं, आज भारत की आर्थिक स्थिति सुधारने में सबसे ज्यादा राजस्थान का सहयोग है, उद्योगपति सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा कमाकर देते हैं, सबसे ज्यादा लेबर राजस्थान की है, कोई भी तरह की कमी नहीं है।

इतनी बढ़िया व्यवस्था चिकित्सा के क्षेत्र में है, इतनी बढ़िया व्यवस्था शिक्षा के क्षेत्र में हो रही है कि कहने की आवश्यकता ही नहीं है। शिक्षा की

(श्री राजकुमार रिणवा)

ऐसी बढ़िया व्यवस्था हो गई कि तीन-तीन किलोमीटर तक ढाणियों और कच्ची बस्तियों के अंदर पहली कक्षा के बच्चों को दूर-दूर स्कूल जाना पड़ता था, अब उन गरीब बच्चों के पास न तो कोई तांगा, न कोई मोटर, न कोई जीप, न कोई टैम्पो, वह बच्चे कैसे पढ़ें, ये बच्चे उन गरीब लोगों के हैं जिनकी माताएं खेतों पर मजदूरी के लिए जाती है और उनके पिता डेली वेजेज मजदूर हैं। इसलिए वे बच्चे पढ़ नहीं पाते हैं, क्योंकि वे बकरियां चराते हैं, उनमें कई बाल श्रमिक हैं, उन बच्चों को मैं आज देखता हूं, मैंने मेरे क्षेत्र में 3 स्कूल खुलवाए हैं पहली के, खुलवाने के साथ ही उनमें 100-100 बच्चे पढ़ने के लिए तुरन्त तैयार हो गए। सरकार की फीस फ्री है, मिड डे मील है, किताबें सरकार फ्री दे रही है, सरकार इतनी बढ़िया व्यवस्था कर रही है, सब तरह की।

मैं दो सुझाव देना चाहता हूं माननीय मुख्य मंत्री महोदया को कि विकसित राष्ट्रों, अमरीका और ब्रिटेन के लोग यहां आते हैं, उनसे पूछते कि वहां क्या व्यवस्था है तो वह बताते हैं कि आदमी जब वृद्ध हो जाता है तो सारी व्यवस्था सरकार देखती है। उसकी पेंशन है, उसके लिए मकान और अन्य सारी व्यवस्थाएं सरकार करती है। सरकार ने बेरोजगारों के लिए बहुत बढ़िया व्यवस्था की है। जिनको रोजगार नहीं मिला उनको बेरोजगारी भत्ता देने की व्यवस्था इस सरकार ने की है। युवाओं के लिए बहुत बढ़िया काम इस सरकार ने किया है। विधवाओं और महिलाओं के लिए बहुत बढ़िया काम किया है। वृद्धों के लिए मेरी माननीय मुख्य मंत्री महोदया से प्रार्थना है कि जो 65 वर्ष के हो गए हैं, जिनकी आज बड़ी दुर्दशा है, अपने देश और प्रदेश में उनके लिए आप जरूर व्यवस्था करें। उनमें कई की इतनी उपेक्षा है कि उनके सम्पन्न बेटे हैं लेकिन वे स्वाभिमान से जी नहीं सकते। इसलिए मेरा निवेदन है कि 65 वर्ष से ऊपर के चाहे बीपीएल हों या बीपीएल नहीं हों, उन सबके लिए व्यवस्था करें।

गायों के लिए आज ऐसा युग आ गया है कि उसमें व्यक्तिगत रूप से गाय पालना बहुत मुश्किल हो गया है, घरों में इतनी जगह है नहीं, शहरों में आदमी गाय रखने की व्यवस्था नहीं कर पाता है इसलिए गौ शालाओं के लिए अनुदान ज्यादा से ज्यादा बढ़ाया जाए।

(श्री राजकुमार रिणवा)

(समय : 16.53 बजे)

(श्री सुरेन्द्र गोयल, सभापति, पदासीन)

माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्य मंत्री महोदया बहुत ही आध्यात्मिक विचारों की महिला हैं, इसलिए किसी भी तरह से गाएं जो देश और प्रदेश की अर्थव्यवस्था की धुरी हैं तो उन गायों के लिए ज्यादा से ज्यादा अनुदान बढ़ाया जाए। वृद्धों के लिए अनुदान बढ़ाया जाए। यह मेरी उनसे विशेष प्रार्थना है। आपने मुझे सुना, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक) : माननीय सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन का समय सम्माननीय मुख्य मंत्रीजी की रिप्लाई तक बढ़ाया जाए।

श्री सभापति : क्या सदन की सहमति है कि सदन का समय रिप्लाई तक बढ़ाया जाए?

(स्वीकृत)

समय बढ़ाया गया। श्री बद्रीलाल जाट।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : मैं सर्वप्रथम सांवलिया सेठ की जय जयकार करते हुए यह कहना चाहता हूं...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : माननीय मुख्यमंत्री जी इसी सदन में जवाब देंगी, यह सदन किसी की बपौती नहीं है, सदन की नेता बोलेंगी और यहीं बोलेंगी और राजस्थान के लिए कल्याणकारी घोषणाएं करेंगी।

आय-व्यय पर वाद विवाद

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : ...(व्यवधान)... बोल सांवलिया सेठ की जय। माननीय सभापति महोदय, बजट की प्रशंसा के इन शुभ क्षणों में मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदया के लिए कहना चाहूंगा कि

(श्री बद्रीलाल जाट)

विकास की राह के दीवाने ठोकर में ताज रखते हैं,

मिटाकर अपने वजूद को, राजस्थान का गौरव बढ़ाते हैं।

मैं गौरवशाली सरकार के लिए चाहे वह सड़क की बात हो, चाहे पेयजल की बात हो, चाहे पुलिस विभाग की बात हो, चाहे अन्य प्रकार के विभागों की बात हो, उन सब पर अपनी बात रखने का प्रयास करूंगा।

मैं इस शुभ अवसर पर 9 मार्च को जो बजट माननीय मुख्य मंत्री महोदया द्वारा पेश किया गया, इसके पूर्व दिन उनका जन्मदिन था उसके लिए मैं उनको बधाई देना चाहता हूं और कहना चाहता हूं कि आपने अपने श्रीमुख से इस राजस्थान के पवित्र सदन में चाहे किसान हो, चाहे नौजवान हो, चाहे जन्म लेने वाला बेटा और बेटी हो, हर प्रकार के वर्ग और हर क्षेत्र ने उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मैं इस सुअवसर पर यह कहना चाहूंगा कि जो हमारी पंचवर्षीय योजना है उसका आकार इस बार सर्वश्रेष्ठ रहा है, 68422 करोड़, हमारी जो पंचवर्षीय योजना थी और इस वर्ष का वार्षिक बजट 11 हजार करोड़ 638.86 का पेश कर हर वर्ग के लिए फण्डिंग की व्यवस्था की है, मैं उसके लिए उनको तहेदिल से बधाई देना चाहूंगा। मैं यह कहना चाहूंगा कि

सूरज अगर ढलता नहीं तो पूर्व के लिए मुड़ता नहीं,

कांग्रेस यदि जाती नहीं तो भारतीय जनता पार्टी आती नहीं।

मैं आदरणीय मुख्य मंत्री महोदया को अंतहृदय से कहना चाहता हूं कि उनके नेतृत्व में जब भारतीय जनता पार्टी ने नेतृत्व सम्भाला और उस समय की परिवर्तन यात्रा से लेकर आज दिन तक आपने चाहे चेतना यात्रा निकाली हो चाहे जल चेतना यात्रा निकाली हो, राजस्थान को एक संदेश दिया कि राजस्थान का किसान, नौजवान हो या व्यापारी हो, या रिक्शा चलाने वाला हो, हमारा जो मतदाता है उसके कल्याण के लिए, उसके हित के लिए सरकार काम करने का प्रयास करती है।

मैं हमारे जो पूर्व मुख्य मंत्री थे उनके बारे में दो शब्द कहना चाहूंगा कि उन्होंने अपने जीवन का एक अहम मुद्दा बना रखा था कि मेरा खजाना खाली है, इस कंगाली में कोई अपना आटा गीला नहीं करना चाहता था। उन्होंने कहा कि मेरा खजाना खाली, कर्मचारी किसी तरह से दीपावली मनाने का प्रयास

(श्री बद्रीलाल जाट)

करते तो उनके मन में दीवाली मनती थी। पूर्ववर्ती सरकार हर वर्ग की विरोधी थी, हमारे पूर्व मुख्य मंत्री अशोक गहलोत साहब कहते थे कि बिजली बचाओ, पानी बचाओ, सबको पढ़ाओ और कांग्रेस को वोट कभी मत दो। ऐसा नारा उन्होंने देकर राजस्थान का कर्ज चुकाने का प्रयास किया था। मैं तहेदिल से उनको बधाई देना चाहता हूं और मेरे जो प्रतिपक्ष के सदस्य हैं उनको चेतावनी भरे शब्दों में कहना चाहता हूं कि इनकी जो सोनिया मम्मी हैं वह वहां दिल्ली में बैठती हैं उसकी और हमारे माननीय प्रधानमंत्रीजी हैं यदि उनको जुकाम भी हो जाए तो वह उनसे पूछते हैं कि कौनसी टेबलेट लें, मुझे जुकाम हुआ है, पेरासिटामोल लेनी है या विक्स एक्शन 500 लेनी है, ऐसा व्यक्ति हमारे भारत का नेतृत्व करता है तो निश्चित रूप से हमारे राजस्थान को नेतृत्व करना करना पड़ेगा।

इन्हीं शब्दों को मैं कहने का प्रयास करूंगा कि हमारे प्रतिपक्ष के सदस्य महज हंगामा खड़ा करके अश्लीलता और मूर्खता का परिचय देकर सदन का ही मान नहीं गिरा रहे हैं। उन्होंने जनता का जो दिया हुआ वोट है उसका निरादर करके इस सदन का मान-सम्मान कम करने का प्रयास किया है। मैं इनको चेतावनी भरे शब्दों में कहना चाहता हूं कि चाहे क्वात्रोची का नाम लो, चाहे अफजल गुरु का नाम लो और मैं इसके विरोध में यह कहना चाहूंगा कि अटल बिहारी वाजपेयी का नाम लेने से प्रत्येक नौजवान के सीने की धड़कन हमारे देश के लिए धड़कती है। हमारे प्रत्येक किसान का सीना जब धड़कता है तो देश का गौरव बढ़ेगा, इस भारत को अखण्ड भारत और विश्व गुरु बनाने के लिए इनके थोथे कारनामे यहां काम नहीं आएंगे। आजादी के 59 साल बाद हमारा किसान जो खेत में जाता है, हमारा नौजवान विद्यालय में जाता है, हमारा व्यापारी व्यवसाय करने के लिए जाता है और अपना माथा नहीं ठोकता है तो यह भारत के विकास की गंगा भगीरथ बनकर नहीं बह सकती। इसलिए मैं इनको कहना चाहूंगा कि हमारे कांग्रेस के भाई हैं, इन्होंने किसान भाइयों का खून चूसने का प्रयास किया था। अब अंतिम समय आ गया है और इनको इन्हीं शब्दों के साथ कहना चाहूंगा कि ''कह दो इनको कि हम आंधियों और तूफानों से डरा नहीं करते, हम हौसलों से नहीं परों से उड़ा करते हैं''। हमारी माननीय मुख्य मंत्री महोदया जिन्होंने हमारा बजट भाषण पढ़ा था इनके

(श्री बद्रीलाल जाट)

नेतृत्व में राजस्थान चहुंमुखी विकास की ओर है, राजस्थान पर कलंक था उसको धोने के कगार पर है और निश्चित तौर पर चाहे रोजगार की बात हो, चाहे स्वास्थ्य की बात हो यह राजस्थान का ही नहीं पूरे भारतवर्ष का एक अनूठा काम हुआ है कि 56 हजार तृतीय श्रेणी अध्यापकों को नियुक्ति देकर आर.पी.एस.सी. द्वारा हमारे नौजवान भाइयों को रोजगार दिया था यह पूरे भारतवर्ष में प्रशंसनीय है। मैं उस शख्स को याद करना नहीं भूल सकता जिन्होंने एक किसान का बेटा ही नहीं पूरे भारतवर्ष का गौरव बढ़ाया, माननीय भैरोंसिंह शेखावत, उन्होंने राजस्थान के मुख्य मंत्रित्वकाल में अन्त्योदय योजना लागू की थी वह पूरे विश्व में प्रशंसनीय रही है।

मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को बधाई देना चाहता हूं इन्होंने आदिवासी क्षेत्र में जो हमारे भाई व बहन हैं वे विद्यालय तक नहीं जा सकते उनको स्कूटी दी या साईकिल दी और वे समय पर नहीं जा सकते, धन का यदि उनको अभाव होता है तो उनको मिड-डे-मील के द्वारा, मेवाड़ की जो परम्परा है और उसमें सांवलिया सेठ के जब वे आये थे उन्होंने घोषणा करके राजस्थान भर के भाई-बहन 11 करोड़ लोगों को मिड-डे-मील के द्वारा भोजन देकर यह साबित किया कि दृढ़ इच्छाशक्ति से हम विकास की गंगा बहा सकते हैं।

माननीय सभापति महोदय, मैं इस अवसर पर आपको यह कहना चाहूंगा कि जो हमारी ऋषभदेव की घटना हुई थी वहां एक सौहार्दपूर्ण वातावरण हमारे आदिवासी भाइयों में और सब में था उसके बाद हमारे जो समाजकंटक थे वहां जहर घोलने का प्रयास किया, परन्तु हमारी माननीय मुख्य मंत्री महोदया ने और हमारे गृह मंत्रीजी ने अपनी सूझबूझ और दूरदृष्टि के द्वारा जो हमारा मेला भरा इससे राजस्थान का गौरव बढ़ाया और इससे भारत का नाम ऊंचा करके यह कहा कि हम राजस्थान में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए तत्पर हैं और इस सुअवसर पर मेवाड़ भील कोर थी उसका नया नाम देकर माननीय मुख्य मंत्री महोदया ने हाडी रानी कोर यूनिट की घोषणा की उसके लिए तहेदिल से राजस्थान के भाई व बहनों की ओर से बधाई देना चाहता हूं। मैं नौजवान भाइयों के लिए कहना चाहता हूं कि एक महान इतिहासकार ने कहा था कि 'कह दो तलवारों की धारों पर इतिहास बदलते देखा है, जिस ओर यह तन्हाई चलती है उस ओर जमाना बदलते देखा है'।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : हिम्मत रखो, रोने-धोने से काम नहीं चलेगा, 40 साल से आपको सहा है इस तरह से रोओ मत।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : महाविद्यालय जाने के बाद वह अपने हाथ के लिए कहीं काम ढूंढता था, बेरोजगार था उसको अपने माता-पिता पर आश्रित नहीं रहना पड़े इसलिए उनको बेरोजगारी भत्ता देकर मुख्य मंत्री महोदया ने नौजवान बेरोजगार भाइयों का सिर ऊंचा किया है, उनका गौरव बढ़ाया है, उनको तहेदिल से कहना चाहता हूं कि चाहे 400 रुपये हो, चाहे 500 रुपये या 600 रुपये हो राशि से उनका मतलब नहीं है उनको कुछ राजकीय खजाने से देने का काम किया है यह आदरणीय मुख्य मंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया जी ने किया है।

मैं इस सुअवसर पर यह भी कहने का प्रयास करूंगा कि मैं किसान का बेटा होने के नाते कहूंगा कि हमारे कृषि मंत्रीजी ने विदेश में भेजकर किसानों का जो इजरायल का दौरा कराया था उसमें हमारी पार्टी का नेतृत्व है इस क्षेत्रीय भावना से ऊपर उठकर चाहे कांग्रेस के भाई हैं, चाहे भारतीय जनता पार्टी के, चाहे निर्दलीय हैं उनको भी वहां इजरायल भेजकर यह साबित किया कि नई तकनीक से किसान को अधिकतम फायदा कैसे पहुंचे क्योंकि यह ग्लोबलाइजेशन का जमाना है, वैश्वीकरण का जमाना है। जब तक किसान सुदृढ़ नहीं होगा इस राजस्थान का भविष्य नहीं सुधर सकता। मुझे आज कहते हुए बड़ा गर्व है कि जो हमारा मण्डी शुल्क था माननीय मुख्य मंत्री महोदया ने कम किया, चाहे आढ़त की बात हो उसको कम किया। यही नहीं हमारे किसान भाई जयपुर में आये, अजमेर जाएं या भीलवाड़ा में जाएं तो वहां किसान भवन जैसे शानदार भवन खड़ा करके किसानों का गौरव बढ़ाने का काम किया है। .. (व्यवधान)..

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

मैं इस अवसर पर सभापति महोदय, आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि जो किसान हमारे ग्रामीण क्षेत्र में 20 प्रतिशत से कम छीजत का प्रयास करेंगे उसमें उनको बिजली के जो बिल हैं उसमें भी माफ करने का, रियायत देने की बात है। मैं इस सुअवसर पर यह भी प्रयास करूंगा कि जहां छीजत कम होगी वहां 24 घंटे सिंगल फेज बिजली किसान भाइयों को दी जाएगी ताकि उनका

(श्री बद्रीलाल जाट)

बेटा और बेटी उस अंधकार की चिमनी में नहीं पढ़ें, वह अपना भविष्य सुधारने के लिए उस बिजली का उपयोग करके इस ग्लोबलाइजेशन के समय में अपना सुन्दर भविष्य बनाने का प्रयास करें।

मैं इस सुअवसर पर कहूंगा चाहे कृषि आपके द्वार हो या कृषि महोत्सव जैसी बात हो, यही नहीं मैं बोर्ड का मेम्बर होने के नाते कहना चाहता हूं मुख्य मंत्री महोदया ने तीन करोड़ का फण्ड बनाकर विकास की गंगा बहाने का प्रयास किया। यही नहीं जो भाई व बहन पीएच.डी. कृषि विभाग में करेगा उसको 10 हजार रुपये की सहायता राशि दी जाएगी। यह एक अनूठी पहल है, एक अनूठा सूरज उदय हुआ है, यह कहते हुए हमें गर्व है। मैं माननीय मुख्यमंत्री महोदय के लिए तीन शब्द कहना चाहूंगा चाहे रोटी, कपड़ा और मकान हमारी पूर्ववर्ती सरकार कहती थी, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह है कि ..(व्यवधान)..

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : सभापति महोदय, यह कोई रोने-धोने की बात है? प्रजातंत्र की व्यवस्था है, कभी इधर, कभी उधर, यह क्या रोने वाली बात है? ..(व्यवधान)..

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : माननीय मुख्य मंत्री महोदया ने जो तीन रूप निभाये हैं निश्चित रूप से चाहे दुर्गा का हो, चाहे सरस्वती का हो, चाहे लक्ष्मी का हो, लक्ष्मी के रूप में उन्होंने कहा खजाना खाली नहीं। एक भी दिन ओवरड्राफ्ट नहीं। यह राजस्थान का गौरव है और उन्होंने दुर्गा के रूप में दृढ़ इच्छाशक्ति दिखायी। हमारे पूर्व मुख्य मंत्री कहते थे खजाना खाली, परंतु योजनाओं का, केवल भाटों का शिलान्यास किया था उनकी फंडिंग और फंक्शनरी की व्यवस्था नहीं की थी। वसुंधरा जी ने आते ही फंड व फंक्शनरी की व्यवस्था करके उनके जो भाटे लगे हुए थे, उनके जो अधूरे कारनामे थे वे किसान के लिए बाधा नहीं बने, नौजवान को व्यवस्था मिले और राजस्थान का गौरव बढ़े इसके लिए उन्होंने सारी व्यवस्था की है। मैं गर्व से कहना चाहता हूं कि राजस्थान में वसुंधरा राजे के नेतृत्व में आज तीन साल पूरे हुए, उसके बाद उनका जो काम है, जो कार्यशैली है वह राजस्थान का गौरव बढ़े, एक इतिहास कायम हो और यह कहूंगा कि राजस्थान में चुनाव कराया, विधान सभा के बाद लोकसभा के चुनाव हुए, हमारे प्रतिपक्ष के भाइयों की धड़कन

(श्री बद्रीलाल जाट)

धड़कने का प्रयास कर रही होगी लोकसभा में इनको राजस्थान की जनता ने यह साबित कर दिया कि आपकी जरूरत नहीं है, 59 साल तक आपने जो खून चूसा है वह काफी है, 25 में से 21 भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा के सदस्य वहां चुनकर भेजे कि आप राजस्थान का नेतृत्व कीजिए। इसके बाद नगरपालिका में, उसके बाद पंचायती राज में ..(व्यवधान)..

श्री सभापति : अब आप कंक्लूड करें।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : यही नहीं हमारे किसानों के कृषि मण्डियों के चुनाव नहीं हुए थे, डेयरी विभाग में 16 साल के बाद हमारे राजस्थान की यशस्वी मुख्यमंत्री महोदया ने दृढ़ संकल्पित होकर दुर्गा का रूप लेकर हमारे भारतीय जनता पार्टी का चेयरमैन बनाया उसके लिए तहेदिल से बधाई देना चाहता हूं कि राजस्थान के हित में उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति है, काम करने का नेक इरादा है। मैं इस सुअवसर पर यह भी कहना चाहता हूं कि उन्होंने ऐसी कोई योजना नहीं छोड़ी जिसके माध्यम से उनके मन में कोई पीड़ा रहे।

आज हमारे प्रतिपक्ष के सदस्य यदि नरेन्द्र मोदी का नाम लेंगे तो उनके मन में बड़ी तड़फन होगी, एक शख्स है नरेन्द्र मोदी जिसने पूरे हिन्दुस्तान का गौरव बढ़ाया और गोधरा जैसे काण्ड को उन्होंने नेस्तनाबूद कर दिया और हिन्दुओं का गौरव बढ़ाकर यह साबित कर दिया कि नेतृत्ववान व्यक्ति हमेशा भारत का गौरव बढ़ाएगा। निश्चित रूप से मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को बधाई देते हुए यह कहने का प्रयास करूंगा कि भैरोंसिंह जी ने जिस तरह विकास की नींव का पत्थर बन कर राजस्थान का गौरव बढ़ाया। जब-जब भाजपा आई तब से इस विकास की गंगा भगीरथ बनने का प्रयास किया। इन्होंने न सड़कें बनाई, न पेयजल की व्यवस्था, न चिकित्सालय खोले, यहां तक ही नहीं, एक नौजवान भाई को पांच साल में रोजगार नहीं दिया। ये किसानों के चोंचले यहां करके ये केवल घिनौना नृत्य करके यह साबित करना चाहते हैं कि हम किसानों के हमदर्दी हैं। (व्यवधान)

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री) : ये तो हमेशा ही यह शोर करते थे कि खजाना खाली है।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : मेरे ये प्रतिपक्ष के सदस्य हैं इनको कहना चाहता हूं कि राजस्थान का गौरव जगा है, राजस्थान का नौजवान भड़का है और हमारे किसान भाई इसके समय के अनुसार चलने की राह तलाश रहा है और निश्चित तौर से वह आगे तक जाएगा।

(श्री बद्रीलाल जाट)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

मैं इस अवसर पर इस माध्यम से कहना चाहूंगा कि.....

श्री सभापति : माननीय श्री धर्मपाल चौधरी।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : राजस्थान में जो भ्रूण हत्याएं हो रही हैं, निश्चित तौर पर इसको कंट्रोल करेंगे या नहीं होने देंगे तो राजस्थान में पूरे भारत का नाम होगा और राजस्थान का गौरव और ऊंचा बढ़ेगा और आदरणीय मुख्य मंत्री को व पूरे सदन को धन्यवाद देना चाहता हूं कि हमारे किसान भाइयों को आज के दो महीने पूर्व जब यूरिया की त्रासदी हुई उनको वेगन उपलब्ध नहीं हुए और आदरणीय मुख्य मंत्री ने राजस्थान के लिए इस एशिया में सबसे बड़ा डीएपी का संयंत्र कपासन विधान सभा में डालकर एक किसान का गौरव बढ़ाया और किसानों के हित में एक काम किया है। इतिहास का नया पन्ना लिख कर यह साबित कर दिया कि राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया नौजवानों को रोजगार देंगी, किसान के हित का काम करेगी, जो रिक्शा चलाएगा उसके बीमे की व्यवस्था करेगी। यहां तक ही नहीं, यदि कोई मजदूर है या हमारे जो लोग मिट्टी को खोदने का काम करता है उसका भविष्य सुनहरा करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी।

श्री सभापति : अब आप वाइंड अप करें।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : मैं इस शुभ अवसर पर माननीय सभापति महोदय, यह कहने का प्रयास करूंगा कि एक आदिवासी को लें, जब भी बच्चा जन्मता है उसके लिए आंगनबाड़ी केन्द्र खोला जाता है उसके बाद जब वह थोड़ा बड़ा हो जाएगा तो प्राथमिक विद्यालय में या उच्च प्राथमिक विद्यालय, मिड-डे मिल नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें और छात्रवृति दी जाएगी, जब वह थोड़ा बड़ा होगा तो महाविद्यालय जाएगा, वहां जाने के लिए उसको स्कूटी मिलेगी और वहां के जाने के बाद यदि वह तकनीकी रूप से सक्षम हो तो उसको कुछ समय के लिए नौजवान को बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा और इसके बाद भी यदि वह संतुष्ट नहीं होता तो उसको वृद्धावस्था पेंशन दी जाएगी। जन्म से लेकर मरने तक राजस्थान की सरकार व्यवस्था करना चाहती है। इसके अलावा, राजस्थान सरकार क्या कर सकती है। मैं इस शुभ अवसर पर आप सभी को बधाईयां देते हुए ...

श्री सभापति : अब आप समाप्त करें।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : मैं इस शुभ अवसर पर शिक्षा मंत्री जी को भी धन्यवाद देने से वंचित नहीं रह सकता।

श्री सभापति : समाप्त करें।

श्री ब्रदीलाल जाट (कपासन) : उन्होंने इस राजस्थान का गौरव बढ़ाया। उन्होंने अपनी विद्वता का परिचय दिया, गांव-गांव और ढाणी-ढाणी जो मेरे भैय्या और बहन केवल राजीव गांधी पाठशाला में जो पढ़ता था और हमारे धनाढ्य और यहां विद्वान जो व्यक्ति थे उनके भाई और बहन प्राइवेट विद्यालय में पढ़ते थे, उस गरीब किसान का बेटा झोंपड़ी में ही उस पेड़ की टहनी के नीचे पढ़ता था, जहां कभी धूल आती थी कभी छांव आती थी तो कभी रेत के टीले में से उड़ती हुई मिट्टी आती, उसका इन्होंने पथ प्रदर्शक बनकर उनके भविष्य निर्माता बनकर भगवान रूपी रास्ता दिखाया और उनको राजीव गांधी पाठशाला के बजाय उनको प्राथमिक विद्यालय जोड़कर के उन्होंने एक इतिहास कायम किया है।

श्री सभापति : अब आप समाप्त करें। माननीय श्री धर्मपाल चौधरी। अब समाप्त करें।

श्री ब्रदीलाल जाट (कपासन) : उनके भवन के निर्माण की व्यवस्था की है। मैं इस शुभ अवसर पर माननीय सभापति महोदय, मैं सिंचाई मंत्री जी को भी धन्यवाद देना चाहूंगा कि आपने 59 साल का जो हमारा सूरज अस्त था उसको आपने वाकल डेम देकर इन किसानों के हित के लिए एक-एक बूंद हमारे कपासन विधान सभा में, हमारे क्षेत्र के किसानों के लिए किया और मैं इस सदन के माध्यम से आदरणीय जाट साहब को धन्यवाद देना चाहूंगा, चाहे एनीकट की बात हो। चाहे जनता जल योजना की बात हो चाहे पीएचईडी की व्यवस्था करने की बात हो, यहां तक भी नहीं, मेरा पैतृक गांव में एक लघु सिंचाई परियोजना स्वीकृत करने का भी इन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया है। मैं किसानों की ओर से धन्यवाद देता हूं। मैं यह कहने का प्रयास करूंगा।

श्री सभापति : माननीय सदस्य महोदय, मैं बार-बार निवेदन कर रहा हूं आपसे, आप बिराजें। धर्मपाल जी।

श्री ब्रद्रीलाल जाट (कपासन) : मैं आदरणीय बिजली मंत्री जी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने 8 घंटे की पर्याप्त व्यवस्था की है।

श्री सभापति : अब आप बिराजें।

श्री ब्रद्रीलाल जाट (कपासन) : और यहां तक ही नहीं, फीडर रिनोवेशन के द्वारा कपासन विधान सभा में 30 करोड़ का काम कराकर यह इतिहास कायम किया। किसान जिस तरह चौमासा या वर्षा ऋतु होती है उसमें गजाई जिस तरह फूटती है उसके बावजूद भी हमारी इससे ज्यादा डिपियां फूटी हैं, ट्रांसफार्मर जले हैं, उसके बाद भी मुख्य मंत्री महोदय ने व्यवस्था की है, तुरन्त किसानों को 72 घंटे में ट्रांसफार्मर देकर उनकी व्यवस्था सुचारू रूप से हो, किसानों का भविष्य सुनहरा होना चाहिए, उसका चेहरा हंसता हुआ होना चाहिए। जो किसान का बेटा, बेटी के विवाह के लिए जो तानाबाना बुनता है उसके कहीं भविष्य को चोट न पहुंचे उसके चेहरे पर कोई कलंक नहीं लगे इसके लिए उन्होंने सारी व्यवस्था की है। 24 घंटे के सिंगल फेज के लिए 4 गांवों को चिन्हित किया है, चाहे जासमा हो, चाहे कपासन हो, चाहे सीलपुर हो, जो 3 जीएसएस उन्होंने दिये।

श्री सभापति : माननीय कपासन से आने वाले सदस्य, कृपया आप आसन ग्रहण करें।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : 3 करोड़ के जीएसएस हैं, चाहे हमारा हुमण्ड हो, चाहे हमारा सोन्यण हो, चाहे जासमा, मैं आदरणीय ऊर्जा मंत्री महोदय से मांग करूंगा कि आपके नेतृत्व में बहुत ही बढ़िया बिजली विभाग का काम हो रहा है, इन्होंने एक यूनिट की ऊर्जा उत्पन्न नहीं की। आज राजस्थान के किसानों को मुंह बताने लायक नहीं हैं। यह जब गांव में जाएंगे तो न तो इनको इनकी धर्मपत्नी बरदाश्त करेगी, न इनका बेटा बरदाश्त करेगा और न ही जनता बरदाश्त करेगी। यही हल्ला करने का सुरक्षित स्थान है क्योंकि बाहर पुलिस है, यहां कोई आ नहीं सकता।

श्री हीरालाल (निवाई) : भगवान आपको हमेशा ऐसा ही रखे। ...(व्यवधान)...

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : आप सुरक्षित रहो।

श्री हीरालाल (निवाई) : हमेशा रोते ही रहे, हू, हू ही करते रहो। ...(व्यवधान)...

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : आदरणीय ऊर्जा मंत्री जी से मांग करूंगा कि चाहे मेरा सूरजपुरा पाण्डेली हो या हमारा रोलिया हो, अतिशीघ्र 33 केवीए आप स्वीकृत करके इस कपासन का गौरव बढ़ाएंगे। मैं आदरणीय चाहे परिवहन मंत्री हो, चाहे हमारे खेल मंत्री हैं, खेल मंत्री जी को भी बधाईयां देना चाहता हूं, आपने जो हमारे ओलम्पिक के जो भाई और बहन वहां से जीत कर आएंगे उनका गौरव बढ़ाएंगे और उनकी आने वाली बाधाओं को दूर करेंगे। मैं आदरणीय सार्वजनिक निर्माण मंत्री जी को बधाईयां देना चाहता हूं।

श्री सभापति : आदरणीय सदस्य, माननीय मुख्य मंत्री जी 6 बजे जवाब देंगी, आप कृपया बिराजें। ...(व्यवधान)...

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : कि आपने सब गांवों को जोड़ा, मिसिंग लिंक में जो भाई और बहन जो हमारे आए उनको हम देंगे तो निश्चित रूप से राजस्थान का गौरवशाली इतिहास होगा। ...(व्यवधान)...

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन) : मैं इस शुभ अवसर पर यही कहना चाहूंगा कि

'हवा के तेज बहाव को तूफान कहते हैं, जो तूफान को रोक सके उसको पहाड़ कहते हैं, पहाड़ को जो विकास के रूप में सृजित करे उसको वसुंधरा राजे सिंधिया कहते हैं।'

जयहिन्द, जयभारत।

श्री सभापति : श्री धर्मपाल चौधरी।

श्री धर्मपाल चौधरी (मुण्डावर) : माननीय सभापति महोदय, सबसे पहले तो मैं धन्यवाद देना चाहता हूं विधान सभा के अध्यक्ष महोदय को, जिन्होंने आज कांग्रेस वालों को रोने के लिए दो घंटे जो आपके साथ की है, शायद आपने सोचा भी नहीं होगा क्योंकि आप किसान के हितैषी हो, आप किसान के लिए जो आंसू बहा रहे हो, किसान के लिए जो रोना रो रहे हो, असलियत के अन्दर आपका क्या है, वह उजागर आज सामने हो गया, आधे आदमी अन्दर रह गये, हू हू बन्द हो गई, अब कुछ जा कर पानी पी आओ और पानी नहीं

(श्री धर्मपाल चौधरी)

तो पानी के साथ और कुछ ले आओ जो आपके पास ताकत आ जाए। इसके बाद में मैं धन्यवाद देना चाहता हूं, माननीय मुख्य मंत्री जी को जिन्होंने 9 तारीख को इस विधान सभा में राजस्थान का बजट पेश किया है और इस बजट के अन्दर जब भूरि-भूरि प्रशंसा पूरे राजस्थान में होने लगी, राजस्थान के अन्दर ही नहीं, अशोक गहलोत जी जो यहां बिराजते नहीं लेकिन अख़बार के माध्यम से हम देखते हैं, अशोक गहलोत जी ने भी कहा कि यह चुनाव का बजट है, यह चुनाव का बजट है। चुनाव तो बहुत लम्बे दूर हैं और अन्दर से आप लोग भी जानते हो कि इस बजट के अन्दर जो राजस्थान के अन्दर हमारी मुख्य मंत्री महोदय ने जो बजट पेश किया है, जिन्होंने महिलाओं का ध्यान रखा, उस गांव में रहने वाले गरीब का ध्यान रखा, किसान का ध्यान रखा, व्यापारी का ध्यान रखा, सरकारी कर्मचारी का ध्यान रखा, प्रत्येक वर्ग का ध्यान रखा है और ऐसा एक बजट पेश किया। अब आप कहते हो किसान के हित की बात करते हो। केन्द्र की सरकार, आप जब यहां पर किसान की बात करते हो, हिन्दुस्तान के अन्दर केन्द्र में कांग्रेस की सरकार है और कांग्रेस की सरकार ने महंगाई, आज गैस सिलेण्डर पहले गांव के अन्दर और इस शहर के इस तरह से मिलता था, रेहड़ी के ऊपर और आज गैस सिलेण्डर की क्या हालत है। आज यूरिया खाद की क्या हालत है, किसान की बात करते हो, यूरिया खाद कितने किसानों को मिला आज बात करते हो आप किसान की किसान के लिए आपने डीजल, पेट्रोल का दाम क्या किया। आप बात करते हो किसान की। केन्द्र की सरकार ने दिया क्या, सिवाय महंगाई के अलावा कुछ नहीं दिया और यहां पर आप कोरी बातें करके एक नारे लगाकर और कितना प्रयास किया गया कि मुख्य मंत्री जी राजस्थान के किसानों को कुछ देना चाहती हैं, मुख्य मंत्री अपने मुखारविंद से कुछ कहना चाहती हैं लेकिन आपको सुनना पसंद नहीं आता क्योंकि आपको तो पता है कि यहां पर अगर किसान को कुछ मिल गया तो हमारी बात यहां चलेगी नहीं क्योंकि बजट के बारे में आपके पास कुछ है नहीं, राजस्थान की जनता को कुछ कहने के लिए आपके पास कुछ है नहीं। आपके पास एक ही बात रह गई है, किसी माध्यम से इस राजस्थान की जनता का कितना पैसा लग रहा है। यहां पर एक दिन क्वेश्चन आवर नहीं चला। आपने एक दिन नहीं चलने दिया। उसके बाद में आप विधान सभा के अंदर आते, आज आप बात करते हो ओलावृष्टि की, आप बात

(श्री धर्मपाल चौधरी)

करते हो अकाल की, यहां पर आप चर्चा कीजिये, यहां पर बैठकर के हमारी बात सुनिये, आप अपनी बात को कहिये, क्या इसमें केन्द्र सरकार कर सकती है, क्या इसमें राजस्थान की सरकार कर सकती है, हमारी मुख्य मंत्री करना चाहती हैं। क्या आपके पास ही ठेकेदारी है किसान की? क्या आप ही किसान के ज्यादा हितैषी हो? किसान ने हमको भी वोट दिया, हम भी किसान के वोट से इस विधान सभा के अन्दर आये हैं। लेकिन आप किसान का भला नहीं चाहते, आप तो सिर्फ यहां विधान सभा के अन्दर शोर-शराबा करके राजस्थान के किसान को यह संदेश देना चाहते हो कि हमने आपके लिए वहां विधान सभा में लड़ाई लड़ी। विधान सभा में हो-हो नहीं है, यह हो-हो भी आपकी बंद हो गई, आपकी बोलती यहां पर बिल्कुल बन्द हो चुकी है और गांवों में जाओगे तो वो किसान भी आपकी बोलती बंद करेगा कि राजस्थान की विधान सभा में मुख्य मंत्री जी कुछ सहायता देना चाहती थीं, मुख्य मंत्री किसानों के लिए कुछ करना चाहती थीं लेकिन आपने नहीं करने दिया। इसलिए शांति करके हो-हो करना छोड़ दो और पानी पीकर के आराम से बैठकर सुनो।

पिछली बार जो बजट आया इसके अन्दर शिक्षा के अन्दर राजस्थान की सरकार ने तीन साल में अभूतपूर्व काम किया है। आपकी सरकार के समय तो सोनिया गांधी जी कैसे खुश रहें, सोनिया गांधी जी खुश रहनी चाहिए इसलिए राजीव गांधी पाठशालाएं खोल दीं और 1200 रुपये का पैरा टीचर उसमें लगा दिया। हमारी सरकार ने आते ही कहा कि गांव के उस बच्चे के साथ खिलवाड़ नहीं होगा। 1200 रुपये तनख्वाह का मास्टर पढ़ायेगा क्या? राजस्थान की सरकार में मुख्य मंत्री जी ने 50 हजार मास्टरों की भर्ती की। उनको सबको प्राथमिक शाला में क्रमोन्नत किया। जहां-जहां नये स्कूल खोलने की जरूरत पड़ी वहां पर नये स्कूल खोले और जहां-जहां स्कूल क्रमोन्नत करने की आवश्यकता पड़ी वहां क्रमोन्नत किये। इसके अलावा स्कूल क्रमोन्नत और नये खोले ही नहीं, उनके साथ उनमें भवन का भी निर्माण किया। हमारे छोटे-छोटे बच्चे पेड़ की टहनी के नीचे नहीं पढ़े, वो अच्छे भवन में बैठकर के पढ़े उसके लिए साथ-साथ भवन की भी व्यवस्था की।

आपने घूघरी दी, गेहूं उबालकर गांव के बच्चों को खिलाया। हम तो गांव के लोग हैं, जब गांव में कोई बच्चा पैदा होता है तब घूघरी उबालकर खिलाते हैं। हर दिन तो भैंस भी नहीं खा सकती। आपने उस घूघरी के माध्यम से गांव

(श्री धर्मपाल चौधरी)

के बच्चों का स्वास्थ्य सुधारने की कोशिश की। हमारी मुख्य मंत्री जी ने मिड-डे मील के रूप में अलग-अलग दिन अलग-अलग तरीके का भोजन मिले और वह 5वीं क्लास तक ही नहीं, अब 8वीं क्लास तक के बच्चों को भी अच्छा भोजन मिले उसकी भी व्यवस्था की। शिक्षा के क्षेत्र में इसके बाद में अभी 40 हजार मास्टरों की भर्ती की, इस बजट के अन्दर 12300 मास्टरों की और भर्ती, इस तरह शिक्षा के अन्दर भी अभूतपूर्व कार्य किया।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

1500 स्कूलों को माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करना, 600 स्कूल को उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करना, यह सब किया इसलिए शिक्षा के जगत में अभूतपूर्व काम हमारी मुख्य मंत्री करना चाहती हैं।

सड़कों के मामले में आप लीजिये। आज जो गांवों में सड़क बन रही है इसका सबसे बड़ा श्रेय इस देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को है। उन्होंने गांव-गांव में सड़क पहुंचाने का काम किया कि 500 तक की आबादी तक के गांव में सड़क जाएगी, 250 तक की आबादी के गांव में सड़क जाएगी और फिर काम किया राजेन्द्र जी राठौड़ ने। एक 200 करोड़ रुपये की मुख्य मंत्री सड़क योजना बनाकर के गांव में भी अच्छी सड़कें बने उसका इन्तजाम किया। आप डब्ल्यूबीएम सड़क बना गये, डब्ल्यूबीएम सड़क को डामर की रोड हमारी सरकार ने किया। अब भी सरकार सड़कों के मामले में इस राजस्थान में गांव के लोगों को अच्छी सड़क मिले उसकी व्यवस्था करने में लगी हुई है।

पीने के पानी की व्यवस्था की बात लो। हम पिछली बार वहां पर बैठते थे। हम भी पिछली बार विधायक थे। हैण्डपम्प के लिए पूरे पांच साल में आपने एक-एक विधान सभा क्षेत्र में 100-100 हैण्पम्प नहीं लगाये। अब कांग्रेस का एमएलए भी हमारे मंत्री जी के पास आता है और वहां पर मंत्री जी लिखते हैं 100 हैण्डपम्प। हाथ पर हैण्डपम्प लिख दें तो हैण्डपम्प लग जाता है। गांव में पीने के पानी की योजनाएं जो हमारी सरकार ने मंजूर की हैं, फ्लोराइड से मुक्ति मिले गांव के आदमी को, उसकी योजनाएं मंजूर की हैं। इन योजनाओं से पानी के मामले में भी राजस्थान की सरकार ने अभूतपूर्व काम किया।

(श्री धर्मपाल चौधरी)

सिंचाई के मामले में भी राजस्थान की सरकार ने 400 करोड़ रुपया खर्च किया। आप लोगों ने क्या किया? आप लोग तो हाय-हाय के नारे लगा रहे हैं, 40 साल हिन्दुस्तान में राज आप लोगों ने किया लेकिन किसान को, उस मजदूर से आपने जाति के नाम पर वोट लिया, इसलिए इस हाय-हाय को छोड़ें।

सिंचाई के बाद में चाहे ऊर्जा हो, हर क्षेत्र में राजस्थान की मुख्य मंत्री काम करना चाहती हैं। इस बजट में महिलाओं के लिए दिया। गांव में रहने वाली हमारी बहन-बेटी शिक्षा से जुड़े, उसको साईकिल मिले, उसको पैसा मिले दूर जाने के लिए।

बी.पी.एल. परिवार के लिए आप लोगों ने सर्वे कराया और तीन लाख परिवार उससे वंचित रह गये। हमारी मुख्य मंत्री जी ने कहा कि उनको सरकार सहायता करेगी। इसलिए अच्छा बजट पेश किया इसके लिए धन्यवाद दो। हाय-हाय मत करो, किसान की बात करो। किसान की बात हम भी करना चाहते हैं। आप तो सोनिया गांधी जी को राज़ी करके, सोनिया गांधी दो बार राजस्थान में आई थीं, सोनिया गांधी जी दो बार राजस्थान में आईं, बाड़मेर में भी आई थीं और बाड़मेर में आई थीं तो राजस्थान को 100 करोड़ रुपया दिया उन लोगों के लिए। आप इटली की संस्कृति को जानें, हिन्दुस्तान की संस्कृति को जानें नहीं, गांव का किसान कैसे रहता है उसके बारे में जानें नहीं और यहां पर आप किसान के हितैषी बनकर के खड़े हो, आप तो खुद शर्म करो। इस देश की बागडोर कैसे हाथ में आप सौंपना चाहते हो जिसको गांव के अन्दर रहने वाले किसान के बारे में नहीं पता, गांव में रहने वाले मजदूर के बारे में नहीं पता और यहां पर आप बात करते हो। आज हमारे किसान भाई मंगलाराम जी को आपने बिठा दिया। मरने के लिए यहां पर किसान। बी.डी. कल्ला जी यहां पर बैठते जो पार्टी के अध्यक्ष बना रखे हैं, जो पार्टी की चिंता करते हैं वो माननीय सदस्य यहां पर बैठे। गांव के किसान को मारना चाहते हो। सी.पी. जोशी जी यहां पर बैठते तो हमें भी अच्छा लगता। राज करो तो आप और बैठे किसान का बेटा। किसान के बेटे को आपने कभी मुख्य मंत्री नहीं बनाया। आप किसान के बेटे को मरण-शैय्या पर तो चाहते हो लेकिन राज देना नहीं चाहते। इसलिए अगर किसान के हितैषी हो, किसान का हित चाहते हो तो मुख्य मंत्री की बात सुनो, यहां पर आपस में विचार करो। आप केन्द्र सरकार से भी कुछ कहेंगे, हम राजस्थान....

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : धर्मपाल जी, अगर बी.डी. कल्ला जी आमरण अनशन पर बैठ जाए तब आप खुश हो न? डाक्टर बी.डी. कल्ला जी बैठ जाएं तो खुश हो न?

श्री धर्मपाल चौधरी (मुण्डावर) : अगर बी.डी. कल्ला जी बैठते हैं तो राजस्थान की जनता में एक बहुत अच्छा मैसेज जाएगा कि किसान के असली हितैषी बी.डी. कल्ला जी हैं। ये पार्टी के अध्यक्ष भी नहीं हैं, ये यहां पर प्रतिपक्ष के नेता भी नहीं रहे...

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री) : गरीब गोदारा की जगह बी. डी. कल्ला जी को बिठाइये यहां पर।

श्री धर्मपाल चौधरी (मुण्डावर) : यहां पर बैठे, राजस्थान के किसानों के बारे में सोचें। मंगलाराम जी को तो उठाओ यहां से और बी. डी. कल्ला जी को यहां पर बिठाओ जिससे राजस्थान की जनता देखे। (व्यवधान) तो हम तो आपको एक ही निवेदन करना चाहता हूं कि आप बैठिये, मुख्य मंत्री जी की बात सुनिये, मुख्य मंत्री जी क्या राजस्थान के किसानों के हित में कहते हैं.... (व्यवधान) उसके बाद में एक बहुत बड़ी चर्चा करो उसमें और भी अगर मदद की आवश्यकता होगी तो हमारी मुख्य मंत्री जी उसकी मदद करेंगी। सभापति जी, आपने मौका दिया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द।

श्री सभापति : माननीय श्री शांतिलाल चपलोत। (व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

एक माननीय सदस्य : राजा तो सब को बराबर मानता है। राजा तो किसान के बारे में भी जानता है और मजदूर के बारे में भी जानता है। हमारे मुख्य मंत्री जी... (व्यवधान) बजट की कापी ले लो, बजट की कापी देख लो। (व्यवधान)

श्री भागीरथ चौधरी (किशनगढ़) : .... देखो, यह बजट पढ़ो। (व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : .... सुनना नहीं चाहते। (व्यवधान)

(श्री शांतिलाल चपलोत)

विपक्ष का काम यह है। (व्यवधान) मुझे भी इतने वर्ष हो गये संसदीय इतिहास में, लोक सभा से लेकर यहां तक पर इस प्रकार का नजारा कभी नहीं देखा, यह शर्मनाक है। मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि कम से कम किसान की बात आप आराम से कहो तो सही। आप क्या कहना चाहते हो? किसान को क्या दिलाना चाहते हो? किसान से क्या चाहते हो यह तो आप सुनो। (व्यवधान) केवल हा-हुल्लड़ से संसदीय परम्पराओं का निर्वहन नहीं होता माननीय सभापति जी। आपकी पार्टी के अध्यक्ष जी बैठे हैं, चीफ व्हिप बैठे हैं और सबको सांप सूंघ गया है, कोई भी इस उत्तरदायित्व को नहीं समझता। (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री) : अपनी सीट पर जाकर बोलें माननीय सदस्य। (व्यवधान) पहले अपनी सीट पर जाइये। (व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : माननीय सभापति जी, हमारी मुख्य मंत्री जी ने इतना शानदार बजट आज तक इस विधान सभा के इतिहास में पेश नहीं हुआ, मैं उन्हें बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। (व्यवधान) .....

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजी)

इतना बड़ा भारी बजट। 8वीं, 9वीं, 10वीं पंचवर्षीय योजना 61,000 करोड़ की थी और अकेली 11वीं पंचवर्षीय योजना...

श्री सभापति : अंकित नहीं हो। अंकित नहीं हो। अंकित नहीं हो रहा है।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री) : ***

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (वन एवं पर्यावरण मंत्री) :***

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री) :***

श्री सभापति : माननीय मंत्रीजी, आप क्यों बोल रहे हैं?

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : तीन पंचवर्षीय योजना का जितना पैसा है और तीन योजनाओं पर जितना खर्च हुआ, 8वीं, 9वीं, 10वीं पंचवर्षीय योजना में 61,000 करोड़ रुपये लगा और 11वीं पंचवर्षीय योजना 68,000 करोड़ रुपये की बनाकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इसको कहते हैं इतना पैसा। एक समय मैंने वह भी देखा...

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर) :***

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : ...बाढ़ में हम क्या करें, हमारे पास पैसा नहीं है। हम भूखे हैं। (व्यवधान) इस प्रकार का व्यवहार हमारे मुख्य मंत्रीजी ने नहीं किया। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बैठिये बैठिये।

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : माननीय सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि भैरोंसिंह जी शेखावत जब मुख्य मंत्री थे 1998 में... (व्यवधान) 1998 तक 24,000 करोड़ रुपये का ही कर्जा था और उसमें 18,000 करोड़ रुपये की परिसम्पत्तियां भैरोंसिंह जी शेखावत के कार्यकाल में सृजित की गई थीं। मैं पूछना चाहता हूं, 52,000 करोड़ रुपये का कर्जा माननीय पूर्व मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत के जमाने में हुआ और उसमें परिसम्पत्तियां क्या निर्मित हुईं? यह इस राजस्थान की जनता को जानने का अधिकार है। (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

श्री सभापति : अंकित नहीं हो।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री) : ***

श्री सभापति : माननीय मंत्री महोदय, आप क्यों खड़े हो रहे हैं?

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (वन एवं पर्यावरण मंत्री) : ***

श्री सभापति : इनका अंकित नहीं हो रहा है। किसी का अंकित नहीं हो रहा है।

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर) : ***

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (वन एवं पर्यावरण मंत्री) : ***

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा) : ***

श्री भागीरथ चौधरी (किशनगढ़) : ***

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप बिराजिये।

श्री भागीरथ चौधरी (किशनगढ़) : ***

श्री सभापति : आप बिराजिये। (व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत (मावली) : ...उसमें मैं भी मंत्री था और राजकोष में इतना पैसा नहीं होते हुए भी भैरोंसिंह जी शेखावत ने उस समय किसानों का लगान माफ किया, किसानों के 10,000 तक के कर्जे माफ किये। एक-दो नहीं, 350 करोड़ रुपये के कर्जे माफ किये। किसानों के मिनिमम चार्जेज समाप्त किये। करीब-करीब 450 करोड़ रुपये के कर्जे हैं, बिजली के मिनिमम चार्जेज समाप्त किये, लगान माफ किया और माननीय वसुन्धराजी आईं, उन्होंने कितने काम करके दिखाये हैं, ये आपके समक्ष हैं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

माननीय सभापतिजी, कुशल प्रबन्धन था, हमारी मुख्य मंत्रीजी का कुशल प्रबन्धन है और इसलिए ही केन्द्र सरकार ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मोंटेक सिंह अहलूवालिया, जो कि हमारे योजना आयोग के अध्यक्ष हैं, उन्होंने भी राजस्थान की प्रशंसा की है और कहा कि राजस्थान का आर्थिक मैनेजमेंट बहुत सुदृढ़ है। मैं मुख्य मंत्रीजी को इसके लिए बधाई देना चाहता हूं। सन् 1991-92 के बाद, 16-17 साल बाद, पहली बार घाटे का बजट नहीं, लाभ का बजट पेश किया गया है, उसके लिए मुख्य मंत्रीजी और मंत्रीमण्डल के सभी सदस्य धन्यवाद के पात्र हैं।

माननीय सभापतिजी, हमने उम्र बढ़ाई, हमने 58 साल की उम्र को 60 साल किया। राजकोष पर 700 करोड़ रुपये का घाटा पड़ा अभी-अभी। उसको रखते हुए भी हमने कभी भी तंगहाली के हालात की बात नहीं की, न ही उसका बखान किया। हमने यह कहा कि हमारे पास पैसों की कोई कमी नहीं है।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

माननीय सभापतिजी, हमारे यहां चार्वाक हुए थे 2500 साल पहले, उन्होंने कहा कि **"यावत् जीवेत, सुखम जीवेत, ऋणं कृत्वां घृतम् पीवेत, अस्मि भदस्यादास्या पुनरागमन कुता:"** यानी जब तक जीओ, सुख से जीओ और कर्जा लेकर घी पीओ। यह मनुष्य जन्म बार-बार आने वाला नहीं है। यही काम अशोकजी गहलोत ने किया। कर्जा लेकर परिसम्पत्तियां नहीं बनाई और मात्र आज घी पीने का काम किया। उसके लिए वे बधाई के पात्र नहीं हो सकते। उन्होंने इस राजस्थान को तंगहाली की हालत में छोड़ा।

(श्री शांतिलाल चपलोत)

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

माननीय सभापतिजी, मैं लन्दन गया था। मुझे वहां एल.एन. मित्तल मिले थे। उनको मैंने कहा, आओ, राजस्थान में कारखाना लगाओ और अशोक जी गहलोत ने सिसोदिया गार्डन में बहुत बड़ा शो किया, करोड़ों रुपये उसमें खर्च किये। राजस्थान में एक भी इन्वेस्टमेंट उन पांच सालों में नहीं आया, किस बात की बात करना चाहते हो?

माननीय सभापतिजी, हमारी सरकार ने नारी को समर्पित बजट पेश किया है और हमने कहा है कि **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"** जहां नारियों का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं। हमने महिला सशक्तीकरण के वर्ष में उनको ध्यान दिया। महिलाओं की बटालियन अलग से बनाई, उसके लिए ध्यान दिया। महिलाओं का सब प्रकार से सर्वांगीण विकास हो, उसके लिए ध्यान दिया।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार का एक ही दायित्व है **"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दु:खभाग्भवेत्"** कोई लोग दु:खी नहीं हो, कोई लोग आर्तता को प्राप्त नहीं हो, कोई लोग कष्ट में नहीं रहे। गरीब के आंसू पोंछना हमारी सरकार का पहला दायित्व है और जो सरकार निभा रही है।

माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार को केन्द्र सरकार ने यह समझा कि इनका फाइनेंशल मैनेजमेंट अच्छा है, डैट वेवर किया, एक-दो नहीं, 309 करोड़ रुपये का और अब की बार भी डैट वेवर होने वाला है। मुझे यह बता दें, पिछली वाली पांच साल की सरकार का कभी केन्द्र सरकार ने डेट वेवर किया है? इनका मैनेजमेंट बहुत ही पुअर रहा है, उसके लिए धिक्कार के पात्र हैं।

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

माननीय सभापति महोदय, हमारा एजुकेशन का स्तर बढ़ा है। आज तक राजस्थान को कभी भी गौरव प्राप्त नहीं हुआ। यूनेस्को पुरस्कार पहली बार राजस्थान के माननीय शिक्षा मंत्रीजी ने कठिन परिश्रम करके दिलाया है।

(श्री शांतिलाल चपलोत)

1,500 सैकण्डरी स्कूल, 600 हायर सैकण्डरी स्कूल इस बजट में दी है और पहले भी 16,000 प्राइमरी स्कूल, 5,000 मिडल स्कूल और सैकड़ों सैकण्डरी और हायर सैकण्डरी स्कूल कर चुके हैं। कितना अच्छा मैनेजमेंट किया है।

इसी तरह से रोडों में आज हम हिन्दुस्तान भर में सर्वश्रेष्ठ घोषित किये गये हैं। रोड का काम राजस्थान का सबसे अच्छा है और इस साल भी बजट में 1,000 किलोमीटर रोड और 1,000 किलोमीटर कृषि उपज मण्डी की रोड़ बनाना तय किया है, यानी कुल 2,000 किलोमीटर रोड़।

इसी तरह से पीने के पानी के लिए माननीय सांवर लालजी, माननीय मंत्री महोदय ने सिंचाई के नाते और पेयजल की दृष्टि से भी जो काम किया है, वह कभी नहीं हुआ।

मैं गृह मंत्रीजी को भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि उनके कार्यकाल में घटनाएं कम घटी हैं, अपराध कम हुए हैं। उनके लिए वे बधाई के पात्र हैं

(प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी)

माननीय सभापति महोदय, सब हमारे इतिहास को भूल गये, हाड़ी रानी को कौन नहीं जानता, उसके उत्सर्ग को कौन नहीं जानता, उसके नाम पर एक बटालियन बनाना तय किया है। इस तरीके के काम हमारे यहां अभी इस बजट में किये गये हैं। माननीय सभापतिजी, बच्चियों को दो किलोमीटर, नवीं पास हो जाय और उसके बाद दो किलोमीटर जाना पड़ता है, साईकिल की व्यवस्था सरकार ने सभी बच्चियों के लिए की है तीन सौ रुपये में। यह कितना बड़ा अचीवमेंट है। क्या कोई सोच सकता है, क्या कभी किसी ने इस प्रकार की करने की कोशिश की है। माननीय सभापतिजी, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, काफी कुछ इस बजट में किया गया है, मैं ज्यादा समय जाया नहीं करना चाहता, आप अभी घंटी बजायेंगे और कहेंगे कि आप बैठ जाइये, मैं इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्रीजी ने बहुत कुछ किया है, बहुत कुछ करेंगी, इसमें कोई संदेह नहीं। 11 हजार 500 करोड़ रुपये की इस साल की सालाना योजना है। कितनी बड़ी योजना है, कितना भारी स्कूलों का काम होगा, यह भूतो न भविष्यति, इस प्रकार का काम हो रहा है। मैं, सभापतिजी, इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे लोग...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्यगण।

श्री शांतिलाल चपलोत : बलवान हों, आरोग्यवान हों और करवंतुअम विसम् आरोग्यम, यह हमारे बजट में तय किया है और आरोग्य के लिए लोग अच्छे रहें, बलवान रहें, चिकित्सा की पूरी व्यवस्था हो, क्योंकि आपने घंटी बजा दी है और मेरा मर्यादा का पालन करना धर्म है इसलिए आरोग्य के लिए और चिकित्सा व्यवस्था के लिए जो काम किये जा रहे हैं, रोड्स के काम किये जा रहे हैं, स्कूलों के काम किये जा रहे हैं, पंचायत की तरफ से काम किये जा रहे हैं, सभी की तरफ से काम किये जा रहे हैं, उनको बधाई देना चाहता हूं। मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी से एक अनुरोध करना चाहता हूं, राजस्थान में लैण्ड टैक्स लग रहा है माइनिंग पर, उस पर जरूर आप विचार करें। एक हैक्टेयर पर दस रुपये, पन्द्रह रुपये एक-एक वर्गमीटर पर लग रहा है...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्यगण, फिर आपके बच्चे हैं और वो किस प्रकार की धारणा बना रहे होंगे...(व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत : यह बहुत ज्यादा है, इसके बारे में विचार करने की आवश्यकता है। इस उद्योग से कम से कम बीस लाख लोग इस खनिज उद्योग से जुड़े हुए हैं। (व्यवधान) और दूसरा निवेदन करना चाहता हूं, मैं आपको बधाई भी देना चाहूंगा कि पचास-साठ सालों में कभी भी आई.आई.टी. के लिए राजस्थान का नाम प्रस्तावित नहीं हुआ। राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के लिए आई.आई.टी. आयेगी और वह राजस्थान में आयेगी, यह आपके सद्प्रयासों का फल है। पर मेरी यह इच्छा है कि आप उदयपुर में आई.आई.टी. खोले ऐसा मेरा अनुरोध है। और राजस्थान हाई कोर्ट की बैंच उदयपुर में स्थापित हो, देवास थर्ड और फोर्थ स्टेज के लिए, देवास के लिए थर्ड और फोर्थ स्टेज यदि बन जायेगी तो राजसमंद झील कभी सूखी नहीं रहेगी, उदयसागर में भी पानी होगा, सारा क्षेत्र खुशहाल होगा। इन्हीं शब्दों के साथ आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, जय हिन्द।

श्री सभापति : माननीय श्री टीकम चन्द कांत। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान : माननीय सभापति महोदय, हमको नहीं बुलवाओगे क्या?

श्री सभापति : अब आप तो बोल ही नहीं रहे तो फिर बुलाना ही पड़ेगा। आप तो...(व्यवधान)

श्री टीकम चन्द कांत (सिवाना) : माननीय सभापति महोदय, इस सदन में जब मैं 22 फरवरी, 1991 को याद करता हूं...(व्यवधान)

श्री सभापति : आप भी अपनी-अपनी सीटों पर जाकर बैठ जाइये, अभी आपको भी बुलवाऊंगा। (व्यवधान) आप लोगों को किसने मना किया है बोलने से। आप भी अपने स्थान पर विराजिये, जाइये।

श्री टीकम चन्द कांत : सभापति महोदय, मैं आज इस सदन में 22 फरवरी, 1991 को याद करता हूं, उस समय महामहिम राज्यपाल प्रोफेसर देवीप्रसादजी चट्टोपाध्याय ने अपने अभिभाषण के अंदर एक श्लोक कहा था, ऋग्वेद से वह श्लोक था- **समानो मंत्र: समिति: समानं मन: सह चित्तमेषाम्। समानं मंत्रमभि मंत्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि** ।। यह ऋग्वेद का श्लोक था सभापति महोदय। (व्यवधान) कहने का कुल मिलाकर तात्पर्य यह था, आज यह दृश्य देखकर मैं कह रहा हूं, आप सबका लक्ष्य एक ही है, महामहिम राज्यपाल महोदय के यह शब्द थे, यह अभिभाषण के अंग थे, आप सबका लक्ष्य एक ही है, एक ही सभा में आप बैठे हैं, अत: आपका मन और चिंतन भी एक सा ही होना चाहिए। एक सम्मति के साथ आपकी मंत्रणाएं आयें, यही मेरी प्रार्थना है। इसी एक स्वर से मैं आप सब का एक साथ आह्वान करता हूं, मेरा विश्वास है कि इसी भावना के अनुसार विधायक के रूप में आप प्रदेश की जनता की आंकाक्षाओं के अनुरूप कार्य करेंगे। आज निराशा हो रही है सभापति महोदय, यह दृश्य देख कर के, क्या यह लोकतंत्र है, किसको कहते हैं यह प्रजातंत्र, क्यों है यह सदन। यह सदन इसलिए है कि हम यहां चर्चा करें, हम वाद-विवाद करें, किसी निर्णय पर पहुंचे, कुछ न कुछ राजस्थान के किसी कस्बे का, किसी जनता का जो कुछ भी बात है, हम यहां कहें। यह सदन निर्णय लेता है, यह सदन इस राजस्थान प्रदेश के भाग्य का निर्माण करता है और इसके अंदर आज हम यह दृश्य देख रहे हैं तब ऐसा लगता है कि यह पूरी की पूरी जनता जो इस प्रदेश की है, किस आशा से आपको देख रही है। आपने किसान के प्रश्नों को आगे नहीं रखा, किसान की मांग क्या है आपने आगे नहीं रखी, किसान ओलावृष्टि हुई है, आपने रखी नहीं सामने, यह सरकार तो तय कर चुकी है कि हमें देना है किसान को, यह सरकार तो निश्चय कर चुकी है कि इस किसान को हमें कुछ देना है, उसके इस संकट की घड़ी के अंदर उसका हाथ थामना है, उसको सहारा देना है। लेकिन आप उस किसान की मंशा को यहां अभिव्यक्ति नहीं दे पाये, यह सबसे बड़ा आपके ऊपर दोष जाता है। इतिहास में लिखा जायेगा, जब किसान की बात को इस सदन में

(श्री टीकमचन्द कांत)

कहना चाहिए था, जब किसान की पीड़ा को इस सदन में रखना चाहिए था, सरकार से पूछना चाहिए था, कहना चाहिए था, उस समय आप इस प्रकार हो-हल्ला कर रहे थे। सरकार तो परसों से ही तैयार थी, सरकार तो परसों से ही कहने वाली थी कि यह स्थिति जो किसान की हुई है, वह तो कल से ही तैयार थी लेकिन आप लोगों ने समय पर मांग नहीं की।

आज मैं बजट की बात करूं सभापति महोदय, बजट आय-व्यय का लेखा-जोखा होता है वर्ष भर का। रुपया कहां से आयेगा, रूपया किस प्रकार खर्च होगा, किस प्रकार हमें प्राप्त होगा, किन मदों पर खर्च होगा और किस प्रकार राज्य की व्यवस्था चलेगी। राज्य के विषय में जब से वसुंधराजी की सरकार आई है उसके बाद में एक बात चली है वित्तीय प्रबंध की। वित्तीय प्रबंध इस सरकार का श्रेष्ठ है और यह बात साबित हो चुकी है और इस बजट को देखने के बाद में यह कहा जा सकता है कि वास्तव में इस सरकार का वित्तीय प्रबंध श्रेष्ठ है। हमने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं, उल्लेखनीय घोषणाएं इस बजट में हुई हैं। सभापति महोदय, आज या तो भैरोंसिंहजी का शासन था 1991 या 92 में, सोलह वर्षो की समयावधि के बाद पुनः इस बार बजट में रेवेन्यू सरप्लस आया है, सोलह वर्षों के बाद। अब आप इसे वित्तीय प्रबंधन नहीं कहेंगे? बढ़िया वित्तीय प्रबंधन नहीं कहेंगे? हम तो कह चुके हैं, तेरह सौ करोड़ रुपये का हमारे ऊपर अतिरिक्त भार पडा, इस बाढ़ के अंदर जो तबाही मची इस प्रदेश के अंदर, हमको केन्द्र सरकार ने सहायता नहीं दी। और उस राजस्थान के खजाने से भी हमने वह सहायता पूरी की, इतना भार पड़ने के बाद भी 1300 करोड़ का अतिरिक्त भार पड़ने के बाद भी रेवेन्यू सरप्लस रहा। इसे कहा जा सकता है कि वित्तीय प्रबंध इस सरकार का श्रेष्ठ है। मैं दूसरी बातों पर नहीं जाता, जो भी मेरा विश्वास है, दृढ़ मत है जिस राज्य की, जिस सरकार की, जिस प्रदेश की योजना बड़ी हो वह प्रदेश विकास करेगा। श्रीमान् मैं थोड़ा आपको पीछे की ओर ले जाता हूं छठी पंचवर्षीय योजना की तरफ, 1980-81 और 1984-85 योजना का आकार दो हजार पच्चीस करोड़ रुपए था और इनका प्रबंध देखिए, उस समय शासन कांग्रेस का था दो हजार पच्चीस करोड़ की पंचवर्षीय योजना और खर्चा उनका हुआ था 1914.75 करोड़ रुपए और जिस योजना का खर्चा पूरा नहीं होता, वो प्रदेश विकास नहीं कर सकता। इसी प्रकार 1982 और 1983 वर्ष की याद दिला

(श्री टीकमचन्द कांत)

दूं, इस सरकार ने जब कांग्रेस सरकार थी 283.46 करोड़ रुपए का रिजर्व बैंक का ओवर ड्राफ्ट रहा था, यह बहुत बड़ी बात थी और आज जब से वसुंधराजी की सरकार आई है 2004 से लगाकर आज तक ओवर ड्राफ्ट नहीं रहा। इसी प्रकार सातवीं पंचवर्षीय योजना वह मात्र तीन हजार करोड़ की थी, ये आज इसलिए कह रहा हूं कि इतिहास का किस प्रकार से सृजन होता है, तीन हजार करोड़ की योजना थी सातवीं पंचवर्षीय योजना और अगर देखें आठवीं पंचवर्षीय योजना कितनी होनी चाहिए थी? अगर हम 20 प्रतिशत बढ़ोतरी करें तो 3600 करोड़ की होनी चाहिए थी, अगर हम 40 प्रतिशत बढ़ोतरी करते तो 4100 करोड़ की हो जानी चाहिए थी लेकिन श्रीमान् माननीय भैरोसिंहजी का शासन था 1991 और 1992 में जब यह आठवीं पंचवर्षीय योजना बनी उस समय सभापति महोदय, एक छलांग लगाई राजस्थान ने विकास के लिए, जो आवश्यक था विकास हो गया, योजना बढ़ेगी तो ही मतलब विकास होगा और उस समय एक छलांग लगाई और वह तीन हजार की सातवीं पंचवर्षीय योजना आठवीं पंचवर्षीय योजना में साढ़े 11 हजार करोड़ की बनी। वह एक बहुत बड़ी छलांग भी थी और राजस्थान का विकास उस समय प्रारम्भ हुआ था (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के सदस्यों के द्वारा लगातार नारेबाजी)

और उसके पश्चात् आज मैं देख रहा हूं कि इस पंचवर्षीय योजना के अन्दर वह तीन हजार वाली जिस प्रकार से आठवीं पंचवर्षीय योजना 11 हजार में बदली थी, आज यह 11वीं पंचवर्षीय योजना उन तीन पंचवर्षीय योजनाओं को सम्मिलित करने के बाद भी आज 68 हजार (व्यवधान) कितने गुणा हो गई है। इसलिए मैं कह सकता हूं एक विश्वास है, एक दृढ़ विश्वास है, एक आशा, उम्मीद जगी है इस राजस्थान का विकास, अब मतलब जो है, आगे होगा और जो घोषणा इस बजट में की है मुख्य मंत्रीजी ने कि अब यह राजस्थान बीमारू राज्यों से बाहर हो गया। सभापति महोदय, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश ये कुल-मिलाकर बीमारू राज्य कहलाते थे, इनके अंदर सड़कें नहीं थी, शिक्षा का विकास नहीं था, स्वास्थ्य का कोई मतलब विस्तार नहीं था, इन सब चीजों को देखते हुए हम बीमारू राज्यों में थे और आज यह घोषणा राजस्थान बीमारू राज्यों से बाहर आ गया, बधाई की पात्र है यह सरकार, बधाई की पात्र है। वसुंधरा जी, बधाई की पात्र है यहां की

(श्री टीकमचन्द कांत)

मुख्य मंत्री (व्यवधान) सभापति महोदय, जिस दिन बजट जब पढ़ा गया सभापति महोदय, मेरे पास में टेलीफोन आये....

श्री सभापति : अब आप कन्क्लूड करें।

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना) : कि गरीबों ने घर के अंदर दीये जलाये, विकलांगों ने अपने घर में मोमबत्तियां जलाई हैं, विधवाओं ने एक आशा और उम्मीद की है कि हमारा कोई सहारा बना है और उन वृद्धों में भी एक आशा जगी है कि हमको कोई सहारा देने वाली सरकार आ गई है। सभापति महोदय, इस प्रकार कमजोर वर्ग मैं आपसे निवेदन करूंगा, राजस्थान सशक्त बनना चाहिए, राजस्थान शक्तिशाली बनना चाहिए, उसके लिए क्या आवश्यक है? किसी भी भवन, किसी भी इमारत को सशक्त हम तब तक नहीं कह सकते जब तक कि उसके अंदर एकाध पिलर भी कमजोर है, किसी जंजीर को हम सशक्त नहीं कह सकते जब तक कि एकाध भी कड़ी उस जंजीर की कमजोर है और आज का बजट इस राजस्थान को सशक्त बनाने के लिए, इस राजस्थान को समृद्ध बनाने के लिए उन कमजोर क‍ड़ियों की ओर ध्यान दिया है। राजस्थान के उस कमजोर भाग की तरफ ध्यान दिया है, उस कमजोर वर्ग की तरफ ध्यान दिया है जो कि राजस्थान को सशक्त बनाने के लिए, उनको शक्तिशाली बनाना आवश्यक है।

सभापति महोदय, सन् 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक सहस्राब्दी के विकास का लक्ष्य रखा था, संयुक्त राष्ट्र संघ के तमाम राष्ट्राध्यक्ष जो थे वो उनके एक साथ मिले हैं सन् 2000 में और सन् 2000 के अंदर उन्होंने यह तय किया कि- यहां का, इस संसार का, इस दुनिया का, इस कमजोर वर्ग का विकास किस प्रकार हो और उन्होंने इसे नाम दिया था मिलेनियम डवलपमेंट गोल्स। वह 2000 से 2015 तक हमें कुछ अचीव करना है और उसके अंदर यही सारी जो कमजोर क‍ड़ियां हैं समाज की, वह सशक्त बननी चाहिए थी और इस बजट के अंदर माननीय मुख्य मंत्रीजी ने भी अपने सामने एक विजन रखा है एन.डी.ए. का और उसके बाद में अपने सामने 15 भी शामिल है, 20 भी है कि यह कमजोर कड़ी है इस प्रदेश की किस प्रकार से सशक्त की जाए? आज मैं इस तरफ देखूं कुछ ही समय में (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के सदस्यों के द्वारा लगातार नारेबाजी)

(श्री टीकमचन्द कांत)

सभापति महोदय, ये रिजल्ट हैं, परिणाम हैं कुछ जनकों में ध्यान रखने की आवश्यकता है, इस प्रदेश के अंदर और 1996 के अंदर जो मतलब शिशु की मृत्यु दर थी वह शिशु की मृत्यु दर 86 थी प्रति हजार और आज घटकर के 2005-06 के अंदर वह मात्र 65 रह गई है। (व्यवधान) हमारी समाज और यही मतलब चीजे हैं जिससे हमारा विकास हो सकता है जिससे एक विकसित प्रदेश बनाया जा सकता है। इसी प्रकार मृत्यु दर 677 से घटकर आज 445 हुई है यानि हमने और लक्ष्य तय किया है कि 148 तक हम पहुंच जाएं। इसलिए मैं चाहता हूं कि और मेरा बिलकुल पुरजोर शब्दों के अंदर मैं यह कह सकता हूं कि राजस्थान अब विकास की गति में आगे बढ़ रहा है (व्यवधान)

सभापति महोदय, मैं थोड़ा आपको बार-बार यह कह रहा हूं कि इस प्रदेश के अंदर का आदिवासी क्षेत्र है, आदिवासी क्षेत्र को सहायता की जरूरत है, उसको एक विशेष समाज की जरूरत है और उसकी तरफ विशेष ध्यान दिया गया है, भले ही वह सहरिया हो, भले ही वह डूंगरपुर का आदिवासी हो, भले ही वह बांसवाड़ा में बसता हुआ आदिवासी हो, आदिवासी की संभाल इस बार के बजट से लगाकर पिछले बार से लगाकर लगातार उसकी मतलब संभाल की जा रही है और वही कमजोर कड़ी है इस प्रदेश की जिसकी संभाल की जानी चाहिए। अब बहुत सारा विचार हुआ आदिवासी को उसकी जमीन का हक दिया जाए या नहीं, वर्षों तक यह चर्चा होती रही, सरकारें आई और गई, आदिवासी को जहां तक हक देने की बात थी उसकी जमीन का, नहीं दे पाये। मैं धन्यवाद करता हूं वसुंधराजी का मैं धन्यवाद करता हूं मुख्य मंत्रीजी का और धन्यवाद करता हूं इस सरकार का कि उसने आदिवासी को अपनी जमीन का हक दिया।

(अनेक प्रतिपक्षी सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी एवं शोरगुल)

अब सभापति महोदय, मेरा ख्याल है कि आदिवासी क्षेत्रों में रहने वाले बीपीएल परिवारों को जो इन्दिरा आवास के लिए पच्चीस हजार की राशि मिलती थी सभापति महोदय, उसे पच्चीस हजार रुपये जोड़ कर के पचास हजार कर दिया गया इन्दिरा आवास के लिए, यह आदिवासी की विशेष संभाल हुई और याद दिलाऊं कि आपने ...

(श्री टीकमचन्द कांत)

(समय: 18 बजे)

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन।)

मेरा निवास वैसे आबू रोड है आबूरोड के आसपास से आदिवासी गरासिया हैं और उन पर दारू के मुकदमे और उन पर और छोटे-मोटे आपराधिक मुकदमे, उनकी हालत यह हो गयी थी कि वकीलों को फीस देने के लिए उनके पास पैसे नहीं होते थे कभी वो शहर में आकर के बकरा बेचते थे, कभी अनाज जो पैदा हुआ थोड़ा बहुत लेकर उठाकर बेचते थे और वकील की फीस देते थे रोज। छोटे-छोटे मुकदमों के लिए वो चक्कर काटता था, वकील साहब इस बार मेरी पेशी करवा दो मेरे पास पैसे नहीं है मैं आपको अगले टाइम आऊंगा तो बकरा पूरा दे दूंगा। यह हालत होती थी और मैं धन्यवाद देता हूं, मैं इस साहस के लिए भी धन्यवाद देता हूं कि उस आदिवासी की तरफ ध्यान गया, उस आदिवासी की तरफ कुछ बात आपकी बनी और उसके ऊपर से आज वो बीस बोतल दारू के मुकदमे और कई प्रकार के सज़ा के 2928 प्रकरण वापस लिये गये। आदिवासी खुश है, उसने कहा कि कोई न कोई तो तारक मिला रोज के कोर्टों के चक्कर तो मिटे, वकीलों की लुटाई तो, शोषण तो मिटा। इस ओर पहले ध्यान नहीं दिया गया । ध्यान वो ही दे सकता है जो संवेदनशील हो जिसकी सोच हो पूरे राजस्थान को लेकर के जिसकी सोच हो कि पूरे वर्गों को देखें, जिसकी सोच यह हो कि कमजोर क़ड़ियों को ठीक किया जाए तब कहीं प्रदेश आगे बढ़ेगा और यह संवेदनशील सरकार ही ऐसा कर सकती है। अध्यक्ष महोदय, आदिवासी क्षेत्र की कई योजनाएं, सिंचाई की योजनाएं लंबित पड़ी थी। भीखा भाई, वो नहर है उसकी योजना लंबित पड़ी थी उसको संभालने वाला कोई नहीं था लेकिन यह सोच, यह समझ, यह संवेदना जिसके कारण आदिवासी क्षेत्र की लंबित पड़ी योजनाएं वर्षों से जो लंबित पड़ी थी आज पूर्ण की जा रही हैं, जो बाकी हैं, उनको पूरा किया जा रहा है यह सोच है ऐसी संवदनशील सरकार है। मां-बाड़ी, आदिवासियों के अन्दर मां-बाड़ी के माध्यम से बच्चे पोषित आहार प्राप्त करें, स्वस्थ बनें, समाज के अन्दर वो भी सशक्त...।

श्री अध्यक्ष : आदमियों की वाणी बोलिये। पशुओं की जैसे शोर तो मत करो। वाणी बोलो, जो कुछ बोलना हो बोलिये।

(अनेक प्रतिपक्षी सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी एवं शोरगुल)

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : ताकि यह प्रदेश आगे बढ़े, यह प्रदेश समृद्ध रूप से सशक्त बने अध्यक्ष महोदय।

श्री अध्यक्ष : हू-हू तो मत करो । आप वाणी बोलो। बोलो जो बोलना हो। जो बोलना हो वो बोलें, हू-हू क्यों करते हो।

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : अध्यक्ष महोदय, ये जो जेंडर गेप है इससे प्रदेश में नहीं इस देश में हमने नारी को पूजा है, हमने देवी को पूजा है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, अब कृपया आप समाप्त करें।

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : लेकिन इस समाज के अन्दर हम उसका विकास नहीं कर पाये इसलिए इस बार जो बजट के अन्दर उस नारी की तरफ, उस महिला की तरफ, उस देवी की तरफ, इस समाज की आधी जनसंख्या की तरफ जिस प्रकार ध्यान दिया गया। जहां नारियां सशक्त होती हैं, जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता रमण करते हैं यह पहले से शास्त्रों में कहा गया है और आज इस नारी की तरफ ध्यान जाना, मां की तरफ ध्यान जाना, बेटी की तरफ ध्यान जाना, बहन की तरफ ध्यान जाना यह बहुत-बहुत महान कार्य मैं मानता हूं और इस मामले में और वास्तव में सही बात है 1951-52 में ये जेंडर गेप शिक्षा के अन्दर भी 30 और 32 के बीच था और आज भी पुरुष 75 और उसके अन्दर महिला 43 पर है इसका मतलब 32 और 30 का जेंडर गेप था शिक्षा के अन्दर वो आज भी मौजूद है इसलिए आवश्यकता है कि दूर बैठी हुई बच्ची भले ही उसको साईकिल देनी पड़ी, उसको भले ही ट्रांसपोर्टेशन के लिए कुछ पैसा देना पड़े लेकिन वो पढ़े।

(अनेक प्रतिपक्षी सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी एवं शोरगुल)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : क्या गरिमा बढ़ा रहे हैं अध्यक्ष महोदय, सदन की। लांगुरिया गा रहे हैं। इस पवित्र सदन की गरिमा आपके रहते-रहते क्या गरिमा बढ़ा रहे हैं, शर्म नहीं आ रही है इनको।

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : अध्यक्ष महोदय, ये जेंडर गेप नौकरियों में भी था इसकी ओर पहले भी ध्यान नहीं दिया गया और इस बार ...।

श्री अध्यक्ष : आप अपने अच्छे विधायक बनने के नंबर खो रहे हो। तारानगर से आने वाले माननीय सदस्य, आप अपने नंबर खो रहे हो।

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : ...(व्यवधान)... बैठ जाऊं क्या? ...(व्यवधान)... कृषि विभाग के अन्दर अध्यक्ष महोदय, 2006-07 में चार लाख महिलाएं लाभान्वित हुईं यह एक रिकार्ड है और ग्रामीण विकास में गत दो वर्षों में व्यक्तिगत लाभाकारी योजनाओं के अन्तर्गत महिलाओं की भागेदारी पचास प्रतिशत से भी अधिक रही।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया अब आप कंक्लूड करें।

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : 2005-06 में 99 प्रतिशत आवास महिलाओं को आबंटित किये गये और राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम के अन्तर्गत महिला लाभार्थियों का प्रतिशत 58 प्रतिशत रहा है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कृपया समाप्त करें। ...(व्यवधान)...

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : और जैसा कि मैंने कहा था कि पांच सूत्री महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम जो मुख्यमंत्री जी ने अपने बजट में घोषित किया है, मैं उम्मीद करता हूं और यही जो मैं कह रहा था कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने उसके अन्दर जिस प्रकार का निर्णय लिया था इन महिलाओं के लिए, शिशुओं के लिए, गरीबों के लिए वो ही निर्णय इन पांच सूत्री कार्यक्रम के कारण पूर्ण होंगे और जो गरीब हैं एक प्रकार से हर दृष्टिकोण से वह जेंडर गेप पूरा किया जा सकेगा क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने यह घोषणा की थी कि 2015 तक आदमी और औरत समान रूप से पढ़े-लिखे रहने चाहिएं, उनके रोजगार के अन्दर समानता आनी चाहिए और उनका सामाजिक उत्थान भी पूर्णत: होना चाहिए इसलिए मैं यह उम्मीद करता हूं कि इस बजट में वो रास्ता बताया है इस बजट में वो नींव रखी है कि इस प्रदेश का कमजोर वर्ग सशक्त होकर के यह प्रदेश को पूर्ण रूप से सशक्त करेगा और विकास की राह पर यह बढ़ेगा।

श्री अध्यक्ष : आपने तो बायकाट कर रखा है अब आप बीच में क्या बोल रहे हैं? आप तो हू-हू कर रहे हैं।

(अनेक प्रतिपक्षी सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी एवं शोरगुल)

श्री टीकमचंद कांत (सिवाना) : ...(व्यवधान)... मैं बाड़मेर से आया हूं। बाड़मेर के अन्दर 2005 की बीमा की राशि का आबंटन हो गया, बांट दी गई।

श्री अध्यक्ष : आप इतने वरिष्ठ सदस्य होकर क्या तमाशा कर रहे हैं हाउस के अन्दर।

श्री टीकमचन्द कांत (सिवाना) : लेकिन बाड़मेर के अन्दर बाजरे का 26 करोड़ रुपया उस बीमा का 2005 का नहीं मिला।

श्री अध्यक्ष : कुछ तो इस सदन की गरिमा, परम्परा, नियम कुछ तो ख्याल करें आप।

(अनेक प्रतिपक्षी सदस्यों द्वारा सदन में नारेबाजी एवं शोरगुल)

श्री टीकमचन्द कांत (सिवाना) : .. फोन लगाया लोगों से पूछा उन्होंने कहा कि बीमे के अन्दर ...(व्यवधान)... उस बीमा राशि के अन्दर ...।

श्री अध्यक्ष : आप वरिष्ठ सदस्य हैं कुछ तो नियमों का, परम्पराओं का, इस आसन की व्यवस्था का, सदन की गरिमा का, परम्पराओं का कुछ तो ख्याल करें। कुछ तो ख्याल करें।

श्री टीकमचन्द कान्त (सिवाना) : अध्यक्ष महोदय, बीमे में हमारा जो अंशदान 50 प्रतिशत था, 85 करोड़ हमने दे दिया था । 46 करोड़ रुपया प्रीमियम का था और 85 करोड़ रुपया केन्द्र से आना था । अब केन्द्र ने कटौती कर 58 करोड़ रुपया दिया है । ...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य अब आप कृपया समाप्त करें ।

श्री टीकमचन्द कान्त (सिवाना) : मुझे समाप्त करने के लिये कह रही हैं, मैं समाप्त करता हूं ।

श्री अध्यक्ष : हां कह रही हूं ।

श्री टीकमचन्द कान्त (सिवाना) : मैं करता हूं, लेकिन मैं उस साहस की बात करता हूं कि केन्द्र सरकार को बार-बार लिखने के बाद, उसके साथ मीटिंगें होने के बाद और आखिर में यहां की वित्त मंत्री, मुख्य मंत्री जी ने यहां के किसानों के हितों पर एक निर्णय लिया कि केन्द्र सरकार यदि अपना दायित्व पूरा नहीं करती है तो राजस्थान सरकार अपने खजाने से भी किसानों को मदद करेगी और 26 करोड़ रुपये के आदेश कर दिये । अध्यक्ष महोदय, मैं कह सकता हूं कि राजस्थान की मुख्य मंत्री किसान का हित चाहती है, किसान की समृद्धि चाहती है, किसान का विकास चाहती है, यहां के कमजोर वर्ग का विकास चाहती है और इस प्रकार मैं कह सकता हूं राजस्थान सुख समृद्धि की दिशा में बढ़ रहा है, विकास की दिशा में बढ़ रहा है, धन्यवाद ।

श्री अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्री जी ।

(सदन वैल में प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा भारी शोर शराबा)

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले तीन दिन में जो प्रतिपक्ष ने...

श्री अध्यक्ष : सदन की नेता खड़ी हैं, हमारी परम्परा रही है कि सदन की नेता जब खड़ी होती हैं तब माननीय सदस्य शांतिपूर्वक सुनते हैं । मैं आपसे अपील करती हूं कि सदन की नेता खड़ी हैं, सरकार कैसी भी हो सदन की नेता खड़ी हैं आप कृपया उन्हें सुने । मैं आपसे पुनः आग्रह कर रही हूं, माननीय सदस्य नारेबाजी छोड़कर आप अपने-अपने स्थान पर जायें । मैंने आपको बुलाया, डैडलाक को समाप्त करने के लिये मैंने आपको बुलाया आप आये नहीं और अब आप यहां पर वही बात करें मैं चाहती थी कि डेडलाक समाप्त हो । आपको आसन ने बुलाया आप आये नहीं और अब आप भाषण दे रहे हैं, अब आप नारे लगा रहे हैं । माननीय सदन की नेता खडी हों आप ।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, तीन दिन से प्रतिपक्ष ने सदन की कार्यवाही चलने नहीं दी है और बहस में भाग लेने से भी इन्कार किया है । सदन की गरिमा को मिट्टी में मिलाने की कोशिश की है और मैं समझती हूं कि जो भी किसान का हितैषी है तो उन सबको मिलकर जो इतनी बड़ी कहर किसानों के ऊपर आई है उसको मिटाने के लिये आगे आना चाहिये ।

(सदन कूप में प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा लगातार नारेबाजी)

श्री अध्यक्ष : सरकार चले ना चले उन्हें सुने तो सही । उन्हें सुने तो सही आप ।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री) : आप रहने दो । इतनी बड़ी प्राकृतिक आपदा को सम्भालने के लिये हम लोगों ने पूरी गम्भीरता से काम किया । मैं खुद जाकर आई हूं, मंत्री महोदय खुद जाकर आये हैं और हम लोगों ने यह तय कर लिया कि हमारे सब लोग, राज्य मंत्री जगह-जगह गये हैं और आगे तीन दिन में हम लोगों ने हमारे कैबिनेट मिनिस्टर भी, हमारे प्रभारी सैक्रेटरीज सब लोग जायेंगे और जब इसका पूरा-पूरा विश्लेषण हमारे पास आ जायेगा तो हम अपनी तरफ से इसकी घोषणा करेंगे ।

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहती हूं कि बहुत सारे काम पक्ष और प्रतिपक्ष मिलकर करते हैं और राजस्थान में भी यह परम्परा हम लोगों को अपनी विधान सभा में लाने की कोशिश करनी है । मैं समझती हूं कि इस तरीके से व्यवहार करने से कोई भी हित का काम किसी भी किसान का या राजस्थान के किसी भी निवासी का नहीं हो सकता है और मैं समझती हूं कि अगर वाकई में प्रतिपक्ष राजस्थान के लोगों का हित चाहता है तो यह यहां आते और बहस करते और बहस कर के अपनी बात लोगों को बताते ।

अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात मैं यह कहना चाहूंगी कि इनका यह व्यवहार पूरी तरह से लाजिमी है सोनिया गांधी ने लपका कर रखा है यह पूरी बात यहां उतारने की कोशिश कर रहे हैं । अगर दिल्ली में जाकर राजशाही और तानाशाही करते तो मैं समझती हूं कि फिर भी बात बनती परन्तु यहां करने से कोई मतलब नहीं है । अगर वेस्ट बंगाल में तानाशाही और राजशाही की बात करते तो हम मानते । .... (व्यवधान) लोगों को गोली से जहां भूना जा रहा है ...

श्री अध्यक्ष : (व्यवधान) इस सदन में यह पहली बार हो रहा है कि जब सदन की नेता खड़ी हो और इस प्रकार से प्रतिपक्ष उनको सुने नहीं यह आप आज नई परम्परा डाल रहे हैं । यह बहुत गलत है, आप नियमों की लगातार अवहेलना कर रहे हैं । इस सदन की स्वस्थ परम्पराओं को आपने तार-तार कर दिया ।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं सोनिया गांधी नहीं हूं कि इनके हल्ला करने से यहां पर सीट पर बैठ जाऊंगी । जो मेरे को करना है मैं खड़े होकर बोलने वाली हूं । मेरे को राजस्थान की जनता ने चुनकर यहां भेजा है, इन सबको चुन कर यहां भेजा है और हम अपनी बात राजस्थान की जनता के लिये करने में अग्रसर रहेंगे । आज चार साल हो गये हैं हमने एक से एक बेहतर बजट लाकर सबके सामने रखा है । मैं मानती हूं कि आज यह स्थिति इसलिए बन रही है कि इतना अच्छा बजट आया है कि यह उस पर कुछ कह नहीं सकते और क्योंकि यह पूरी तरह से निरुत्तर हैं इसलिए आज इनको यह सब करना पड़ रहा है । अगर वही किसान और इनके क्षेत्र के लोग इसको देख सकते तो मैं समझती हूं कि वह भी सोचते कि हमने

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

इनको कैसे चुनकर यहां भेजा है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन को बताना चाहूंगी कि किसानों की समस्या हमारे लिये सर्वोपरि है, हम उसको सर आंखों पर रखे हुए हैं और उन किसानों की मुसीबतों को हटाना यह बड़ी जिम्मेदारी हमारी है और हम उसको कर के रहेंगे चाहे यह कुछ भी कर लें । हमने जो भी बात करनी है वह 19-20 तारीख को जब पूरा जायजा कलेक्टर्स के द्वारा और मंत्रियों के द्वारा हमारे पास आ जायेगा तो उस हिसाब से हम करेंगे ।

कुछ ऐसी बातें हैं जो मैं इस हाउस के सामने रखना चाहूंगी नई घोषणाओं के रूप में । मैं समझती हूं कि पूरा सदन इसको जानना चाहेगा और बाहर की भी जो हमारी जनता सुन रही है वह जानना चाहेगी । सबसे पहले इस सदन के माध्यम से मैं कुछ कदम उठाना चाहूंगी । निजी सहभागिता से महाविद्यालय खोलने की नीति के अन्तर्गत जैतारण और महुवा इन दोनों में कालेज खोलने की मैं घोषणा करती हूं । मुझे विश्वास है कि इन दोनों क्षेत्रों में पी.पी.पी करने के लिये संस्थाएं आगे आयेंगी परन्तु अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह दोनों महाविद्यालय राज्य मद में सार्वजनिक क्षेत्र में स्थापित किये जायेंगे । इसी तरीके से आईजीएनपी में जो स्वीकृत चक है उनके निर्माण के लिये रहे हुए शेष मुरब्बे इस राज्य सरकार द्वारा सामग्री उपलब्ध करा कर एनआरईजीए और एसजीआरवाई के साथ-साथ राहत कार्य और कृषकों के स्वयं द्वारा श्रम उपलब्ध कराने पर खाले बनाने के कार्य हम लोगों ने हाथ में लेने की घोषणा की है । साथ ही मैंने आईजीएनपी क्षेत्र में खालों को आंधियों में मिट्टी से भरने से बचाने हेतु जो खाले का कवरिंग है उसके कार्य कराने की घोषणा भी की थी और अब मैं घोषणा करती हूं कि खालों के कवरिंग के कार्य भी नये खाले निर्माण की तरह राहत कार्यों से श्रम राशि उपलब्ध करा कर किये जायेंगे।

सदन के द्वारा मैं अवगत कराना चाहूंगी कि 58 कर्मचारी संगठनों के साथ हम लोगों ने बैठ कर चर्चा की थी । सरकार ने कर्मचारियों के हितों को साथ में रखकर और दिमाग में रखकर अनेक निर्णय लिये हैं । कुछ निर्णय उदाहरण के लिये मैं आपके सामने रखना चाहूंगी कि कर्मचारियों को नियमित रूप से बोनस का भुगतान किया जा रहा है । 50 प्रतिशत महंगाई भत्ता मूल वेतन में जोड़ा गया और अब इस पर भी 11 प्रतिशत महंगाई भत्ता दिया जा रहा है।

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

केन्द्र के अनुरूप लगातार महंगाई भत्ता दिया जा रहा है और इसका अधिकतर भुगतान नकद में किया जायेगा। प्रोफेशनल टैक्स हमने खत्म कर दिया है । 11 कस्बों में देय मकान किराया भत्ते की दरें बढ़ाकर केन्द्र के समान हमने कर दी हैं। मृतक कर्मचारियों के जो आश्रित हैं उनको नियुक्ति देने के मामले में संवेदनशीलता से आयु सीमा में हमने पूरी तरह छूट भी दी है।

ग्राम सेवकों की महती भूमिका है। 1998 से पहले लगाये गये एडहाक, टेम्परेरी, केजुअल सहायक सचिवों को हमने सेवा से न हटाकर उनमें ग्राम सेवकों का कार्य लेने हेतु नियोजित रखा है। इन्हें पूर्व सरकार के कार्यकाल के मात्र 1200 रुपये मिलते थे अब उनको कंसोलिडेशन रिमोनेरेशन हम देकर, उसको बढ़ाकर 3000 रुपये प्रतिमाह करने की मैं घोषणा करती हूं।

राज्य में 12000 पटवारी के पद थे। पटवारी सर्कल्स की स्थापना उस समय हुई थी जब कम्युनिकेशन आफ ट्रान्सपोर्ट नहीं था, इनफोरमेशन टैक्नोलोजी विकसित नहीं हुई थी और अब पुनः समीक्षा करने की हमने आवश्यकता समझी और इस कार्य को वर्ष 2007-08 में हम लोग करने वाले हैं।

साथ ही पटवारी के रिक्त पद, उसको भरने की मैं घोषणा करती हूं। साढ़े सात सौ पद 2007-08 में और साढ़े सात सौ पद 2008-09 में हम भरेंगे।

इसी तरीके से नगरपालिका बारां को विकास कार्य के लिए 50 लाख रुपये का विशेष अनुदान हम लोग दे रहे हैं।

इसी तरीके से शहरी जल योजना अजमेर बीसलपुर बांध के पानी से लाभान्वित है और अभी तक एक दिन का स्टोरेज मई, 2005 में 75.5 एमएलडी, हेतु रुपये 14 करोड की स्वीकृत हुई है, निर्माण कार्य कराया जा रहा है और निर्माण कार्य सितम्बर, 2007 तक पूरा कर दिया जाएगा।

अजमेर शहर और उसके साथ जुड़े हुए क्षेत्र को पेयजल प्राप्ति में कोई व्यवधान नहीं हो इसके लिए दो दिवस के अतिरिक्त पानी 200.97 मिलियन लीटर का स्टोरेज और हमने स्वीकृत कर दिया है। इसकी लागत 39 करोड़ रुपये है और इसको माखुपुरा पहाड़ी पर बनाया जाएगा। अजमेर क्षेत्र के अलग अलग स्वच्छ और उच्च जलाशयों में प्राकृतिक बहाव से पानी वहां जाएगा।

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

अब राज्य में वैट की व्यवस्था के बारे में, 1 अप्रैल, 2006 से हमने इसको लागू किया। कोई भी नई व्यवस्था जब भी होती है उसमें व्यावहारिक कठिनाइयां होती है और वैट के अंदर भी ऐसा ही हुआ, जैसा कि आपको सबको मालूम है हम लोगों ने इसको तर्कसंगत और रिजनेबल करने की पूरी कोशिश की और समय-समय में इसके अंदर विभिन्न बदलाव करके इसको रेशनेलाइज करने की कोशिश की परन्तु व्यवहारियों ने अवगत कराया है कि नई व्यवस्था को समझने और लागू करने में कुछ बोनाफाइड गलतियां हुई है और इसके लिए उनको पीनेलाइज नहीं करना चाहिये और मेरी सरकार ने हमेशा उनके ऊपर पूरा विश्वास रखा है और इसी विश्वास के आधार पर मैं घोषणा करती हूं कि वैट के प्रथम वर्ष 2006-07 में व्यवहारियों के जो भी बोनाफाइड मिस्टेक थे और जहां तक कानून में सम्भव हो सके वह वाणिज्यिक कर विभाग, विशेषकर पेनल्टी और इन्टरेस्ट के संबंध में लिनियंट व्यू लेगा और इस संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश शीघ्र जारी कर देगा।

वर्तमान में 200 रुपये से कम एमआरपी के रबड, प्लास्टर और रेक्जीन फुटवियर कर मुक्त है बशर्तें कि एमआरपी फुटवियर पर इन्डेलिब्ली मार्क्ड या इम्बोस्ड हो। फुटवियर डीलर्स की व्यवहारिक कठिनाइयों के निदान हेतु इन्डेलेबल मार्किग अथवा इम्बोसिंग की शर्त को हटाकर 200 रुपये एमआरपी से कम के सभी प्रकार के फुटवेयर, एक्सपेक्ट फुटवेयर मेड आउट आफ लेदर को कर मुक्त मैं करती हूं।

ब्यावर की तिलपट्टी, राजस्थान के पूरे देश में जाती है, प्रदेश में जाती है और विदेश में भी जाती है। अपने आप की एक पहचान बनाकर इसने रखी है। इस कुटीर उघोग को प्रोत्साहित करने के लिए मैं चीनी से बनी बारीक तिलपट्टी को कर मुक्त करने की घोषणा करती हूं। अब मैं समझती हूं कि माननीय सदस्य जो ब्यावर से आये हैं वह हम सबको उस तिलपट्टी का सेवन करवाएंगे।

प्रदेश के कई स्थानों पर रंगाई, छपाई का कार्य होता है। इस उद्योग के उपयोग के लिए जाने वाले टैक्सटाइल स्क्रिन डिजाइन को कर मुक्त किया जाता है, साथ ही रंगाई छपाई उघोग को वर्क्स कांट्रेक्ट टैक्स से भी मुक्त कर दिया जाता है।

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

गुलाबजल के धार्मिक उपयोग को देखते हुए और गुलकंद के कुटीर उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए मैं दोनों को कर मुक्त करती हूं।

राजस्थान में कड़ाके की गर्मी तो पड़ती ही है तो ठंड भी बहुत जोरदार आती है, दोनों सीजन में आमजन द्वारा उपयोग में लिये जाने वाले गमछे और ब्लेंकेट को भी कर मुक्त किया जाता है।

लाइम स्टोन की प्रचुर उपलब्धता के बावजूद जैसलमेर जिले की भीषण परिस्थितियों के कारण यहां ओद्योगीकरण नहीं हो पाया है इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि जिले के अंदर हम लोग उद्योग स्थापित कर दें और इसके लिए कुछ विशेष छूट भी दे, मैं इसीलिए घोषणा करती हूं कि यहां स्थापित होने वाले तीन एमटी या इससे अधिक वार्षिक क्षमता वाले पहले एंकर सीमेंट प्लांट को कम से कम एक हजार करोड़ रुपये निवेश करने पर राजस्थान इनवेस्टमेंट प्रमोशन पालिसी 2003 के तहत वेज एंड इन्टरेस्ट सब्सिडी सात वर्षो की बजाए 12 वर्षो के लिए दी जाएगी बशर्ते वह कम से कम 25 प्रतिशत रोजगार स्थानीय लोगों को उपलब्ध कराएंगी।

ये सब नई-नई बातें और मेरे भाषण के साथ अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के पटल पर रखना चाहूंगी और मैं समझती हूं कितना भी हल्ला कर लें हम लोग इससे दबने वाले नहीं है। न पहले दबे थे और न आज दबने वाले हैं। हमारा काम है और जनता ने, इक्के-दुक्के नहीं, जोरदारी से हम लोगों का साथ दिया है । मैं समझती हूं कि उस साथ के विश्वास के ऊपर और उनके प्यार और आर्शीवाद के ऊपर हम इस प्रदेश को आगे बढ़ाते रहेंगे। ऊंची से ऊंची ऊंचाइयों पर छूते रहेंगे। आप कितनी भी कहे मैं विश्वास रखती हूं कि राजस्थान को गरिमामय तरीके से आगे ले जाने में कोई कमी नहीं रहेगी। मैं सबको धन्यवाद देना चाहती हूं जिन्होंने बजट की चर्चा के अंदर सहयोग दिया और भाग लिया।

भारतीय जनता पार्टी की ओर से माननीय सदस्य श्री कालीचरण जी सराफ, राजकुमारी जी शर्मा, देवीशंकर जी भूतडा, जयराम जी जाटव, बत्तीलाल जी मीणा, हीरालाल जी रैगर जिन्होंने 12 तारीख को भाग लिया और आज 15 तारीख को डा. एन.एस. गुर्जर, श्री मदन जी राठौड, सांगसिंह जी भाटी, जालम

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

सिंह जी रावलोत, बद्रीलाल जी जाट, धर्मपाल जी चौधरी, शांतिलाल जी चपलोत। इंडिपेंडेंट हमारे एम एल ए साहेबान श्री रामप्रताप कासिनया, राजकुमार जी रिणवा, श्री टीकमचंद जी कांत और हां कांग्रेस के अनफोरच्युनेटली दो सदस्य इसमें हैं जिनको भी मैं धन्यवाद देना चाहती हूं, डा. सी.पी. जोशी और हेमाराम चौधरी कि आप सब लोगों ने इसमें भाग लिया, सारगर्भित चर्चा आप सब की ओर से इसमें हुई और आपने जो-जो भी अच्छे-अच्छे सुझाव दिये हैं उन बढ़िया से बढ़िया सुझावों को हम अपने बजट के अंदर आगे प्रदेश के लिए अपने इस काम में लाने की पूरी कोशिश करेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : सदन की बैठक शुक्रवार दिनांक 16 मार्च, 2007 के प्रात: 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 18.29 बजे शुक्रवार दिनांक 16 मार्च,2007 के प्रात: 11.00 बजे तक के स्थगित हुई)

परिशिष्ट-1

नियम 295 के अन्तर्गत प्राप्त विशेष उल्लेख के प्रस्ताव

गोरक्षण एवं संवर्धन हेतु सरकार के दायित्व विषयक

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द) : अध्यक्ष महोदय, उपरोक्त विषय में आपका ध्यान चाहूंगा कि भारत हम अनादिकाल (वैदिक काल) से गौमाता को पूज्य मानते आये हैं जो भारत कि अर्थव्यवस्था का आधार रहा मानव जीवन के लिये स्वास्थ्य हेतु पंचगव्य औषधियों व दूध, दही, घी देना। कृषि में अन्य सब्जियां उत्पादन हेतु उत्कृष्ट खाद एवं उर्जा के क्षेत्र में हल, चडस बैलगाड़ी, घाड़ी कोल आदि चलाने के लिये बैल ये सब गौमाता हमें देती आ रही है।

भारत में रसखान जैसे मुसलमान कवि ने भी भगवान से प्रार्थना कि अगले जन्म में मुझे पशु बनावें तो नंद की गायों में रखना जो पशु हो तो कहां बस मेरी वरोनित नंद की धनु मजारण।

आज भी भारत में व्यक्तिश: गौमाता के प्रति इतनी अपार श्रद्धा है चाहे वह किसी भी राजनैतिक पार्टी का कार्यकर्ता हो या मतदाता ऐसी स्थिति में मैं इस सदन से व सरकार से निवेदन करता हूं कि हम सभी लोग गौ संवर्धन व रक्षण के लिये कुछ व्यवस्था बनायें। जिससे पर्यावरण व प्रदूषण भी कम होगा साथ ही बाहर से हमें डीजल कम मंगाना पड़ेगा। इस हेतु :-

1. प्रत्येक गौशाला में वर्ष भर गौ माताओं की संख्या के, अनुपात में चारे-पानी की स्थायी व्यवस्था हेतु राशि उपलब्ध करायी जावे। इसकी एवज में जैविक खाद खरीदा जावे।
2. प्रत्येक गौशाला में जैविक खाद (नेडेप व वर्मी कम्पाडर) व कीट नियंत्रण आवश्यक बने।
3. जो भी जैविक खाद बनता है उसे कम से कम सरकारी बगीचों में उपयोग हेतु अनिवार्य किया जाय राष्ट्रीय बागवानी मिशन में जैविक खाद अनिवार्य किया जावे।
4. राजस्थान को प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर एक गौ सदन बनाये जावे, जिसमें कम से कम 100 गौ माता रह सके। क्योंकि आज हर गांव में 40-50

गायें निराश्रित गायें घूमा रही है। लोग उन्हें इधर-उधर भगाते हैं। मारते पीटते है। कुछ लोग कसाईयों को बेच देते हैं जो गौ तस्करी में लिप्त है। (उदाहरण रायपुर) भीलवाड़ा थाना में 3.3.2007 को दर्ज एफ.आई.आर.)।

5. प्रत्येक गौशाला में व गौ सदन में एक 20 से 80 घन मी क्षमता का गोब्द गैस संयंत्र आवश्यक लगाया जावे इससे 15 से 60 किलोवाट बिजली पैदा की जा सकेगी इससे हम ग्रामीण अंचल में काफी अधिक मात्रा में बिजली समस्या का समाधान कर सकेंगे।

6. 1000 की आबादी तक के गांवों में हम गोबर गैस संयंत्र बैल चालित जनरेटरों व बायोगैस गैसफायर जैसे यंत्रो से उस गांव की सम्पूर्ण बिजली की मांग पूर्ण कर सकते हैं यदि इच्छाशक्ति हो तो।

7. एक गाय प्रतिवर्ष 2 से 3 एकड़ की खाद देती है। अत: औसत ढाई एकड़/ गाये से 2003 की पशुगणना के आधार पर गौवंश की संख्या 10853492 से 26133750 एकड़ में जैविक कृषि पैदा कर सकते हैं जिससे जहर रहित अन्न सब्जियां उपलब्ध हो सकती हैं।

8. कृषि प्रयोजनार्थ या पशुपालन हेतु गौवंश निकासी के लिये प्रशासनिक अधिकारियों के साथ किसी रजिस्टर्ड सामाजिक संस्था के कार्यकर्ताओं की भी भागीदारी सुनिश्चित की जावे जिससे गौ तस्करी पर प्रतिबन्ध लग सके। (1200 बछड़ों की अजमेर के पास की ट्रेन घटना) जिससे ऐसी घटनायें दुबारा न हों।

9. कृषि कार्य में बैल चालित संयंत्रों का प्रयोग करने वाले किसानों को प्रोत्साहन दिया जावे, वर्ष में 6 माह हेतु प्रत्येक बैल जोड़ी रखने वाले किसान को नि:शुल्क चारा राशि प्रोत्साहन के रुप में दी जावे।

10. गौशाला/गौ सदन की गायें सरकारी भूमि चारागाह गोचर भूमि में निर्बोध चर सकें इस हेतु स्थानीय स्तर पर रजिस्टर्ड गौवंश रक्षण व संवर्धन समिति होनी चाहिये जो विरोध करने वालों को समझा सके।

इन्हीं भावनाओं के साथ सभी उपस्थित बंधुओं से मेरा आग्रह है कि इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान करें।

बिहारीपुरा माइनर का निर्माण कर पानी चालू करने बाबत

डा. सुरेश चौधरी (भादरा) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रक्रिया के नियम 295 के तहत सदन का ध्यान आकर्षित कर निवेदन करना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा क्षेत्र भादरा के आधा दर्जन गांवों के काश्तकारों की प्रमुख समस्या बिहारीपुरा माईनर बहाल कर पानी दिलाये जाने की मांग काफी समय से की जा रही है। इस सम्बन्ध में मैं निम्न निवेदन करना चाहूंगा।

1. भाखड़ा सिस्टम की मुन्सरी वितरिका के बुर्जी नम्बर 1500 पर बाई ओर मोघा (Head Regulator) पहले से बना हुआ हैं तथा खाले की भूमि भी अवाप्त की हुई हैं।
2. बिहारीपुरा चक में काश्तकारों को भूमि कमाण्ड अॅलाट है तथा जमीनें सीलिंग (भूमि नियमन कानून) के तहत सिंचित क्षेत्र मानकर काट दी गई हैं व किस्तें नहरी के बराबर वसूल की तथा आज भी नहरी क्षेत्र मानकर मालकाना लिया जा रहा हैं जबकि 6 वर्ष से पूरे राजस्थान में मालकाना माफ हैं।
3. मुख्य अभियंता सिंचाई, हनुमानगढ़ द्वितीय ने शासन सचिव, को पत्र दिनांक 26.11.1996 लिखते हुये चक बहाली की स्पष्ट स्वीकृति चाही गई थी।
4. इस सम्बन्ध में गरीब काश्तकार काफी समय से परेशान हैं परन्तु इन्हें आज तक न्याय नहीं मिल पाया है। अत: इनकी समस्या का समाधान करने की कृपा करावें क्योंकि इनके रकबे के चारों तरफ भांखड़ा का पानी लगता है तथा इन्हें पीने का पानी तीन कि.मी. दूर से लाना पड़ता हैं, जिससे इन्हें काफी कठिनाई होती है।
5. दिनांक 6.4.1990 को अधीक्षण अभियन्ता, हनुमानगढ़ द्वारा खनाणियां की टेल पर 3 चकों को पानी दिया गया जबकि इनके साथ पानी की कमी बताकर सौतेला व्यवहार किया जा रहा है। इन्होंने निवेदन किया है कि सिद्धमुख जैसी विशाल परियोजना के होते हुये भी पानी की कमी बतलाकर इन्हें केवल डेढ़ क्यूसेक पानी ही उपलब्ध कराये जाने को कहा जा रहा है जो कहां तक सही है ?

अत: मैं सदन से निवेदन करना चाहूंगा कि उपरोक्त समस्या का के माध्यम का निदान कर चक बिहारीपुरा के काश्तकारों को राहत प्रदान करने की कृपा करें।

निवाई उपखण्ड मुख्यालय पर राजकीय महाविद्यालय खोलने बाबत

श्री हीरालाल (निवाई) : अध्यक्ष महोदय, निवेदन है कि मेरे विधान सभा उपखंड मुख्यालय पर कोई राजकीय महाविद्यालय संचालित नहीं है। जबकि निवाई शहर की जनसंख्या 60 हजार के करीब है। जिनके छात्र-छात्राओं को अग्रिम अध्ययन जारी रखने में परेशानी होती है साथ ही छात्रायें शिक्षा आगे जारी नहीं रख पाती है। निवाई तहसील के आस-पास पांच उच्च माध्यमिक विद्यालय आते हैं जिसके छात्र/छात्राओं सीनियर हायर सैकण्डरी उत्तीर्ण होने के बाद उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं। साथ ही महिला शिक्षा पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं कि उपखण्ड मुख्यालय निवाई पर अविलम्ब राजकीय महाविद्यालय खोलने की अनुमति प्रदान करावें ताकि निवाई विधानसभा क्षेत्र की छात्र/छात्राओं को अग्रिम अध्ययन प्राप्त करने में सुविधा मिल सके।

भुसावर में हुए बलात्कार केस में प्रभावी कार्यवाही किये जाने बाबत

श्रीमती ममता शर्मा (बून्दी) : अध्यक्ष महोदय, निवेदन है कि अनुसूचित जाति की महिला श्रीमती संतोष पत्नी श्री रघुवीर जाटव के साथ दिनांक 16.1.2007 को खेत पर चारा लाने के दौरान मुकेश एवं स्वराज मीणा द्वारा जबरदस्ती सामूहिक रुप से बलात्कार कर उसे व परिवारजन को जान से मारने की धमकी दी है। पीड़िता के परिवारजन थाने भुसावर पर उनकी सुनवाई पुलिस द्वारा नहीं की गई और राजीनामा का दबाव डाला गया बाद में थाने पर भीड़ पहुंचने पर एफआईआर दर्ज की गई। मेडिकल द्वारा बलात्कार की पुष्टि होने के बाद भी नामजद अभियुक्तों को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर रही है, अपितु अभियुक्तों के द्वारा धमकी (जैसे घरों को जला देने, जान से मार देने, अपहरण कर लेने इत्यादि) एवं प्रताड़नाऐं दी जा रही हैं, और पुलिस मूक दर्शक बनी हुई है।

प्रस्ताव के माध्यम से अनुरोध है कि अभियुक्त की तुरन्त गिरफ्तारी सहित पीड़ित परिवार का संरक्षण करवाने श्रम करें।

डबोक एयरपोर्ट (उदयपुर) के लिए अवाप्त जमीन का उचित मुआवजा न दिये जाने बाबत

श्री शान्तिलाल चपलोत (मावली) : अध्यक्ष महोदय, उक्त विषय में निवेदन है कि डबोक एयरपोर्ट के विकास के लिये काश्तकारों, को भूमि अवाप्त की गई जिसमें मावली व वल्लभनगर के काश्तकार है। मावली की करीब 65 बीघा एवं इतनी ही भूमि वल्लभनगर के काश्तकारों को अवाप्त की गई काश्तकारों के मुआवजा ठीक-ठीक नहीं दिया गया। भूमि अवाप्ति अधिकारी वल्लभनगर द्वारा भूमि अवाप्ति के एवार्ड जारी करने में डी.एल.सी. रेट दी जानी थी। वल्लभनगर मन्देसर में कहीं-कहीं 60 हजार रुपये प्रति बीघा एवं उससे लगती हुई डबोक तहसील मावली की जमीन डी.एल.सी. रेट सिंचित दर 2,26270/- रुपये आबादी सड़क के पास आबादी से थोड़ा दूर 1,99,650/- रुपये प्रति बीघा है।

अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि डबोक मावली के काश्तकारों के 60,000/- साठ हजार रुपये प्रति बीघा दी गई है। जबकि अभी भाव 5-6 लाख रुपये प्रति बीघा ज्यादा है। इसमें किसानों के साथ भारी अन्याय हुआ है। लैण्ड एक्वीजिशन एक्ट 1894 की धारा-11 है उसमें कलक्टर के अधिकार हैं कि वह इस मुआवजा राशि को वापस तय करे। काश्तकार आन्दोलन पर उतारु हैं। अत: निवेदन है कि कोई विस्फोटक स्थिति न पैदा हो। इसलिये काश्तकारों के डी.एल.सी. रेट डबोक तहसील मावली को उस समय थी वह दिलवाई जावे।

मालपुरा कृषि विपणन बोर्ड द्वारा बनायी गयी सड़कों बाबत

श्री जीतराम चौधरी (मालपुरा) : अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा की प्रकिया एवं कार्य संचालन के नियम 295 के अन्तर्गत सदन का ध्यान मेरे विधान सभा क्षेत्र मालपुरा में कृषि विपणन बोर्ड द्वारा बनाई गई सड़कों की ओर आकर्षित करना चाहूंगा -

मेरे निर्वाचन क्षेत्र मालपुरा में कृषि विपणन द्वारा जो भी सड़कें वर्ष 1998 तक बनाई गई थी वे लगभग 9 वर्ष व्यतीत हो जाने के उपरान्त आज अत्यन्त क्षतिग्रस्त हो गयी हैं और उन सड़कों पर वाहनों का आवागमन भी कठिन हो गया है। जिसके कारण से किसानों को अपनी उपज मण्डियों तक पहुंचाने में अत्यन्त असुविधा का सामना करना पड़ रहा है।

मैं यहां यह भी उल्लेख करना चाहूंगा कि गत 9 वर्षों से इन सडकों की कृषि विपणन बोर्ड द्वारा मरम्मत नहीं की गयी है।

अत: मैं माननीय अध्यक्ष महोदय के माध्यम से मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि मेरे विधान सभा क्षेत्र मालपुरा की इन सड़कों की शीघ्र मरम्मत करवाने की कृपा करें।

तीर्थराज पुष्कर की सरकारी उपेक्षा बाबत।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर) : अध्यक्ष महोदय, विधान सभा प्रकिया नियम 295 के तहत निवेदन है कि देश विदेश के लाखों हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र तीर्थराज पुष्कर सरकारी उपेक्षा की वजह से अपना मूल स्वरूप खोता जा रहा है। एक ओर तो शहर का धार्मिक पर्यटन व हेरीटेज लुक जो प्रतिवर्ष लाखों धार्मिक पर्यटकों को आकर्षित करता है उसी स्थान पर कुछ सड़क सहित इन्फास्ट्रक्चर की दुर्गति से श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को बडी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। प्राय: सभी सत्रों में मैंने विभिन्न माध्यम से इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया पर सरकार पर जूं तक नहीं रेंगी। अब स्थिति को बदहाली से स्थानीय तीर्थ पुरोहितों सहित सभी पुष्कर वासियों का धैर्य चुक गया है और इसकी पिरिणित सभी पुष्करवासियों से बिना किसी राजनीति के पुष्कर सरोवर की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिये दिनांक 27 फरवरी को पुष्कर के बाजार में बद्रीघाट पर धरना दिया। पुष्कर की शांति प्रिय जनता इस बात से हतप्रभ है कि सरकार इस धरने के बाद भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही है। सरोवर का जलस्तर तो कम हो ही रहा है अब तो मछलियां भी मर रही हैं। सरकार द्वारा जारी राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, जयपुर के वर्ष 2005-2006 के वार्षिक प्रतिवेदन में पेज संख्या 73, बिन्दु संख्या 15.5.6 की रिपोर्ट में पुष्कर झील के जल को प्रदूषित बताया है।

अध्यक्ष महोदय आप कल्पना करें कि जिस पवित्र सरोवर का जल श्रृद्धालुओं के लिए आस्था व श्रृद्धा का मरकज हैं जिसमें वे पवित्र स्नान व पूजा अर्चना करते हैं तथा अध्ययन करते हैं उसकी सुध सरकार नहीं ले इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा? केन्द्र सरकार झील संरक्षण के लिए करोडों की राशि देने को तत्पर हैं बस कमी इस बात की है कि राज्य सरकार कोई कार्य योजना व एस्टीमेट व तकनीकी रिपोर्ट तो भेजे पर यह कार्य भी राज्य सरकार से नहीं हो रहा। अपनी जल चेतना यात्रा के समाधान पर तो राजस्थान की मुख्य मंत्री महोदया ने पूरा नाटक किया बूढ़ा पुष्कर की खुदाई में कार

सेवा का ढोंग भी रचा पर पुष्कर की सुध लेने का समय नहीं है। जिस बूढा पुष्कर खुदाई के नाम पर भी सरकारी समय, धन व शक्ति का उपयोग किया गया उसका परिणाम भी सामने है। मैं इसकी विगत में नहीं जाना चाहता हूं पर सरकार से यह मांग करता हूं कि विधान सभा के फ्लोर पर की गई मांग का तो कोई जवाब दिया करो, उस पर कार्यवाही किया करो। अब अन्त में मैं मुख्य मंत्रीजी को पुन: निमंत्रण देता हूं कि पुष्कर सरोवर के जल का आपमन अवश्य करें।

किशनगढ़ विधान सभा क्षेत्र में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना की बकाया राशि के भुगतान के संबंध में

श्री फतेह सिंह (किशनगढ़) : अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र की पंचायत समितियों कुशलगढ़ व सज्जनगढ़ में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजनान्तर्गत स्वीकृत व्यक्तिगत आवासों व काम के बदले अनाज योजना की राशि का भुगतान क्रमश: 20 प्रतिशत जिला परिषद, 30 प्रतिशत पंचायत समिति तथा 50 प्रतिशत ग्राम पंचायतों के माध्यम से किया जाना था। व्यक्तिगत आवासों के लिये 25-25 हजार रुपये स्वीकृत किये गये थे। इसमें से मात्र 15-15 हजार रुपये की राशि का नकद भुगतान तो किया जा चुका है और 10-10 हजार रुपये का भुगतान अनाज के रुप में किया जाना था।

अनाज के अभाव में 10-10 हजार के कूपन दिये गये थे, लेकिन डेढ़-दो वर्ष का समय व्यतीत होने के पश्चात् भी न तो ग्रामीणों को अनाज मिला और न ही नकद राशि का भुगतान किया गया जिससे ग्रामीणों में असन्तोष व भारी आक्रोश है।

अत: मैं प्रकिया के नियम 295 के अन्तर्गत विशेष उल्लेख प्रस्ताव के माध्यम से माननीय ग्रामीण विकास मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

फुलेरा के सीनियर सैकण्डरी विद्यालयों में नये विषय खोले जाने विषयक

श्री नवरतन राजोरिया (फुलेरा) : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान विधान सभा के प्रकिया नियम 295 के अन्तर्गत प्रस्ताव के माध्यम से मैं मेरे विधान सभा क्षेत्र फुलेरा के सीनियर सैकण्डरी विद्यालयों में नये विषय खालेने के संबंध में निवेदन करना चाहता हूं।

मेरे विधानसभा क्षेत्र में सांभर व फुलेरा में स्थित राजकीय सीनियर सैकण्डरी कन्या विद्यालयों में एक-एक हजार छात्राएं अध्ययनरत हैं। इन विद्यालयों में वर्तमान

में केवल कला संकाय ही संचालित है। आज जहां तकनीकी व वाणिज्य क्षेत्र में देश आगे बढ़ रहा है वहां हम वाणिज्य व विज्ञान विषयों के अध्ययन से इन छात्राओं को वंचित कर इन क्षेत्रों में आगे बढ़ने से रोक रहे हैं। मजबूरन मेरे क्षेत्र की इन छात्राओं को या तो कला संकाय से ही संतोष करना पड़ रहा है या फिर अन्यत्र अध्ययन को मजबूर होना पड़ रहा है। लेकिन सभी अभिभावकों के लिए अन्यत्र अध्ययन करा पाना संभव नहीं होता। अत: मेरा आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी से अनुरोध है कि आगामी शिक्षा सत्र से इन दोनों विद्यालयों में वाणिज्य व विज्ञान विषय का संकाय खोले जाने का आदेश प्रदान करें।

पिड़ावा विधान सभा क्षेत्र की आहू नदी पर रपट निर्माण विषयक नदी पर रपट निर्माण एवं ग्राम सिरपोई से नदी से 2 किलोमीटर सड़क निर्माण हेतु विशेष उल्लेख हेतु

श्री कन्हैया लाल पाटीदार (पिड़ावा) : अध्यक्ष महोदय, विधान सभा क्षेत्र डग (झालावाड़) एवं विधान सभा क्षेत्र पिड़ावा (झालावाड़) के मध्य आहू नदी बहती है इस नदी के किनारे पर डग क्षेत्र के चार गांव हरिपुरा, सागड़िया, नलखा व कालीतलाई बसे हुये हैं। उक्त चारों गांव के ग्रामवासियों की मुध्य आधारभूत चिकित्सा, बस सेवा बाजार आदि पिड़ावा विधान सभा क्षेत्र के गांव सिरपोई से प्राप्त होती है ग्राम सिरपोई में ही सी.हा. सैकण्डरी स्कूल विद्यमान है इसीलिये डग क्षेत्र के उक्त चारों गांव के छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए सिरपोई आते हैं चिकित्सा प्राप्त करने भी गांव वाले पी.एच.सी. सिरपोई आते हैं सुनेल पिड़ावा या अन्य रिश्तेदारी आदि के जाने के लिये भी बस सेवा उन्हें सिरपोई से उपलब्ध होती है तथा रोजमर्रा की आवश्यकता पूर्ति हेतु सामान भी सिरपोई के बाजार से ही खरीदते हैं इस प्रकार से अपनी विभिन्न प्रकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें सिरपोई गांव पर ही निर्भर करना पड़ता है लेकिन सिरपोई और इन गांवों के बीच की दूरी जो लगभग 25 कि.मी. है और कच्चा रास्ता है साथ ही बीच में आहू नदी बहती है ऐसी परिस्थिति में छात्रों को और ग्रामवासियों को सिरपोई ग्राम तक पहुंचने में काफी समस्या आती है। अत: माननीय अध्यक्ष महोदय मेरा आपके माध्यम से सार्वजनिक निर्माण विभाग मंत्री महोदय से अनुरोध है कि डग क्षेत्र के उक्त चारों गांवों हेतु सिरपोई से 2 किलोमीटर रोड और नदी पर रपट निर्माण कराये जाने की स्वीकृति प्रदान करें ताकि आवागमन सुलभ हो सके और ग्रामवासियों को अपनी आवश्यकता पूर्ति में कोई बाधा ना हो।

में केवल कला संकाय ही संचालित है। आज जहां तकनीकी व वाणिज्य क्षेत्र में देश आगे बढ़ रहा है वहां हम वाणिज्य व विज्ञान विषयों के अध्ययन से इन छात्राओं को वंचित कर इन क्षेत्रों में आगे बढ़ने से रोक रहे हैं। मजबूरन मेरे क्षेत्र की इन छात्राओं को या तो कला संकाय से ही संतोष करना पड़ रहा है या फिर अन्यत्र अध्ययन को मजबूर होना पड़ रहा है। लेकिन सभी अभिभावकों के लिए अन्यत्र अध्ययन करा पाना संभव नहीं होता। अत: मेरा आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी से अनुरोध है कि आगामी शिक्षा सत्र से इन दोनों विद्यालयों में वाणिज्य व विज्ञान विषय का संकाय खोले जाने का आदेश प्रदान करें।

पिड़ावा विधान सभा क्षेत्र की आहू नदी पर रपट निर्माण विषयक नदी पर रपट निर्माण एवं ग्राम सिरपोई से नदी से 2 किलोमीटर सड़क निर्माण हेतु विशेष उल्लेख हेतु

श्री कन्हैया लाल पाटीदार (पिड़ावा) : अध्यक्ष महोदय, विधान सभा क्षेत्र डग (झालावाड़) एवं विधान सभा क्षेत्र पिड़ावा (झालावाड़) के मध्य आहू नदी बहती है इस नदी के किनारे पर डग क्षेत्र के चार गांव हरिपुरा, सागड़िया, नलखा व कालीतलाई बसे हुये हैं। उक्त चारों गांव के ग्रामवासियों की मुध्य आधारभूत चिकित्सा, बस सेवा बाजार आदि पिड़ावा विधान सभा क्षेत्र के गांव सिरपोई से प्राप्त होती है ग्राम सिरपोई में ही सी.हा. सैकण्डरी स्कूल विद्यमान है इसीलिये डग क्षेत्र के उक्त चारों गांव के छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए सिरपोई आते हैं चिकित्सा प्राप्त करने भी गांव वाले पी.एच.सी. सिरपोई आते हैं सुनेल पिड़ावा या अन्य रिश्तेदारी आदि के जाने के लिये भी बस सेवा उन्हें सिरपोई से उपलब्ध होती है तथा रोजमर्रा की आवश्यकता पूर्ति हेतु सामान भी सिरपोई के बाजार से ही खरीदते हैं इस प्रकार से अपनी विभिन्न प्रकार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें सिरपोई गांव पर ही निर्भर करना पड़ता है लेकिन सिरपोई और इन गांवों के बीच की दूरी जो लगभग 25 कि.मी. है और कच्चा रास्ता है साथ ही बीच में आहू नदी बहती है ऐसी परिस्थिति में छात्रों को और ग्रामवासियों को सिरपोई ग्राम तक पहुंचने में काफी समस्या आती है। अत: माननीय अध्यक्ष महोदय मेरा आपके माध्यम से सार्वजनिक निर्माण विभाग मंत्री महोदय से अनुरोध है कि डग क्षेत्र के उक्त चारों गांवों हेतु सिरपोई से 2 किलोमीटर रोड और नदी पर रपट निर्माण कराये जाने की स्वीकृति प्रदान करें ताकि आवागमन सुलभ हो सके और ग्रामवासियों को अपनी आवश्यकता पूर्ति में कोई बाधा ना हो।